

DPN 5979

Title : सर्वतन्त्र निदान महाकल्परज SARVA TANTRA NIDĀNA MAHĀKALPARĀJ

Run. No. 6670

Cat. No.

Micro. No.

Subject तन्त्र Tantra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 26.5 X 8

Folios 120

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Extent (19-138) folios
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor रत्नाकर

Date: NS / SS / VS / KS 940

Ruler / place Ratna-Kara

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

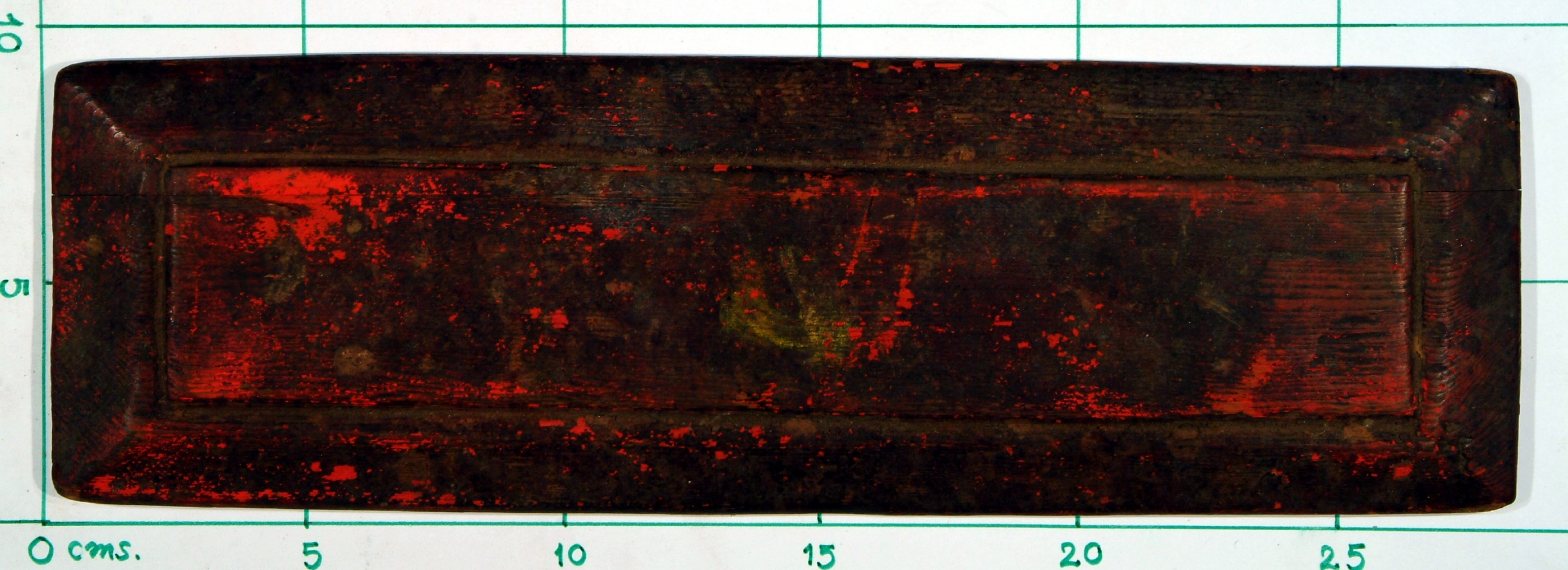
Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
इति श्री संप्रदेहव सर्वतन्त्र निदान महाकल्परज दशम समाप्तः ॥ ५
संवत् ९४० माघदिना शुक्ल १२ संपूर्णि रत्नाकोषे सत्य ५५८९ लेखे



विपूलनिगमस्वस्तानुर्गोसुगमसमयावावसुनिपुणगत्वसंमकुहं॥अना४कयाकथिनात्रिभुवना
नद्यायासाधकंद्वाहं॥आरि४सर्वसिद्धिरुवनीगिकूलक्रमेदेव॥अथवायांगांयथालक्ष्मीषाठम्
दिकानरथेववा॥नवयोवनसंपनांषाथमदासुलोचनां॥गविद्यांसमागच्छविज्ञानमहाक्रमेदेव
आधकथयुरुत्तरुस्यमकुगक्रमसर्व॥अर्धमार्गजिज्ञासुत्वंगथाधविक्रयसर्वविदग्धंका
र्यंनानाकवदक्रमेदेव॥कुलकटिसुगयाहाननूपनकंकलोयुक्ताडरुमसिद्धिपदावयंया॥अ
धिनाविद्यासर्वापदववरुहस्तानेति॥आधन४सुखमापय॥अथमुक्कदनवस्त्राद्यैरुषयित्वा

निवेदयन् गन्धमाल्यादिसत्कारं ॥ श्रीनृपकादिविस्तरे ॥ ४८ ॥ कृष्णसंप्रत्ययलिनमदयासहसाधक ॥ ४९ ॥
 ह्रमोसमालोच्य भुंयाजान्ममलुल ॥ ५० ॥ ध्यायेन्महाकाशं कृष्णं ध्यानं न सा ॥ ५१ ॥ नमस्तुभ्यं नमः ॥
 गर्हसर्वसंकल्पवर्जित ॥ सर्वहृत्स्वनसंसारहृत्स्वनमूर्त्तिनामो मुनिः ॥ ५२ ॥ जगत्स्वनविच्छेदं द्वन्द्वार्थदत्ता कः ॥
 धर्म्मनिनात्म्यसंरुतावजसत्वनमो मुनिः ॥ सर्वज्ञावाधिसत्त्वाध्यत्वरु ॥ ५३ ॥ पात्रमिना गदा ॥ ५४ ॥ सक्तवनिमहाना
 थवाधिविरुनमो मुनिः ॥ जलत्रयं महायानं त्वरु ॥ ५५ ॥ वज्रं गमं ॥ ५६ ॥ धातुकमिदं सर्वजगदीवनमस्तु
 न ॥ ५७ ॥ विनामविनिवाहं नृगदिष्टार्थसिद्धये ॥ ५८ ॥ सगगा ह्लाकनद्यीमान् वद्वपुर्नमानम ॥ ५९ ॥ ह्लातुमस्तु

नंतत्वं त्वत्परा वाहुर्धुवा ॥ वज्राविषकनसर्वं ह्यं प्रसादं कुरु सांपन्नं ॥ ६० ॥ नरस्य सर्ववृद्धानां दत्तिनं वज्रधर्मि
 ॥ ६१ ॥ यथाश्वा विरुवर्जं दानं धानाथप्रसीद मे ॥ ६२ ॥ वत्स्यादाम्बुजस्य स्कानान्या मविश्रमगनि ॥ ६३ ॥ गत्वा त्वद
 यानाथसंसागनि निर्जितं ॥ ६४ ॥ वज्राचार्यम् ॥ ६५ ॥ श्रीमात्मानुर्कयादिनामय ॥ ६६ ॥ शिष्यकृपासम
 त्याय आरुयगतमल्लापय कसमगुष्टा की ॥ ६७ ॥ विगानविगनाह्ला ॥ ६८ ॥ यागिनीगसंयकं घृष्ठाकलकक्ष
 खना ॥ ६९ ॥ पूषा कूलेनमस्तुनामाद महासख ॥ ७० ॥ श्रीवज्रसत्त्वादिदेवानां मलुलेपत्रमाहुः ॥ ७१ ॥ मज्जाया
 गंगन ॥ ७२ ॥ कृत्वाश्वाचार्य ॥ ७३ ॥ गुरुम ॥ ७४ ॥ निवेद्यपयसा ॥ ७५ ॥ वाधिविरुं जिनात्मज ॥ ७६ ॥ उद्धीनवासत्रे ॥ ७७ ॥

उभयथा मङ्गलगी निरिहामुडायकं न न ४ ज्ञिष्यमहि विं चिद्रुगल्यु ३ ४ दत्तालिषकसु दत्तमाचार्य ४ पत्रमं
 न ४ दद्याद्वे समयं नमो दिव्यं कृति संस्कृतं ॥ महात्रकं सकय्यं कुरु च न याति न ॥ कृत्स्नमाम्बुसमाय कृपं
 वमं चिरु सैरुर्व ॥ ०० दकसमयं सम्यक सैव द्दयं ददा दत्तं ॥ पालयस्व सदा रुड सैव व २५ सी प्रत ॥ न
 हि प्राप्तिवध ४ कार्य ४ कृति वत्तं न प विरुद्धं ॥ आचार्य कृतन सैरुपा ४ ४ सन्व न द्द नति कृम ४ ॥ पूर्वोक्तानां २०
 विद्यानामथ वात्स्यायिनी ॥ तथा नीतिमिनी विद्या सिद्ध कर्पूवरा विनी ॥ तावत्सवयत्सु डा यावक्
 कवनीरुवत् ॥ इडायास्तु मुखं व ४ उ पायस्य मुखं तथा ॥ सवया नुय कुरु तीक्ष्णवक्त्रं निपातयत्

कात्रितव्यश्चरुवसमत्र संसिष्यत्वावत् ॥ स्वसं व ४ र वत्तानं पत्र सं वि लिखितं ॥ स्वसमं विवजं
 भूयं रावा रावात्मकं पत्रं ॥ पुष्पा पायसैरु तं वाज विवाज मिषिनी ॥ सयं उव प्राप्तिनां प्राप्ति स उव पत्रमा
 कृत् ४ ॥ सर्वथा विधी स उवासी स उव श्रीरु वक् ४ ॥ रावा रावा त द्द रुणा म्ना निया नितानि च म्ना नंद
 पथ सैवी न पत्रमान च रु या निनी ॥ सूत्रेण नंद ४ सम सैवे न सुखा पायस सर्ववित ॥ पथमानंदमा
 उं उ पत्रमानंद द्वि सैखा न ४ ॥ रुतीयं वित्र सैखा र्ति व ४ र्थं स रुजं स्मृत् ॥ तच्चालिषकै व ४ विधि ॥ पथमं
 कलहालिषकै द्वि तीयं उ आलिषक ४ पुष्पा स्नानं रु तीयं उ व ४ र्थं न पूनरुथा वा धि विरुहिरुवक

न जिष्मि विगत किलिष ॥ अनुरागता दद्यात् वृद्धपुत्रवत् ॥ आवा विविरुपयं नं दिशं वृद्धस
 मरुतः ॥ पुत्ररुथ समकाग्रधर्मवत्कमनूय ॥ प्रक्षयाय स्वयं यात्मा विनाम विविवा चकेश ॥ अखि
 ना विगता सङ्गः सत्त्वार्थक वृत्तीयते ॥ प्राकारिषकमनूही कृतक लपुहर्षितः ॥ वदत्समधूमावा
 ही ॥ जगदानन्दकाविली ॥ ॥ अथमसरुलं जन्मसरुलं जीवितं विसममय वृद्धकलजाताव
 द्यपुण्यसिपीपुती ॥ कल्याणं विसमसाद्यात्कमवीवीसमाकलान् ॥ तावितादनाया नाथकुंठार्पकस
 दक्षनात् ॥ निवृत्त्यन्मिवात्मानं हानंत्वा दपुसादगः ॥ सर्वो धो नचमकांका पुहीना सर्ववासना

२९

नियत्यपादथा रक्ता पुष्टक्षरु जलावनः ॥ यद्यदिष्टत वंदयं तत्सर्वं विनिवदयत् ॥ निववग्रह वि
 रुनगुत्रुष्टापिकपालना ॥ विषयप्ररुनाये मे प्रमं नद्विहितायव ॥ ततः प्रथमसंस्कृत दद्यात् वृद्ध
 क्रिदां ॥ सुवर्णं गमसु संनलानि विविधानि ॥ वक्रयुग्मं गमसु वै गजाश्च नाक्षम वेव ॥ कश्चिन्नसक
 ठकं कलिकां गुलिकां तम् ॥ यस्यापवीतं सो वरुं स्वरायां दिनामपि ॥ दार्पदासी वरुगिनीं प्रसियत्यनि
 वदयत् ॥ आत्मानं सर्वशवनरु क्य गुत्रां विविदयत् ॥ अथ पुरुषिदाशं हं आत्मानं समर्थिता मया ॥
 उर्वविज्ञापयं ह्ययं प्राकारि मतास्य दः ॥ अधूना सर्ववृक्षानीह पुसादा समानिक ॥ यथा ननू रुवा

धिं प्रशवात्साधयाम्यहं॥ निष्ठा दयागुप्तं वा (क्षेपदं सर्वं गुपूजितं॥ नृदेवस्त्वापयिष्यामि सत्त्वान्ति
 रववर्हिनि॥ दया हरिषका धना विधिनामनिनेवच॥ ॥ निष्ठा धि मूर्किं मनसा वगम्य उदाय
 गम्ही ननया धि मूर्के॥ वाचेव दया दहिषकवर्त्तय आत्स्व सर्वदयत्तसिष्य॥ १ ॥ प्रफासमा
 रिषक॥ पुवत्र कृत्ति ॥ २ ॥ दुर्लभा दुल्यसम्यक् शो गक्रुत्त क्रीगुह्य कृत्त महावाधि विहा रिषक
 लघ्वान् इन्दि ला कौटुति त वि पूजया न क्त्त न द्व द्वि वाधा वा वाप्य विरुं वि पून मिह वत्र निर्मल सुख
 यागी॥ ० ॥ ॥ इति वाधिविहा रिषका द्वितीयस्य पथसंयुक्तवर्त्त॥ ॥ अथातं प्रवक्ष्यामि प्र

२२

ह्यायायार्थशवनां॥ यथा र्थवती र्थानां साधकानां हिताय वेयां विहाय न संसा न द्या न द्रुत्त न वा वि (क्षे निवा
 र्त्तन निष्ठ कि या गिन ॥ स्वार्थ मा उक्त॥ यस्या ॥ पु क ष प य र्थ क वृ द्धाना म म ला ऊ र्त्त ॥ हानि कृ द्वि वि निर्म का
 ज्ञाता वा धि न नू र्त्त न पंच र्त्त धा दि का न्ध र्म्मा ना ति कृ म प्रि या न र्त्त ॥ क दली व ल्य वि गृ ह्णा ति ध र्म धा र्त्त मा स
 मान् ॥ न नू न्य रा व न र्त्त क र्त्त ॥ ना पि वा नू न्य रा व न र्त्त ॥ न नू न्य र्त्त ल्य ड्ता गी न वा नू न्य प वि ल्य ड्ता ॥ अ
 नू न्य नू न्य या ग्रा ह्ण ड्ता य र्त्त न ल्य क ल्य ना ॥ प वि ल्या रा व र्त्त क ल्य रु स्मा द त र्त्त द र्त्त ल्य ड्ता ॥ उ र्त्त य र्त्त
 रु स्मा रा ग वि म्का गि ग ता स्य द ॥ अ रु मि ल्य ष र्त्त क ल्य रु स्मा द त र्त्त र्त्त ल्य ड्ता ॥ नि वि का यो नि ग र्त्त का

नि० कां का गत क ल्प ॥ अथ न क ल्प ना म्का यो म व रु व य द्ध ॥ मान वा पि स त्व वे म्खं क र्णं क र्ण
 आव ता ॥ ए त्वा ना मा स्ति ना स्ती ति न वे व य वि क ल्प यत् ॥ नि ष्य र्प व त्व नू य त्वं पु रू ति य वि की र्ण ॥ वि की
 म नि वि वा र्ण ष स त्वा र्थ के व र्णं कृ षा ॥ नि मा ल स प द्वा के नि ना ल म्भ म्भो कृ षा ॥ नु की र्ण ना धि पो सा द्ध ग ग २३
 न ग ग नं य था ॥ नु य य व क ४ क ष्चि ना पि क ष्चि दि रा व ना ॥ रा व नी यं न वे वा स्ति सा य न न त्व रा व ना ॥ न
 का वि क्ति या स्त य र्ण क र्णं ने व वि द्य न ॥ क र्ण र्ण वि नि र्म क ४ प न मा र्थ वि रा व ना ॥ न च प्र सा ध क ४ क
 ष्चि न च क ष्चि स म र्प क ४ न प वि रा र्थ न ४ कि ष्चि नू य क र्ण ने वा य वि द्य न ॥ ग ध र्ण न मा प र्म मा या वा म म्भो
 ने

वि सं र्ण वं ॥ रु वि ष्च ड्प नी तु ल्यं स प्र की द व द्ध ॥ रु ष्च न स्य ष्च न वे व य थ मा या दि स र्व न ॥ न मा प ल
 रु का वि स र्व स्य ड्ग न ४ ति नि ४ ॥ स म ड् वि ल्य र्प क र्ण प्र य वा ध न या वि वा ॥ य थ कृ सा न नू प द्वा दि नी य
 ड्प मी ले र्ण ॥ रु ग लि ष्च प्र नि ष्च य व द्वा नू सृ ति रा व ना ॥ कि म प्प ल्य ड्ग न र्ण नं आ दि म ध्वा न नि र्म लं
 स सं व द्धं दि न र्ण नं व र्ण ना य स्य ड्ग क र्ण ॥ प ष्च नां स र्व नू पा दि ष्च र्ण नां ड्ग म व व ॥ ड्ग ल्य नां रु स नां वा
 पि प्र पा ष्च नां वि वि ष्च प्र सा न ॥ क र्ण नां स र्व क र्मा दि ना य ड्ग न र्ण नां ॥ रु ड्ग मुं या गि नां या र्ण ड्ग ना य न न
 त्व दि ना ॥ नु ग द्ध य मि र्ण क र्ण वि रु मि द प र्ण ॥ व ड्ग ४ ग्री व ड्ग स त्व र्ण र्ण र्ण व द्वा वा धि न व व ॥ प्र ष्च ना न मि
 वे

नाम यी॥ समताय मवाक्य सर्ववृद्धाग्रहावनामृतेव सर्वमत्यन्तं जगत्सिद्धवत्वात्मकं॥ अनन्तावाधि
 सत्वाग्धसंवृद्धाः ४ अवकादयः ४॥ नदवंतावयथागीतावातावविद्याननः ४॥ तावातावविनिर्मकं तावः
 वयनसिद्धां लघुः ४॥ अष्टावशेषविद्वषं कृडाविमखाध्रुवां॥ अनन्तास्यजायर्गं श्रीमन् ४॥ सौगतागु
 ४॥ ४॥ अत्यसंकल्पनमाहिरुर्गंपुंरुं नानामरुमदिञ्चलं वा॥ नागदिद्वीपमलावलिर्कविरुहिसंसा
 नमवावडी॥ प्रतासन्नकल्पनयाविमर्कं प्रदीननागादिमलः ४ प्रलपं॥ अर्कनवग्राहकमग्रे सत्वाः
 रुद्वनिर्वाद्यवनं जगद॥ अग्न्यभावः ४ पत्रमस्तिकिफिरूनिमिरुर्गं वदू ४ खवा ४ ४॥ अनन्तः
 वर

२४

मोरवा दयहउरुर्गं ममरुवानास्ति नगः ४ पत्रं वा॥ अष्टावशेषविद्वषं कृडाविमखाध्रुवां॥ अनन्तास्यजायर्गं श्रीमन् ४॥ सौगतागु
 विरुहिसिद्धीकल्पविचार्ययत्नारुस्यसत्तावः ४ क्रियतामतावः ४॥ यावत् ० मः ४ पटनगुन्नाध्रुवमानाज
 मिनां गावदू ४ खमनर्गं विवर्दिनं स्यात्कनयावरुनः ४॥ नावत्सोख्यमदानमप्रतिमं नान्यर्थमायननः
 कार्यं नरुर्गं यस्वयं विप्लांडकृत्तिनत्सद्रिं॥ नवंगत्वयागीयागमनिश्चयंकत्वा अनूहानस्वः
 समयस्रोतावनांकनूगं॥ किंकनमूडामप्रतिमा अदंकावतावना समर्थः ४ सामान्यसिद्धिजनकः ४ स्याः
 दृष्टत्वनिष्टस्यलकं साक्राकल्यं स्रष्टवनायागनः ४॥ उत्पन्नं नृकृत्तिवनामाकावद्वग्निसर्वम

शा २

न संत्यक्तं प्राकृतं दध्मनया गतं निरुद्धं ॥ मृत्यापयति दिवानि निमिषं वेदनमाहु कंडक ॥ निविमिखले
निवेनिलय पद्मोनि मृधवा वाजा शानवा विजनं सर्वस्मनस्व गुरु वा विलु मरिच विरु सर्वरु ॥ ४ ॥
विरु मयां मरुतु यस्मयत्वनं कुरु स्था मरु रु ॥ सात्ता हा शा वनां कुर्यात् ॥ पु रु पा यन विना वृद्ध
त्वनं वल यत्नो कालु स्मा तु ह्रीं सत्य स्रम्य ॥ ५ ॥ धिप दां दिव्यो ॥ न प्राप्ता ये वे कामा दि रि स प तां वि २५
ना सिद्धि ॥ हान स्मा त्य लि न ल स्मा न् या का थ रु म् डा सा ध क न ॥ मा रु थ स म य रं मू डा ध ष ४ प्रा का म
हाम् डा ॥ ७ ॥ ष्मा च क र्म मू डा रु ध म् मू डा त्म का वा ग ॥ ७ ॥ मू डा वि वि धं या गी निष्ठा श र ड दिः

श्रीं संविं त्य कुरु सा का द रु य था व पि द व ना नू पं ॥ मा हा कुरु कुरु का धा इ का वा ग म ल वा ति क म्मा लि
तदर्थं प्रकृतं वं पंच लि च रि डि न्ना रु व ति ॥ पु रु थ दि व सा र्क म ध्म ॥ ६ ॥ बा उ स म थ व स ग ग म न न
व म्म न्थ सिद्धि ॥ ४ ॥ ४ ॥ स न नि न्दा रु नू ४ ख न ज न म ॥ ५ ॥ लि ता दि या था गी ॥ ख वि लु मा उं से रु ध्म या न
ग वि लु धि मा कुरु सा का श ४ प न नू त्या श र था गी य त्वे न था ग मि रु स ४ सा ध ४ ॥ सा का तु स्र म प्रा क्ता
ति र्थ ग स्था प्य स्र स्र ग र्ग ॥ न क वा लं व दि था था गी सा का नू य दि प न्ध व स त्य णि र्ग ॥ पु नि दि व स
पु ति मा से वा त स्य व र्धा त्म म य कृ ति रु वि नू ॥ स म य कृ तं लु जा य रं पु मा दा उ मा दा सिद्धि ह नि र्द

४ खित्त ॥ समय कृत्तु पुन व क न सं व नं का यं ॥ तस्मात्सं व न य क न सम क न तत्त्वं न क्ष न म् डा या ग ४
 का य ४ ॥ दु यो र्म कृत्तु व ॥ उ व व क्सा स म् क पृ ट या रान नि स म् पु वि न् ॥ रा व य ति य द म वि वि न् ॥ १ ॥ ॥ ॥
 व न म का य नृ प ॥ ० ॥ पु र्वा पा या र्थ रा व ना ना म दी नी य स्य द्वि ती यं उ क न र्त्त ॥ १ ॥ ॥ ॥
 नृ था त ४ र्पु व क्सा मि स र्व वि कृ वि र्त्त ॥ श्री व ज स त्वा द वा नी स र्व नी वि श्व मू र्त्त म् ॥ व ह स्य प न म न् म स २६
 व त्ति न् कृ सा ध य न ॥ वि वि कृ कु व न वा पि सा या ना दि ष्वा य न ४ स र्व नी वि श्व म् डा कु स र्व नी वि श्व म् व न
 ४ स र्व नी वि श्व का यो लि सा ध य व य था स र्व ॥ म उ ली त था ग ना ना नृ न् य ता ह्ना न म व व ॥ का ध ना सा ध न स

व सो म् य द व न् बा ॥ कि म हं क थ यि य्वा मि न् वि न् व द्वा ना ट कं ॥ रा व ना द व ना या ग डा य म कृ वि वि
 कृ म् ॥ प ट वा पु ति मा वा पि स र्व वि कृ वि र्त्त ॥ क थि तं वि म या त कृ स त्वा नी दि त का म् य या ॥ कृ ली य कृ वि
 धि या कं उ क स नृ न् य व जि ल ४ ॥ व ज ग र्त्त डे वा व ॥ क थ य स्य पु सा द न म स सा स न स पृ र्त्ता ॥ उ त्प लि व र्त्त नृ प
 व रु ड र्त्त न वि वि कृ म् ॥ डा य म कृ वि धा नं व य न सि ध्वा कि सा ध का ४ ॥ ॥ रा ग वा ना ह ॥ पु थ म र्त्ता
 व स त्मे जीं द्वि ती यं कृ त्ता क था ॥ तृ ती यं म दि तीं ध्वा या इ प का ॥ ॥ रा व न ४ ॥ पु न व पि नृ न् य ना वा धि
 द्वि ती य वी ज र्त्त ग र्त्त ॥ तृ ती य वि न् व नि ष्वा लि श्व रु र्त्त न्वा स म कृ र्त्त नृ न स र्त्त य पृ न ना वि रा य त सि न् व

ॐ हव विश्व वज्रं नैव वज्रं धरा वयं ॥ पाका न कं पं ३३ ल व न न ॥ पृथ मं रा व य ल त कं ध म् म धा
 ल म् कं वि द ॥ या गी त स्था प वि लि खो रु नू क कं वि रा व य न ॥ स्व द्वा दि रा व य ड रुं न रु वी सूर्य मं गु ल
 न उ व रुं क ति वे व उ रु या या ल क प न ॥ क क व रुं म हा धा न रुं का ना द ज रं व ॥ व ज व व ट क म ध
 रुं रुं त री रा व य ल न ॥ त स र्व प वि ल तं द रु ध षा ल म् कं वि रा व य न ॥ ॥ व ज ज न म स हा वी र नी ल २०
 पं क ज स नि रं व रु थ वा नी ला नू ल रं व रा व य रु ध या ख ल ॥ या मि रे टा न कं ह रु व ज ज न म स हा क
 पं ॥ पू ज य द रु द वी रि ४ स र्व ली काले धा वि रि ४ ॥ २ गे । वी म् ग लं क नी ध रु वी मारु गु रां ज नी । व ता वि

वा ने रु ला व रं प रुं ध रु ध म् वी पू क सी व ज रु ला व न व ली य स ध नी त थ ॥ व अ ली उ म नू वा द न द म् वा
 लि गी त क न्ध न ॥ उ ना रि ४ पू जा वि ल म् पे ४ स पू र्ण म हा पुरु ४ ॥ त न ४ प द वि नि र्म कं स र्व ध म् म ति क र
 व न ॥ व अ लि कालि मारु गु वी ज म ध ग र्ण वि द ॥ त म व स ल मि ल्या रु ४ प न मान द रु ला व क ॥ वि रु वं की
 रु द हा रा ग ग ध म गु ल रु द कं ॥ री हा य नि य द द य था गी ध षा ल म् का रु व दि ति ॥ ॥ न रा धा उ म
 ध ग र्ण वि क य रु सूर्य मं गु ल ॥ त ना रुं का न ज नी ला नू ल रं स र्व ली का व रु धि र्ण ॥ दि रु ज म क व रु रु ति
 न र्ण धि रु ला रुं जी ॥ का रु ह रुि न वा का र्ण दि न रु व र्ण क ति ॥ वा म व ज रु व र्ण क पा ल रु न रु व रु ॥ द

क्रि. ल. क. व. ज. अ. हं. का. वा. घ. ञ. आ. त्म. कं. ॥ ६४ ॥ न. की. ठ. न. ना. थ. म्. द. वी. हि. वा. इ. न. ॥ ६५ ॥ अ. वं. हि. रा. व. य. न.
 या. गी. स. र्व. या. ग. म. न. र्म. व. न. ॥ स. उ. व. र. ग. वा. न. या. र. ग. व. ज. स. त्म. न. थ. ग. न. ॥ ६६ ॥ का. ध. नृ. प. ध. वा. र. ल. ल. उ. वा.
 हं. वि. ना. जि. न. ॥ ६७ ॥ व. उ. वा. न. द. स. रा. व. अ. नृ. मा. वि. वि. उ. छि. न. ॥ ६८ ॥ पू. र्व. कि. म. उ. ल. ल. ल. सो. हं. का. न. वी. ज. र्म. व. ॥
 वा. म. क. पा. ल. न. क. न. द. वा. स. रा. ल. पू. वि. र्म. ॥ द. क्रि. ल. गि. शि. व. द. ड. र्म. य. स्या. पि. र्म. य. क. नी. ॥ म्. प. नृ. ज. र्म. य. ॥ ६९ ॥
 हं. स. मा. लि. गि. न. वि. ग्र. हं. ॥ व. ज. वा. वा. दी. न. र्थे. व. र. ग. व. द. पि. नी. य. या. न. ॥ ॥ ७० ॥ प्र. थ. मं. रा. व. य. क. र्म. य. क.
 लि. का. या. नृ. नि. क. र्म. ॥ व. उ. म. उ. ल. म. ध. र्म. हं. का. र्म. न. थ. रा. व. य. न. ॥ रा. वे. थ. द. व. ता. नृ. प. ति. म्. र्व. य. क. र्म.

न. थ. ॥ ७१ ॥ प्र. थ. मं. नि. ग. व. क. नृ. द. क्रि. धं. ल. सि. र्म. न. थ. ॥ वा. म. न. क.ान. न. र्थे. व. जि. न. र्म. दि. व. नृ. पि. धं. ॥ स. र्व. लं. का. न. स. य. र्म.
 र्म. क. पा. ला. स. न. र्म. लि. र्म. ॥ वि. ध. नृ. क. र्म. क. पा. लं. वा. म. पा. लि. ना. ॥ ध. नृ. व. लि. ध. र्म. व. व. ज. य. थ. न. र्थे. व. च. ॥
 द. क्रि. ल. क.ाला. व. ज. अ. द्वि. ती. य. जि. हं. र्म. न. थ. ॥ म्. प. नृ. ल. लि. जि. न. ॥ ७२ ॥ म. नृ. ज. र्म. क. र्म. म. उ. ल. र्म. ॥ ७३ ॥ र्म. नृ. द. व. म.
 य. र्म. धे. र्म. जि. हं. क.ाला. म. न. क. ॥ म्. ल. म. न. रा. व. य. र्म. र्म. ग. म. र्म. उ. सा. ध. क. ॥ ग. म. म. र्म. वि. रा. व. य. न. ॥ र्म. य. क. र्म. द. व.
 ता. स. र्म. ॥ द. ल. क. र्म. लि. र्म. द. व. ॥ क. पा. ला. स. न. र्म. लि. र्म. ॥ वि. ध. नृ. पा. म. ना. न. मा. न. क. व. क.ा. व. उ. र्म. ज. ॥ ७४ ॥ प्र. थ. मं. लि. र्म.
 नृ. वि. ध. नृ. व. लि. ध. र्म. र्म. ॥ क. पा. लं. उ. क. र्म. र्म. र्म. क. र्म. ग. क. पा. लि. ना. ॥ द्वि. ती. य. र्म. ल. र्म. र्म. व. न. क. र्म. क. पा. ल.

कां॥ वज्रपांशं तथैव लिखद्दक्षिणकाष्ठं करुणीयां वलिखद्दवी ॥ ५ ॥ रुच्यं खड्गपाशिकां॥ वाविपूर्वकपा
 लं वज्रपांशं तथैव च॥ वज्रपांशुलिखद्दवी दलयश्चिमकगतः॥ वामखट्वांगहस्तां च कपालं च तथैव हि
 । मूर्त्तौ द्विषणा काचधनं दक्षिणकाष्ठं पंचमीदृशं हस्तांशुकापालं गृह्य पाणिना ॥ उत्पलं च मूर्त्तौ वलि
 खत्वा ॥ ६ ॥ नमः॥ लिखद्वायव्यकाष्ठं रुच्यं खड्गपाशिकां॥ कपालं मूर्त्तौ पूर्वोदरं च तथैव नमः॥ सफ
 मीमं किं हस्तांशुं खड्गपांशुं च तथैव च॥ कपालं च पूर्वोदरं च तथैव च॥ मूर्त्तौ लिखद्दवी क
 लत्रिं संहृत्वा ॥ रुद्रकलहस्तां च वज्रपांशं तथैव च कपालं च पूर्वोदरं च तथैव च॥ दलयद्दवीः

२८

लिखित्वा कर्त्तुं कार्यां महासूत्रं॥ वाक्कां निरुवि विनालिम्बलिखद्दक्षमण्डलं॥ दलयपालीं समा लिखद्दवी वज्रां क
 नीतं॥ वज्रपांशं तथैव च॥ वज्रपांशुलिखद्दवी दलयश्चिमकगतः॥ वामखट्वांगहस्तां च कपालं च तथैव हि
 मूर्त्तौ द्विषणा काचधनं दक्षिणकाष्ठं पंचमीदृशं हस्तांशुकापालं गृह्य पाणिना ॥ उत्पलं च मूर्त्तौ वलि
 खत्वा ॥ ६ ॥ नमः॥ लिखद्वायव्यकाष्ठं रुच्यं खड्गपाशिकां॥ कपालं मूर्त्तौ पूर्वोदरं च तथैव नमः॥ सफ
 मीमं किं हस्तांशुं खड्गपांशुं च तथैव च॥ कपालं च पूर्वोदरं च तथैव च॥ मूर्त्तौ लिखद्दवी क
 लत्रिं संहृत्वा ॥ रुद्रकलहस्तां च वज्रपांशं तथैव च कपालं च पूर्वोदरं च तथैव च॥ दलयद्दवीः

पृथ्वी आत्मा नरुगमवच ॥ जायतु देव कुरु ध्यायदि कृत्स्नि द्विसाधक ॥ वज्र बोडी न भवे कां वज्र विंवां
 तर भवे वच वज्र नागी रुनी यीरु वज्र सोम्या वरु धिका पक्ष्मी वज्र यकी व वल्ली वज्र जाकिनी ॥ सफमी हं न
 वज्रा रुपु थिवी वज्रा लक्ष्मी ॥ ० ॥ द्वितीय स्वरुनी य प्रकवर्ण ॥ १ ॥ गृध्र वज्र यथा यायं च क
 साधं विष्णु न ॥ १ ॥ नियो सिक व क्षा दित्र क्रा रि वा नर्क न था ॥ न व का द्य दि व कु स्य वा क नि न्नी उ का
 प्र य न् ॥ क र्मानु न्प च क स्य व अ दि ध्या या दि व रु ह ॥ १ ॥ उं ना प्र गु ना प्र स्वा हा ॥ अ स्य वी र्जं तु सर्व षां प्र द वा
 दु न् अ नि सं या य य म् ध ना म तु न्नां वा र्कं तु का प्र य न् ॥ स म ना ह्म न ज्ञ ये न आ त म न्पं तु का प्र य न् ॥

३०

स म ना सर्व वि रु द्धा न न्ना व क नि या ज य न् ॥ अ रु व न तु स त्वा नां या ग रा व तु रा व य न् ॥ रा व य तु क्कां ह्मा
 नी नां रु यं सर्व प्र द न्ना व तु म ह्म ल म ध र्म प द्मा स न वि वि न य न् ॥ न द्धु ध्या या दा त म दे रु तु सर्व सि धि प्र द
 य कं ॥ उं ना प्र स्वा हा ॥ १ ॥ उं तु ना प्र स्वा हा ॥ व रु ॥ उं तु न्नां ना सा ॥ उं तु स्वा हा क र्मु या ॥ उं व स्वा हा जि
 क्का यां ॥ उं ना नि ति स्वा हा ह्म दि ॥ ष ठ रु धा प्र य त्रि त्वां वि न य दा र्थ ना वि कां ॥ द्वि उं स त्व प र्थ क्कां स र्व त्रि त्र द
 रु धि नां ॥ अ रु य रु द्धां सर्व षां वा म उ त्प ल धा नि ती ॥ सा ध य त्त्व र्द वं तु म न्ना ज न ना दि नां ॥ उं कृ त् कृ त् कृ त् ॥
 स्वा हा ॥ सार्व क र्मि क म न् ॥ वं ध नं ना ज्ञा कृ र्णां या ना दि वि ष ना मि नां ॥ कृ ल वा ना दि य क्का नां अ त्म म्

रायानेनेहयस्मानसर्वपू० मंमं पुयाजयन् ॥ वक्रां लिखित्वा धनुसमुपधावी स्यात्तसंज्ञाय ॥ ०० गिनः
 का सर्वपांयागनत्वानिबलना ॥ सूर्यमधुलसंविद्यकलिन किनधसंनिहं ॥ नस्यमधुदुकी ४ का नं वक्रव
 धुसमपुहं ॥ नगा रावयदात्मानं न कवकुंचु उज्जं ॥ ०० षकामकदसं व उत्पलां कृडा धा विहं ॥ अस्य रावः
 नमाधदा ० ला कंव डामानयन् ॥ नक्षत्रनेकं नना ज्ञानं प्रजा लोक नियमननु ॥ पश्यपश्चादिन काद्या सकलक
 नवा सुवान् ॥ लक्रद्वयं नदवानां लक्रकनचमत्रिद ॥ ॥ अष्टदलमिदं वक्रं सिगवर्धुं सुखारुणं समग
 नूपसंविद्यकंधाशुकं स्वरावग ॥ पूर्वलक्रदसंयुक्तं पूर्वाकने वसाधयन् ॥ रावयदस्याश्च कुंडपरा कल

३१

कर्मति ॥ उं पुं मरुपुं हूं स्वाहा ॥ रावयदावरावन नमिहाला मनकधा ॥ वदमधुलमधुसं पुं हूं त्मनि
 विनिर्मितं ॥ द्विउ जां सत्वपर्यं का सर्वा रव द ह विगां ॥ सिगवर्धुं पुतादिवां प्रहृत्तमनि विनिर्मितं ॥ द्विउ
 जां सत्वपर्यं कां सर्वा रव द ह विगां ॥ सिगवर्धुं पुतादिवां प्रहृत्तमनि रावयन् ॥ अपितमस्य वीजस्य प्रहृत्त
 कादि वर्धनं उल्लवर्धनं धकनां प्रहृत्तवर्धनं मरुतमं ॥ ॥ विउमधुलमधुसं अक्रवं गव विचयं मरु ॥
 नय कपालासनसुम कवकुंचु उज्जं ॥ चक्रधधधनं सोम्यं कपालं पाशमवच ॥ विसृज्यं समनन काला
 माला कुलं तथा ॥ नननकमया गदा रावयदत्त संरवां ॥ पिगवर्धुं मरुतमं नं नफका च न संनिहं ॥ कपाः

15

10

0

लासनमध्वसं न कवकुं वडुडुं ॥ नलोकुं धनं वीनं कपालपात्रकं नथा ॥ नननकुमया गनतावयत्यमः
 वडिहो ॥ न कवकुं वडुडुं पप्रवागसमपहं ॥ धनूर्वाध धनं वीनं कपालासनसीसिगं ॥ पप्रवाडाधनं
 वसवतिनधरूपिगं ॥ नननकुमया गननभाधीरवप्रपादिना ॥ कपालासनमध्वसं न कवकुं वडुडुं
 कपालं वडुडुं कवकुं रुसुसं यनं ॥ रुविदेइयसीनिरुं सर्वालं कालरूपिगं ॥ ॥ खधातुमध्व ३२
 गनं वेचिगयचउमधुलं ॥ ननुमध्वगनं वीनं कात्रं लावनाकनिं ॥ कपालासनमध्वसं उडेन हरिः
 रूपिगं ॥ चकं वाधं वडुं वखनं उदक्रिहवत्र ॥ धनूर्वाध धनं वीनं कपालं वामकधनेन ॥ विनगां न क

वक्रांतु रात्रनूपनमधुगं ॥ सिनवर्धुं सुजाता नुकपालमूकदां नथा ॥ ॥ खधातुमध्वगनं केवसंपर्धुं
 वडुमधुलं ॥ ननुमध्वगनं विनं रुहं कात्रं मामका रुनिं ॥ कपालासनमध्वसं नीलवर्धुं मडाठलां ॥ वि
 नगां मकवकुं चकपालपात्राहूपिगं ॥ धनूर्वाध धनायेव न कवकुं वडुडुं वडुडुं नथा घधक
 पालनुगयेवव ॥ चक्रनल्पप्रवदाह केवदादडा आलिखनु घुलं ॥ सर्वालं कात्ररूपिगं ॥ ॥ रा
 वथरुगमध्वसं पधुं वडुमधुलं ॥ विनयरुद्रकी ४ कात्रं पाधुलारवि विरावयन ॥ कपालासनमध्व
 सनं वधुं मडाठलं सर्वालं कात्रसंपर्धुं उडेन हरिरूपिगं ॥ धनूर्वाध धनं वीनं वपप्ररुसुं वडुडुं कं ॥ क

वज्रहस्तापथिवी वज्रधरेव जिह्वलसममयतां॥ वज्रालीसीतपीता लामयवा वि कवाचिना। खम्र (शेवः
 कपालं वेलावयवा वज्रपिपी॥ पूकसीपीतवर्णं कल्यकलनाचिनां॥ कपालं मांसपूर्युतु वलं वन
 दमवव॥ वज्रालीनीलवर्णं वायुपटधरेनी म्रपराणी कपालं वपुःपीकं तथेवव॥ यमवीरु विनयी
 तारावजाप्रिकुं पुनवज्रहस्तां॥ कपालं मदसीपूर्युदकि (सहयदायिका॥ भववीसितवर्णं हाखद्विग ३७
 कपालं रुजा॥ वज्रपाशं तथेव वेलावयविश्वपिपी॥ वाहित (शेवना रूवकूमिडवगीतथा॥ सिंहवाः
 धृतथावेव, डी वृका रिक्कयवव॥ उर्वरगेश्या दया दया १५ कपालं विरुविना॥ सर्वालं कालं संपूर्णः

[illegible]

चण्डशास्त्रावगुह्यसर्वधर्माः स्वरावगुह्याः स्वरावगुह्याः सर्वधर्माः स्वरावगुह्याः ॥ यागगुह्याः सर्वधर्माः यागः
 गुह्याः ॥ उर्वरुत्वापूनर्थी ध्यानं गत्यामुकात्रयेत् ॥ मनीनकलदहं गता ध्यानमात्रेण ॥ प्रतिष्ठाकात्रया
 रान आत्मदहं दुर्विकथं त्वा ॥ उर्वविधविधाननरावेयत्ताने सागरी ॥ तनुमन्त्रं विष्णुमेकत्र विविधिं
 किंकिनिजालमालकुतफका अन्नसंनिर्ग ॥ सिंहासनानि तनुवरावयत्पंचलनक ॥ तनुसूर्यमण्डलस्त्रीः
 स्वरावगुह्याः ॥ आत्मध्याननिष्ठस्य स्यादकिनी मध्यतः ॥ त्रिमूर्तीषु शिवो वसत्ययं किंकिनी
 विकीर्णकम ॥ आदिना पञ्चवृद्धा हिमलिता ॥ नीलवर्णमहाधारा सूर्या एव च रुषिता ॥ हसितकाटशृंग

३५

नां त्रिनजं दिव्यं विनी ॥ अहसासीकनाली कुत्रकवकुसु ॥ आदितां ॥ खडा ऊर्ध्वतश्च द्वितीयपत्रं ॥
 था ॥ द्वितीयकृत्तिर्हीववामध्य ॥ निनादिनी ॥ तथा द्वितीयपाण्डकावेव द्वितीयसिखरुथा ॥ नमो वा
 लासमाकीर्णरावयत्तमध्वरुध्व ॥ ह्यानदाकिनी पूर्वस्य आत्मध्याननिष्ठता ॥ सितवर्णस्य आराकुविह
 कीर्णकमलिता ॥ सूर्या एव च रुषिता ॥ नमः सूर्याय ॥ सूर्या एव च रुषिता ॥ सूर्या एव च रुषिता ॥
 ती ॥ खडा ऊर्ध्वतश्च द्वितीयपाण्डकावेव द्वितीयसिखरुथा ॥ नमो वा लासमाकीर्णरावयत्तमध्वरुध्व ॥ ह्यानदाकिनी पूर्वस्य आत्मध्याननिष्ठता ॥ सितवर्णस्य आराकुविह
 र्यकां कफका अन्नसंनिर्ग ॥ खडा ऊर्ध्वतश्च द्वितीयपाण्डकावेव द्वितीयसिखरुथा ॥ नमो वा लासमाकीर्णरावयत्तमध्वरुध्व ॥ ह्यानदाकिनी पूर्वस्य आत्मध्याननिष्ठता ॥ सितवर्णस्य आराकुविह

15
 10
 5

१५
 १०
 ०
 रुषिगां॥ शृङ्गत्रयसंयुक्तं रावयं ल्यात्रदा किनीं॥ हनस्य पश्चिम रागवनाली नि नि ४ सुगा॥ दिशु
 जासत्यपर्यंकानीलवर्धुसु॥ जारना॥ खदा कृया गपायुं वि कीर्तु कं जामहिना॥ सूर्यारत्रधमग्राया
 जारनवसु रुषिगा॥ हनस्य द क्रि॥ दारा गत्रधाली नीलवर्धुका॥ खदा कृया गपायुं वि कीर्तु
 कं जामहिना॥ दिशु जात्रकवकावना नारत्रधरुषिगा॥ रावयदि मां यागी संपर्धु नृप कान्तिकां॥ ३
 ३१
 जारनां सिंहिनी दवी मुखसिंहं विनयतु॥ सीतपीतवधु राताला लालीरु सूरिगां॥ वजां कं जामर्ज
 नीपाडासु॥ जारवसु रुषिगां॥ रावय हलिगादरात्र जिजालेन न क धम अयां या घिनी नामा सफवला

रुमा सनां॥ दिशु जां नीलसिगा रां व म्मालं कात्ररुषिगां॥ कल द जा हू जात्रेव नर्जनी पाजिका गथा॥ रावयदी फद
 हात्रुन जिजालेन न कं जामर्जनी मर्जनीं दवीं अदरा सख्यानकां॥ मरिषा सनसंयुक्ता रादिग कसु वर्धु
 का॥ सु॥ जारवसु गात्रिका दिशु जात्र विनाजिगा॥ अं कृपा पात्र नर्जनी सूर्यारत्रधरुषिगां॥ वि कीर्तु कं जामर्जनी
 रुज्जिमिहाला समपरा॥ वायूया मर्जनीं दवीं पीतव क मवर्धुकां॥ नागा सनसमा सीना सूर्यारत्रधरुषिगां
 दिशु जां सत्यपर्यंकां सां कृपा पात्र नर्जनीं॥ कलिनां सर्वत्र पदत्र जिमहाला म न क धा॥ अदरा किन्या मयसा वा
 वाक्त्रुव न मरुथा॥ नवन्त्या सुकमंद दृष्ट पञ्चालान प्रक ल्ययतु॥ पूर्वदा किनी नाजन्दी दिशु जासिगवर्धु

का॥ प्रणमनसमासीनासर्पाहवदरुषिणा॥ विकीर्णकडाबोडीकुम्भगिरिहालासमप्रता॥ मरुप्रकिथरुसुकुम्भदहासक
 नागथा॥ उरुवदीपिनीनाऊडपीगवर्धुमुनोदिकाकनानीयाविनूयीउसडाखवम्भरुषिणा॥ प्रणमनसमासीनाहलिगा
 गिरिसमप्रता॥ मरुलिरुसुयकाउसिबसुईपदीपवरापच्चिमवूषिनीदवीनकवर्धुतयानकाप्रतासनसमासीनास
 डारुवमुहिरुषिणा॥ विकीर्णकडाबोडीकुम्भगिरिहालासमप्रता॥ नकसुदरुसायांमरुल्योमरुधिवंपिवरा॥ काम्या ३२
 जीनामदाक्रिध्वरुसुवर्धुसमप्रता॥ प्रणमनसमासीनाविकीर्णकडामलिगा॥ नकवमुसडाखवमुसर्पाहवद
 रुषिणागर्जनीमसुलरुसाविमार्दमिसर्वधेगसां॥ वक्रिहालाप्रताबोडीरावयसर्वविसदा॥ मरुविमिमादिम

अथसमयदर्शयकथा॥ अनिलानलसह्यध्वशीवीजनवादयन्॥ विन्दनादसमाकानं धनवर्धुं निस्मृतं॥
 ॥ एनीयसुद्विगीयप्रकवर्धं॥ ॥ अथनेत्रात्मासाधनवर्धं॥ सकिफनयथादिनं॥ खधाकुमधः
 गमं च विनयसूर्यमधुले॥ चक्रपर्वयथायायंदवनानायथादयं॥ चक्रं क्रीडीजलंपर्वयथायं रुनाज्ञानं॥ म
 हावायरावकस्ययथादयं॥ धमादयाह्वं चक्रं द्विपटं ननिबामयं किंजल्कडुवदकं प्रिकायवववजिह्वं॥
 विनयसुगं गगुपचक्रं दडाह्वानाचिगं॥ नस्थापचिरावयवचक्रं चक्रापत्रिविजकं॥ पश्चात्माग्नधुमा
 कुमंदयार्मलामहासुखं॥ हिलालिगुद्वपुषकालिपुषकासुखं॥ चक्रसूर्यद्वयार्मलागेयादयः

पुकीरिगाशाआदडासनवांयदुसमगावांमुतासुवशावीरुशिर्दसुदवस्यप्रयवकृदामयग॥सर्व
 कमनूखानंविम्वनिषाकिडुद्विगशाआकात्रंरावयत्यंविम्वनेकचिगेवधेशाआलिकालिसमाया
 गावजसत्वस्यविम्वनशाआकृनाहवपिधुस्यहृरुटकात्रहलिष्यन॥सत्वविम्वसमूहंमधुलेगांविम्व
 वयन॥पूर्ववकुविज्ञायेअद्रकानिमतिप्रहं॥अवंसर्वेवनिषानांप्रक्षपायस्वरावेनशाप्रहलिका
 ल्यपावनिवडाकस्यपुहदिना॥गेयाशाहवयस्मादहृदपवंधक॥नस्मात्सर्वप्रयत्नमाउस
 यप्रकल्पयन्॥अध्वत्सपठस्तिगाअनादवत्यपययातिअ॥पैरुलेधस्वरावनरावयशागवि

२२

सदा॥०२५वडासमगावेनीवावृत्तांवात्रियागिनीकोवयवजदाकीचमध्वनेवात्तायागिनीवाक्यपुठ
 गोत्रीवोत्रीवतालीयसमीपकमीगथा॥आवत्रीवउलीवेवदानीवाक्षोपुपूवधी॥अधउध्वेतिवीवेव
 हवत्रीववत्रीतथाहवनिर्वीलस्वपलास्तिगयाअवलिनी॥सर्वविम्ववृक्षोडापयमूडाविरु
 विता॥उकवकुअहृडाठिनजादिव्यत्रपिअ॥वकीकउलकठिकात्रवकमखलस्यगा॥प
 अद्वद्वविउडाउपयता॥उद्वमूडका॥सर्वत्रितादगा॥खोगायअनेवात्तायागिनी॥यागयाणीवा
 भनउध्वद्वद्वगएवेव॥दकिरानीलवजअकहंवाजिनथेवव॥गवावृडाकलदिफात्रकाका

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

15

10

प्रिमसाद्वजा ॥ नीलवर्णमहादिव्या व्याघ्रवर्मावता कटिः ॥ पुलया नलसं निहास्ति तासादिव्यत्र पिनी ॥
 दक्षीणसिगनीलावडलवकनीलिका ॥ द्विजुजा ७ कवजावरी वीतकाल रुचिता ॥ कपालेककलव्य
 ग्रादगिरिश कर्लिअविका ॥ दसितकोट अंगभानपूजास्वय्यागिता ॥ सुनद्धसुसमैर्मध्येनात्रभिप्रम
 ततः ४ उतत्वस्वय्यात्मानं लावयत्सम्वद्धः ॥ ॥ ॥ रुतीयस्वरुतीयपुकरदी ॥ ५ ॥ अथातः
 संप्रवक्रामिमहामुलमूलमं ॥ वज्रधनुसमाकारवज्रधनुविति सुतीर्ण ॥ अथ मउलस्वर्णमहा मडा
 पविग्रही ॥ साधय रुदिदमती सर्वमवाकला कनवानकन ह निश्चकन स प्रमाननवावृत्त ॥ रुतलसु

४०

७

उयत्ता रुयथा ६ क्वातुमउलं ॥ वज्रवर्णवज्रधनुं तावले ४ सुप्रकासिनी ॥ वज्रसूत्रसमायुक्तेषु दृष्ट
 ग्दामरुचिती ॥ कासता १ गधसुवर्षे दाननियरु सन्धिष ॥ ख विगंवज्रवत्तु सुहोना धिहानमतिती ॥ त
 उवज्रपुनिका मंप्रविश्यात्तु नैपूनः ॥ वज्रसूत्रयनिक्रिफैरुसुसुता पर ॥ अतिनी वज्रसुम्हागुकि
 तसूयश्चमउलमउति ॥ तनामउम ॥ उवद्धविम्वंप्रविन्यसता ॥ उकं मउलविधानीसाधनं कथायामित ॥ त
 जादिन उवदवग ह प्रविश्यामंतीरुकाव वज्रमउलं विविक्तत द्यप्रिमिगी प ॥ सुविकीवजीध्यावि
 धिना सर्वतथागतादीन् संपूक प्रसिपत्येवमारु ॥ समचा रुनीतु मां सर्ववद्ध वाधिसत्वा अहमसूकनामा ॥ ॥

द्वि२

वला मूपादाय यावदावाधिमन्दनिषंदनादत्यादयामिषनमंवाधिविरुमनूरुनं॥यथाजियधिका नाथ ४९
 वा॥भोक्तानिअया॥जिध्वंभीलमिकोचकूहालीधममिग्रहं॥सत्त्वार्थक्रियाहीलवप्रतिगृह्णामहृदयं॥वृद्ध
 मंत्रिसेयवजिबलाग्रमनूरुनं॥नृशाग्रहगृहीष्यामिहवर्नवृद्धयागडं॥वज्रयध्वंमूपांवप्रेतिगृह्णामि
 तत्त्वगं॥नृशाग्रहवर्गहीष्यामिमहावज्रकलावय॥चतुर्दनीयदास्यामिषट्कलादिन॥महावत्कलयाग
 समथवमनावम॥सहस्रपुतिगृह्णामिवाक्कं॥महापद्मकलशुद्धमहावाधिसमूरुव
 ॥सर्वसर्वसंयुक्तपुतिगृह्णामिसर्वगं॥पूजाकर्मयथा॥महाकर्मकलावय॥इत्याद्यौदेसीयनमंवा

विविरुमन्लुमं॥ एहीखायं वं कं लुमं सर्वसत्त्वार्थकाय ॥ अनी ॥ स्तान् यिद्यामि अमृताभावयाम्यहं ॥ अ
 स्वस्त्वना ॥ अयामि सत्त्वा ॥ अयं च निवृत्तिः ॥ अथ रगावान् सर्वे विजयन् वीर्यं रवं नाम समाधिं समापद्यन् मूढा
 नमूढान् यामास ॥ ततो ॥ अनास्य स्त्रिया सर्वधर्म्मज्ञेनात्म्यं समन् प्रकृतं ॥ सर्वभूतदा कृमा ॥ अस्मि कं विरुवि
 द्यपिती ॥ न विरुयति विक्रमं न द्विद्यत ॥ इति मनसा उच्चार्य अन्त्य ॥ ४ सर्वधर्म्मा ॥ प्रकृतिपुण्यस्वरा ॥ सर्व
 धर्मा ॥ अयं नूत्यन्त्वात् ॥ तत ॥ रुदवस्त्वविरुमनन प्रकृतिपुण्यस्वरा ॥ वृविजयनमर्तुलवचुमउलाका
 यरा ॥ अयं ॥ उ विरुयति वधं कथामीति ॥ अयनमउलमहा ॥ उहमाका ॥ अमिव निर्मलं ॥ सर्वदोषविनिर्मुक्तं

[illegible]

प्रतिविम्बयागला॥ ॐ ॥ कखगघङचछजझञ्जटठडढतथदधनपफववमययलवगघस
हकश॥ उरत्सर्वभलुलविभानमन्यनरुषुकी॥ नरुमरध्वपचछुविकसिर्गसकिनर्धसमन्तुहडचिह्वा
त्यादस्यहरीकनधहगानात्मानवजविम्बविहावयन्॥ नूननमरुह॥ ॐ ॥ उंतिष्ठवजतिवाधिवयमि
नूरुव॥ तस्यरुमि१रवाध्वयंरुनगुहमनाश्रव॥ चन्द्रमउलमध्वरुवज॥ येवनित्रीकथन्॥ सकनाका
नध्वरुसमवसवधप्रमार्धवजविग्रहमात्मानरावयत्सुती॥ नूननमरुहसूवधर्षहवधयोगन॥ ०॥
उंवजात्मकाह॥ गुहवृहष्यत्कार्यनिनालार्पनिनालय॥ नूजागमकर्तुगुहंनूरावाधिविवर्जिती॥ नू

वशांशुयाप्रसन्नवर्माकायंनिद्रुपधिवजात्मकं संरुतं॥ उवंवजकायंनिद्रुतं॥ पुनरुवजांकिंनंशुवयामिरु
 गवनंशुचक्रुसर्वतथागता॥ पुनवजसत्सर्वकायवशापतंवृद्धविम्विशावयं॥ ० ॥ उंयथासर्वत
 थागतासुथारुंधविथकार्यंशुचक्रुतथावशांशुवजसत्सर्वतथागता॥ पुनवजसत्सर्वकायवशापतंवृद्धविम्विशावयं॥ ० ॥
 ॥ ० ॥ अथवजगर्हपुमस्वामहावाधिसत्त्वा॥ पुनत्रपिरुगवकमिदमवाच॥ किंनामरुगवनंशुचक्रुवज
 पद्मकूलमिति॥ रुगवानारु॥ वजं सर्वतथागतं॥ पुनरुगवकमिदमवाच॥ किंनामरुगवनंशुचक्रुवज
 तं॥ ततोनिष्क्रान्ता॥ सर्वतथागता॥ तदवसात्मानंवेवाचनीकृत्युद्धात्समंक्रान्तेविन्यस्यसमंनिः

४३

आदयत्॥ विधिवत् श्रुमुमदानुपिहं विधिपुत्रासुलमभितं॥ तस्मिन्कायनिष्कलि विश्वपद्माक
 मसुलं॥ अनिलानलमद्युलेयंकंयत्रलवेर्विरुषितं॥ गतसुदपनिमकुंक्षेवसर्वतथागताधुषिनासुविम
 प्रज्ञासमसमवित्रलप्रदीपविशिष्टवर्तुष्यधवसकत्रुगदूतपदपनाकाश्रमासुनाईलानवडापः॥
 तवजमहिजिखनकटागांविनयदननमकुंक्षे॥ सुहृदिवडमद्युलेमगमिमंविन्यस्यवजपाक
 नंशुवयत्॥ तावयत्तं॥ वज्रविकवजंशुसर्ववज्रांशुवयत्तं॥ तावयत्तं॥ वज्रविकवजंशुसर्ववज्रांशुवयत्तं॥
 पाविर्नसर्वलंकायपतंवडवर्तुसमप्रहं॥ वडमकुलापत्रिस्तिर्गतं॥ वज्रविकवजंशुसर्ववज्रांशुवयत्तं॥

वं

15
 10
 5

0 cms. 5 10 15 20 25

दनं॥ कृपाक्षमकृष्णं चैव कपालं पादमवव॥ दक्षिणं कृष्णवर्णं उवा मन्त्रकममपुं॥ विमलं पद्मं चैव विन
 र्गं दिव्यरूपकं॥ स्वविद्यापद्ममध्वरं रावयत्सुत्रमधुलं॥ सर्वालं कालापनं माधुलं यानपिकल्पय
 त्॥ पूर्ववैनावनवृद्धादक्षिणं बलसैरुवशापश्चिममिनाहमुममाद्यसिद्धिभूतं॥ नेत्राभ्यां लावनाद
 वीज्जाग्रयां सामकीनथा॥ नेत्राभ्यां पादुलावासीवायव्यां नानाकीर्तिना॥ वाक्कपटं त्रीमुकवर्धुदक्षि
 णवर्धुदिग्दापीनवर्धु॥ पश्चिमं नागवज्रकवर्धु॥ उत्तरवर्धुसोम्याहविनवर्धु॥ नेत्राभ्यां वज्रयक्री
 सिनपीनारा॥ आभयां वज्रजकिनीपीनवकारा॥ नेत्राभ्यां वज्रजकनीलारा॥ वायव्यां पश्चिमी वज्रजुह

४४

विनमिता॥ वाक्कपटं॥ नेत्राभ्यां वज्रज॥ आभयां वीक्षा॥ नेत्राभ्यां मूकभु॥ वायव्यां मूत्रज॥ वंशयाद्विजुज
 कमखा॥ वाक्कपटिकायां पश्चाद्विद्विद्धनिध॥ यागिन्यश्वापयिष्याद्विउजं कमखाकथा॥ पूर्वद्वान
 लिखद्वीं वज्रकृष्णीगगन्माहां कृष्णसिगदक्षिणं बलाननादक्षिणं प्रथमउजं॥ द्वितीयस्वजम
 यमं रतीयवकुं॥ वामपादं नर्तनीयध्वनिषड्भुजं॥ दक्षिणं द्वात्रयपादं त्रिमात्रं॥ सिनपीनाराकृष्ण
 वक्रदक्षिणं बलानना॥ पादवज्रस्वजसथायमा॥ वक्रध्वनिगर्जनीपादवामकना॥ पश्चिमं द्वात्रयस्वज
 वक्रवर्धुमहायुनि॥ कृष्णसीगदक्षिणं बलानना॥ त्रिगदवज्रसिन्धवा॥ वक्रध्वनिगर्जनीवामका॥ उत्तर

15
 10
 5

लक्ष्मं ह्यस्यापि हर्यं कनं॥ अथ पर्यक्तमात्रं कृत्वा वाममाक्रमन्॥ सवक्रादीनाकम्यपो नूष (धमप) उंजन्॥
 सूत्रद्वयसमेर्मधेर्नानास्मिन्मन्त्र॥ ॐ ह्यवंगवयथागी लघुसिद्धिमवाप्नुयात्॥ ॐ ॥ श्रीसम्यक्देव
 कल्पनाश्रुणीयशा॥ ॥ रगवन् (हु) गुमिश्चामिमुद्राणां वाक्कलकृर्षी॥ नहर्ष्याग्यागिन्य ४ कथय।
 स्वमहामन॥ नमस्तु रगवानदा किनी विरुयवलन्नामसमाधिं समापय मंदा किनी समयमद्राजहान॥ का
 ल ॐ नक्षिन्वाला मन्त्रिनेक काला॥ घनशक्तिपिङ्गवद्र ॐ कनू (ध) किन् ॐ ननाला॥ गरुडिनखा
 द्र ॐ गार्, मन्त्रापिङ्ग ॐ॥ हलकालिंजनपक्षिन् ॐ इन्द्रवद्रिन् ॐ॥ वडसमकथनिसिद्धा गरुडि कपन्

[illegible]

15

न स्या ४ प्रद र्जय नू ॥ पादं द र्जय या तु पाद न लं प्रद र्जय नू ॥ अङ्गुलिं द र्जय या तु न रं वं न स्या ४ प्रद र्जय नू ॥ रुः
 सिं द र्जय या तु आ का र्ज न स्या ४ प्रद र्जय नू ॥ आ का र्जं द र्जय या तु सूर्य न स्या ४ प्रद र्जय नू ॥ न दीं द र्जय या तु स
 मू दं न स्या ४ प्रद र्जय नू ॥ न कां गुलिं द र्जय या तु स्वा ग न मिथु कं र व नि ॥ अङ्गुलिं द र्जय या तु स्वा ग न मिथु कं र
 व नि ॥ द क्रि द र्जय या तु न यं वा म र्जय या तु न यं वा य द क न नि ग द वा र्जय द र्जय न र व नि ॥ ५० ॥ ०० नि ५१
 सर्व न कु न द स्या ४ शी संपू टा रु व व द द कि नी र्जय न क ल्य ना ज श्रु थ र्जय ॥ ५१ ॥ अ ध न ४ सी प वं क मि सर्व
 र्जय न भ ल कं ॥ अ वं च र्जय रु व द्वि पा या ॥ अ ध न ल्य न ४ ॥ द र्जय व न कं न मं ला प क र्जय ना ॥ र्जय वा ना रु ॥ पी ०

10

सं: न

अ वा प पी ० च रु ग्रा प रु र्जय कं न था ॥ अ वा र्जय च रु द र्जय म ला प का प म ला प कं ॥ अ म ज्ञ ना प अ म ज्ञ नं व पी ल वा प पी
 ल वं न था ॥ अ ना व व द द द र्जय म य ४ नि र्दि द्या ४ सर्व न था ग र्जय ४ द र्जय मी ज्ञ ना ना ॥ अ वि ना रि न र्जय न क थ र्जय ॥ द र्जय
 व न क र्जय पी ० अ द र्जय द र्जय म य रु ॥ क थ य स्र प सा द न म र्जय द र्जय स र्जय र्जय व न र्जय ना रु ॥ पी ० ज्ञानं प्र कं अ द र्जय
 नं न र्जय व वा पी ० अ पु न रि नि र्जय व र्जय द र्जय र्जय व वा ॥ उ प पी ० ॥ अ द र्जय व नी ना म र्जय व न र्जय व वा ॥ द र्जय का र्जय न था
 र्जय नं मा न वं उ न र्जय व वा ॥ अ र्जय का म र्जय पी ० अ र्जय नं व न र्जय व वा ॥ उ प रु र्जय नि र्जय क नी की र्जय लं उ न र्जय व वा ॥ अ र्जय
 र्जय क र्जय लं पा र्जय व न र्जय व वा ॥ उ प रु र्जय का र्जय पी ० अ र्जय लं यं न र्जय व वा ॥ म ला प क र्जय व वा सि नी ग

७

रुदवमानयेवच॥ उपमलापक ४ सोनाष्ट ४ सुवर्धुदीपवच॥ मज्जनंनगत्रकेवसिधूत्रपिपकीर्तिन ४॥ ३
 पमज्जनंमनूःपाककूलगाठुनयेवच॥ पीलवकात्रध्याकंकर्मानपटकंनथा॥ उपपीलवंदनिकलवासा
 गनमध्यगनं॥ विंधीकामात्रपोत्रिकासाचषपुनसीद्यानंवडदधिगटंनथा॥ उद्यानंवापिकागीनंउपमज्जनंगय
 ना॥ मयेनासांस्नानाधिवारविधिंवरु॥ विनयवृत्तवासस्नातुकाकक्षासमवर्धुकावत्रिकनश्चस्नात्तद्वस
 कदम्बस्ना॥ दवीकाटवनस्नातुद्विकलेरुत्रिहिता॥ उडियानंश्चकस्नातुजालश्चनेकनकद्रुमस्नापीठं
 पुमदिनारुमिउपपीठंविमलामना॥ कुरुंपुलाकरीह्याउपकुरुंलविष्मनी॥ द्वादीहिसखायैवापचय

५२

रुसर्द्ध्या॥ मलापकाद्वरुमात्रलात्रापमलापक ४॥ मज्जनंसाधुमनीचधर्ममयापमज्जनं॥ दक्षपात्रमिना
 रुमोहिच्छात्राषगियागिन्या॥ यथादिष्टयुकात्रकुवाक्षात्मांविचित्रयं॥ ॥ दिवसंवप्रवक्रामियागि
 नोमलकंनथा॥ पुनपकुरुवर्द्धुर्ध्यांश्चस्नांत्रविहाषन ४॥ धजंजसुर्द्धुंवेवसफरुमविहाषन ४॥ कृपास
 त्याशयत्ननमावर्द्धुक्रियनविद ४॥ कृपादिनानसिद्धंतिरुस्मात्कृपांसमावत्रु॥ यथात्मनिनथासत्वेयथासत्वेय
 थासत्वेनथाकुरुं॥ ॥ निमंविन्ध्यागामत्मा, लघुसिद्धिमवाप्नुना॥ ॥ निमलापकस्नानपंचमस्यप्रथम
 प्रकनर्द्धा॥ ० ॥ अत्रुमिच्छामिहानंदगुह्यप्रसलकुरुं॥ मित्रिरुगंवस्नानकुसुमाधिक्रमकीदृजंहरगवा

मना २

नाह ॥ चउषीं समाधिस्थमस्माधिकमवजृम्भक ॥ समताविरुमत्प्रायनामदिनवर्द्धिं ॥ सुखासनसमासी
नांनकुलदशनः ॥ स्निग्धलसर्वतावपकावृद्धिनिविरुक्तः ॥ अजितं चिन्तनादानं गुकपप्रंशकं तथा ॥ कः
लाविविधवभूमिआसनानिगयेवव ॥ कायवाक्किरुवजस्यधर्मधामुविकुर्वनशासी हृत्पिठ्यागनव
जसत्त्वस्वयंरवेन ॥ आपधाउमंजाधाउसमनसंपन्नमंपदं ॥ पुष्पायात्मकं योगं प्रतिष्ठितं वृद्धविम्वकं ॥ रूत
सौमंदिनलहृत् आचार्य आगमानग ॥ नरुस्यार्थतत्त्वतावद्विधानं पथीनिगल ॥ पर्वका नां सर्वेषां गुह्यन
तादिलकृद् ॥ पुष्पात्तात्रिमसमृद्धिर्न ॥ द्विभुजं सत्यपथ्यं पद्मासनमासीनं ॥ सर्वरत्नसहस्रविर्गं पथवर्द्धमु

१३

२

मस्तिनां महास्रजद्वयपाशिं हयं दिस्वनप्रमायुग ॥ नृपसिंहकाकिंठस्नानसत्त्वस्य तावना ॥ कदलीः
भूषांस्तिनं नालोडकिं नदयवतन्पूर्वलकरोसंपूर्ण ॥ उच्चैर्ध्वजं पद्मं तदलान्यद्वसुत्ता रानि कंशाया
मिष्टकल्हिकां ॥ न्यसन् उक्तविन्यासं मेदो महासमुलमध्वन ॥ तज्जिह्वजकवकं सिर्गमध्वजत्वा सुनिर्मलं
तत्स्रध्वजुविरुद्धं स्वविलं गते वशाजयन् ॥ पुथममेजीयुर्कलुश्रुताया दलपूर्वक ॥ कनूलाघावदकिं
लवत्तसीरवावीजत ॥ दलयश्चिमकवेवममिगारुवीजं न्यसन् ॥ उरुनांदलाउममद्यपुल्लवतस ॥ स्वयपूर्वा
दिवीजस्यवन्दुविन्दुयथाक्रमं ॥ न्यसदकवचकुर्वांसिगच्छाहिमस्तिनी ॥ विदिकनपीसकानीचलात्रिपूर्वाकिं त

१२ नमः भूयः कथं यमं दिलकरी ॥ रगवती ॥ नृनृवजयथा तलुं लकलकल उच्यता ॥ असावसु सान्दस्य सताव को माववत् ॥
 तस्मिन् विरुं दुम् क्रयसु जाययत् ॥ कोरुं विरुमत्यन रगव कथयस्व म ॥ अल कृन्नुल कृदं त्यक यत् स्नानका
 यनिर्जनं रावागव विनिर्मकं अ वरुं वरुं नृपग ॥ नृपं नृ गंत गाम र्धगृ की यारुत्तयाग विरु ॥ यथा लकल स्नानः
 नमसता नृपवत्तसा ॥ तस्य सवाधिमा नस्य श्रीपटं तत्त्व यम्भत ॥ गु नृप दम मा र्जन विस्नान नृपग ॥ तत्त्वानी लकदी
 म ऊं उदगीवी नदहा कशा रा विरुम स्य सवधिं सितव सि विरु धिती ॥ पंचरु टिक नृपा हां अ म गवी जनवातना ॥
 सितव र्ध पुलादियं अ म गधवा शुव कगशा द्दही ज पद्म म र्धगु अ नृ पविम उले ॥ तस्य म र्धवी ज नृपमा लिः
 कालि स म र्धनी ॥ सितव र्ध स र्मा रा श्रीन सि धा स्या स म र्धनी ॥ तस्य म र्धगु दा मा हां विद्र विरुं पुकी र्हिती ॥ वासा

॥१४॥

म र्धवि र्धन कृन्नुल कृदं त्यक यत् स्नानका

१४

ग्रसमरा गं दुयन मा र्ध नृप सं स्तितं ॥ लकल कल स्नानी नी विस्नान स्य स्वरावग ॥ पञ्च विद्र पद स्तनं अ स्नाताः
 विरुल कली ॥ द्द दिव क कं दाल स्य विद्र द्वा न मा र्जित ॥ अ स्त विस्नान स्नान स्य गुवा दमन तत्ययी ॥ ननु मा र्गस्य
 वा अनां म ऊं धा पि स द्द न ॥ सल रा निव म ऊं सि पु या गा स र्ध द्द र्ध रा ॥ उ पा य न नृ या गा नी गु या ॥ स र्ध र्ध
 तत्यये ॥ गु नृप दं हा मा र्ग द द्द यि दिव क ल ॥ स मा हि त रा व रा व न नि कृ म्य नि नृप द्द ती मन ॥ पूर्व ज मा ध
 म्मा मन ॥ उ द्दाम ना ज वा ॥ म ना या ज पु सा द न रा य न वा र्ध क यो ति ॥ तस्या त्म ना म ये ॥ स र्ध म्नि स र्ध र्ध ग व् धि मान ॥
 यदि कृ च्छ य धा गी द्द दिव न न रा व न ॥ स र्ध र्ध का न ल वी ज स्य न नृ पत्नी स्व नृपग ॥ कार्य का न ल वी जानी न नृ पत्नी

15

10

७

निडकृतशात्रूयादिरवरागस्य आलं ववीज पथकं ॥ वरुत सर्व नूपल ॥ छिना छिन्न सिरीस्त्रिणा ॥ नित्य मूला निधीय
स्य स्नान विस्नान वीज क ॥ विदूना दंतु सीयू कं सै सावराग कां कि ॥ मभा जायन सैयू कं मूय कं वा ग्विवर्जिती ॥
ध्रुवी नित्य पद स्नान सात्वत धर्म धातु कं नित्य मूय कं निवर्जिती स्नान विस्नान लीयती ॥ स्नान रावन विस्नान सैवा
धिक म ह म्भन ॥ पुदीपाका य ॥ सैवर्षा प्रथम विद्रु ह म्भन ॥ ख शा ता का य ॥ नान्दिनी य विद्रु ल कृत ॥ शिवा य ॥
लका का नै द ह दि गृ ह्म न तथा ॥ या गिनां कृ ॥ म्भन ॥ तीया विल कृत ॥ कामा पि द वराग ना ॥ वरु थ ॥ अति द र्शि
नां नूपल म्भन पि द वतां पंचमी कथन ता ॥ वरु म्भन नूपल गंतु ॥ सफ म्भन धर्म धातु ॥ म्भन मन स्व क व ल्वा थ रु लीया

गिनां॥ ॥ मृदुत्वमकमनीरुत्वावशगर्भमहाकृष्ण॥ सर्वपांखलवस्तुनां विमुक्तिरुत्तमतामता॥ यथादक
कुरुदनदहिनीउपकथन॥ लब्धव्यत्वायतनदहिनांस्वलावनविमुक्तिरुत्तमतामता॥ स्वर्ग
वशात्मिकाविमुक्तिर्नामगुणाविमर्शग॥ विषयानीश्वराच्चस्वर्गवर्षेयपर्युषं॥ नृपादिविषयायपिप्रतिरु
सक्तिरिह्यागिनां॥ सर्वगविमुक्तिरुत्तमतामता॥ हरगवनकतविमुक्तिरुत्तमतामता॥ नृपादयःकस्मान्नाक
यहकाश्चति॥ हरगवानाह॥ वक्रपाशकनूपंमद्यकल्पनयत॥ गन्धनासिकयावहिकिह्यास्वादमविद
कार्यमस्य॥ गतवस्तुमनःसखादिमापूत॥ हवितव्या०॥ मस्यानिर्विषीकल्पगुह्यत॥ नृपवैवाचनावृद्धा

५
 १०
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

15
 10
 ७
 गावाये वाधिविरुखवयनभसुवंरुगवाचजी नस्मान्नायास्यदवनामयुलनायवासेनमदुयावेत्यकर्मधाभीमना
 वरुनाथनयपिवाच्यैर्निदर्शिताभजुधिमर्कितवसोत्कविरेभमकत्ववदिनभजमेनार्थीयथनकुसावमादाय
 संखडगापवयेवधर्माभकेयायऊचिभभयकल्यनांनिर्विकल्यायदाधोमानरुकाभंकानिवास्यदभगदासिद्धिर्न
 संदहश्चिरवडववायथा॥नवकेयातिविकल्यात्तुषभमिसांयसागवंभुमर्कितवासर्वकल्यविहीनायातिपदंनिर्म ५८
 लंभक्तं॥नस्माद्विकल्यालंरुडुवृद्धनयकृताःसमयाः॥निर्यंनरुसनीयाभसमयस्ययनवेरवतिनाभसफिका
 योमकुहनामिसर्वतावपुडह्याःखलुसर्वलनूत्यादाकावयागनभनखवाडुगकायगृकूपीत्वामांसनहाड

नंनिर्वाइहसर्वविभयवविलिफमहामांसंमरुकुल्लितमांसंयासकभगलुरुसंयुक्तंदियंवेवावननातिपूतं
 कीकभनेशमिमिमिमायमानंखाननवद्धर्दितमिभुंमांसंवजाम्भमर्किकायुक्तं॥वेवावनसन्मिसंभाकयंयातिनात्माः
 रुहापीत्वावडसलिवंनरवतियदाकचित्॥रुकुंडुकुशीजनेमनचविकल्यामांसस्ववृधधायवलाकइरुसु
 सुरुभ्ररुत्वसाधकेडस्य॥यागम्यासुगम्यायेइकार्योसुस्यनकार्याभगम्यागम्यविकल्यंरुभ्ररुसुमनिष्टकयया
 ययंमकुनकर्यात्कायवाकिरेइसंभादाहवतियथा॥नस्यायथेवविरुविक्रयामदिवायानंनथकुरुयंयातिः
 नासक्तं॥कुल्लितमतिविलासंमवर्तुमवर्तुअनूपनंदीनंयत्थिन्नवत्सर्वलकाकावस्ववृधध॥नाकंपः

नकनेकवर्त्तुनयस्माद्दानजायत। निनात्मानमूत्स्य चर्याक्रियतनसंभयः॥ ० ॥ ॥ निधीसंयुताहुवचः
 यो कल्यणंयमः॥ ॥ अतंकोरुहलंदवस्त्राधिष्ठानकमः॥ कथं॥ बहस्यादस्तु तथावेयथाजनंकिंरुवच
 ॥ मृत्पुत्रमकमनाहृत्वावजसस्त्रमहाकृप। कथयामिसमासनसर्वगतुस्यनिर्नेयं। एकावधयत्पाकंस्त्रनमय
 कूलकृष्णंगयानगमनंवेवधरुनांश्रसदागति। धातुमदं॥ निद्रुतशरगवानाहृगयमानववहस्यं पाउभा
 कवत्यकं। वकावावकधुश्रुहकावः॥ स्यर्गकसुथा। स्यकावः॥ अमिह्याहृयकावश्चिरुभवव। वकावः॥
 वसः॥ श्यामाभकावमदउद्यत। वकावः॥ अग्निः॥ कथिनाम्यकावामांसउद्यत। सकावधवि। एकावीकाववधो

३२

सातथा। त्मकावधत्वगवाकानिकावः॥ अस्त्रिपवच। सकावधरुवत्सुजंदाकावधरुसं। स्त्रिकावधममिः
 लुकंयुकंयुकंउर्यसु। आरुनं। तकावधरुवत्सुजंदावीर्द्धि। रुसमरुवः॥ ॥ सवंकथितंदविदीनादस्त्रव्यतः।
 कलात्मकंरुवत्सुवाधिविरुस्त्रव्यतः॥ बहवक्त्रिविनिषाकावकात्त्रिरुससुस्थितः॥ समवायः॥ ॥ अगल्यपात
 स्वदस्त्रायसमरुवः॥ सनाथः॥ सगावायुहकावः॥ सर्वगतस्त्रन। अस्त्रिसंधिवथसमायंवीजयश्चकं। वरुनालुप
 सर्वपुत्रत्वावविजमूरुमं। तदादिकाहृद। मपूवीजयंचक। आरुनं। हकावधस्त्रवसंयुकंविज्ञानेयविकीर्द्धि।
 हकावधोवसर्वरुसर्ववृक्षसमागमभसकृपानादव्याकुनिष्कानासमयावावगमचलं। इहंकिपूलाकपूत्राः॥

15

10

७

0 cms.

5

10

15

20

25

यत्तदनसदागतिः। वायुश्चतुर्विधः। त्रिलस्य स्थिति विविधः। लीनः। पवर्तन विविधः। लीनः। सदायवर्तनः।
 गतिः। सर्वसत्त्वेषु। प्रवृत्तानवलि सायागीर्ज्वरनः। अर्थः। आग्नयवेव वायव्यमादन्तु वायव्यमा। वेक
 त्रिलस्य संवावा इर्द्वयार्थे विद्वा। अगताः। हती यं मानसं वा वं चतुर्गुण्युत्तमः। अथ भनिर्गमा वापि द्वावन्त्रेः
 वा रुमंरु वत्। अथ नमूतु मंदा वं अथ उच्चैः। य कीर्तिनं अथ द्वाव स विस्तानमूर्ध्व द्वाव स अथ वः। भवेभावनाः
 दयाव द्वा अथ द्वा वला स्तिताः। अथ अर्थः। त्रिलस्य मूर्ध्व सत्त्व विस्तर्जनं। आवाहन विसर्जनं वयसव गत
 सदागतिः। येयविकाः। सर्ववृद्धादा किं नो यागमातवः। अथ वृहो व निवृहो व गु सदायव वृहनेः। सखइः

३४

खसवृत्तामुसी द्वा हि सत्तु स्तिताः। अथ द्वा रगवा म्ब जीवजसत्त्वामहासखं॥ अथ रगवर्तनं देवी वालं
 क्रिष्णा क काल क तापयित्वा महासत्त्वमिदं वा समुदीनयत्। वसन्तं न कथन्नाम तिलकं कीदृशं रवत्। अथ
 दिक्थमा अथ सत्त्व न कं कथं रवत्। यत्नी वादिय अथ कं रवत्। कथा संन अथ वं। कथन्ना दी समुत्पन्नो रद सत्त्व
 कथयत्त्वम। रगवा द्वा अथ द्वा विषय कानि गुणानि रवत्। नादी खवृत्तयपी भदि द्वा र मि यो व मि ता नां क
 यवा क्ति रुचक गतस्ताना नूतयत्तदन चतुर्विधं निम्न दाह तं। मित्रा मलय द्वा म्भु मित्रा जाल च वस्तु अथ अ
 धिया न कथा वद कि न क र्त्तु उच्यते। अथ द्वा पृष्ठ वं भक्तु वत्ताव १ पी ० संरुका १। मदा वलि त अथ रयावा

15

10

0

0 cms.

5

10

15

20

25

[illegible][illegible]

15

10

5

नेवाला निव कास्त ना। कर्ममात्र न निर्ई ना हा लनि ना हि म सुल। वसकं या य स नु ह्य स मा य सा य व स्मि ना। ए व श्रीः
 हव का वी वा व स क निल काम क। या गिनी वृ य मा दाय सं स्मि न। स च रा व व। का य वा कि रु रु द न गि वि। धा द व नि
 र्म म। ग या ग नि क वा य स र्व द ह य व स्मि न। ना हो वं का व र्थ वे स रु स्व मु य त्रि की र्ति न। रु द य पि व हं का व दीः
 र्घ मा ज द य स्मि न। क। उं का व वृ य स कि मा उ झ न उ य न। ल ला ट रु हं का वा सो ना दा वि दू व ना रु न। य थि या दि म
 हा रु न श्रु श्रु क प रु द न। व रु सं ध म धि दाय व रु य म स म रु व श च रु वा न न्द वृ य रा व रु र्था ग य वा य स श य
 व मा न न्द वृ य स कि या का व क ला व न। श्री व रु स स्व वृ य स की उ ती स य थ म स र्वं। द ला नां व व रु क्क पि व रु दि रु य

७७

व स्मि ना श व न मा रु न ना श मु ने ल व स्मि ना व न। वि दि क्क व स्मि ना ना श श्र म सु रु न ना श्र पि। य थ म ना व हा ल रुः
 क ल्प जा स्व वृ य मा रु ना श व रु य रु नि वि र्वा ना ल रु ड पा न व रा व न। नि द ह स रु स। ध य थ ना या य व स्मि ना।
 का य वा कि रु रु द न व रु विं श कि व द ह ना। पी भ दि रु द मा श्रि य रु न ल न य व स्मि ना। शि व स मु स म रु ना ना शः
 नि व सि जा रु ना श व रु स स्व न मा वृ य स सां म। ध रु ना यि का। पू त्री व ल रु दा र्वा न र व द ना व हा ल ना। रु लं ध
 व रु श्र वृ य क म वा म व हा न थ। डा डि या न म हा पी। ए या व दि या य व स्मि ना। द कि र्शं क र्शु मा श्रि य स्मि ना। स्व वा दि
 शी। अ र्व द रु न थ वा मा दा कि नी पि मि ना व हा। न ह व रु व या ना दि र्ग दा व र्थ य व स्मि ना। वा म नी कि या वि र्वा ना

हि मासादृष्टव्यमश्वामश्च वसुधाया नादी यत्तिज्ञा कर्मजातथा । अस्मिन्मा लयवस्तु दिस्मिन्मा कथिनव्यगधदवी
काट्टु या ना दी न्दिगावकी मता । वरुं वदनिसानि र्ण सर्वदा धिवामिनी । मालवकुत थस का हृदि स्मनक्ति नश्च वि
स्वर्षवदनिया ना दी कामव्ययवस्मिन्मा । दाषां वनी निविख्या तावूय दर्शनरा विना । उडपि लावहा ना दी म हा विः
ह्याउवेस्मता । जिभकूनो समूह नामान वा स रु रू सा । अरु मा ला कु ला दिय्या । सर्वबी वदनिका भल । भी न दा वकलि
रुडु पा श्रम सु समा रवा ना । उदवस्तु उष्मा च बेलम्पा कय की र्तिता । यव सं ये व कां विस्म विस्म वदनिसर्वदा ४
सीमा कमध्यगवा पि हि मालय रु ह्व वदना । यता धिवा नी संस्मिता । एषा ला ला स्वत्रयिनि र्णयं वदनिसानि र्ण गद

दवकसंस्क्रितासामान्यावेवविख्यातायाकिनीयवमश्चित्रिगोवाक्षवह्नियानादीलादिनासाहदुदायिकापुष्प
दवादिनीयावसुवर्तुदीयसंस्क्रितासमाकृतासुदिफाङ्गीयागसावपकीर्तितानगवपमधीरुलामदस्वीमदवा
हिनिशिंखीसूत्रावेवसरम्भकावाञ्चवाहिनीरखकम्बदन्तिमबूखडुपावकीर्तिविनिर्दितागुरुकुलनायांसूनमु
वावसिंहानवाहिनी॥दशन्यासः॥ ० ॥षष्ठस्यद्वितीयंयकवर्धनं॥ ० ॥यत्तंकोटुद्वन्द्ववज्रध्वात्ममधु
लयजादिकर्मकथंशुवर्गसामकर्मनजानामिकथयस्वमहासूरवगरुगवानाह॥दवनाहवकासुर्देनादीवृषंसं
रुतंसल्लिखंमसुल्लेखम्यंयदुद्वावेयथादितं॥अष्टाविंशत्यांरुतसुसुमेलेविधत्तंस्त्रिंशत्समत्वात्सर्वज्ञवनव

१५
 १०
 ७
 ३८
 १२
 ० cms. 5 10 15 20 25
 सुवस्य कीर्तितां कायवा किरुवयसि चक्रमकमूयनगी विमलक किं डाल्क रेवका दियथाक्रमं रणव्यवक्रमं
 सेवमन्यनमसुमस्ति तं यादतल रेवका वायुर्धनवा कति शक्ति तन्त्रिकटिद रेवका धा लनरुथा रवउ
 लाका वयथा दिववृष्टा सुदयसुत शरदयपथिवि धेव यउ वज्रासमकत शक क्षालय सुवथा हिसुमवगि विवा
 रुथा रतद्धि नागागसुतु द्वा जिंभदलय कऊ खवयी ऊ नसं सु द्वा जिंभ द्वा धिमानसं यममध्यगतं यनु वनुम
 सुलमयन रमलिकलु मिवा रध्वस्ति तं यरुददा हनं तस्य मध्व रुदं काया विन्दवया कनाद न शर्म नेलं सर्वला
 कानां स्ति तिसि वयलात्मनां रम रसं स्ति तं वी ऊ वयस व्यक्रम कवय न श सर्वथां द हि ना वयं तस्मा इत्यनेनादि नः

सुवदत नवयसुं स्ति ततमद निर्भंगं तनेव हि यतना दावक्लि संताषका विधी रसम्युल्लं गनरुवस्य वन
 संताषका नदवे मरु मिश्रकं वरुनां सावमरुमं तद्वृत्ता मिश्री नीतिम विवं मथुलं मगं द्वा जिंभ त्मदाना दीवक्रं
 हिम सुलं मगं वा धि विरु महावत्तं मथुलं नदवम सुलं सवा स्यात्तं ववयस योय विवं यवस्ति तं वा कं उव
 पम द्वा दिसर्वं दिययवरु नं अरु कवं वशुका दिसि उवय वस्ति तं सवा स्यात्तं ववसेव वा धि विरु नव जि
 शार सुल सुव वयस उग दन्व सुवयि शार वृद्धा नां वा धिसत्ता नां समय अदि तन रु ऊ न नी देव वृद्धं तं या
 यतम सुला द न श आवका नां वृद्धा नां यथ कानां नथेव वरु व म्मादी नां यदवानां निश्रुि मथुला द न श अरु क

कशवगहृतिः कलाहिरुसमनात्यविवालिः १ मदासुखमदावकृदंकावाविन्दुयतः १ चन्दसूर्योऽविरया गो
 पार्थस्यो वामदक्षिणोऽक्षद्वयवामननादिसंस्कारादयोकाः १ नाहिसंस्कारा विअनायधमखीमदावहा १ ना
 रवद्वन्द्वयानादीवदस्यैवमखीमथाः कश्चमध्यद्विअनावकावदायकीर्तिता १ मदअनुवृत्तिरयागावकसूर्य
 वृत्तिस्तु १ घावदयसमावृद्धावधउर्ध्वसमाधिना १ नोदिवन्दसूर्योऽधोनादिद्वययकीर्तिता १ वीवासांदाकिनीः
 नांनुगत्यागतिनिवन्धनो १ असमनादयैवेवसूफयवाधयाविव १ वामदक्षिणायार्थस्ववादादभसंस्काराः १ उर्ध्वम
 खासमाख्याताः १ ककावादिशिवावृताः १ अक्षमूर्खमुपार्थस्तु ममीकृत्वा निधाजिनाः १ भूकावावाकासः १ याकासः १

१०

रक्षारगवृद्धिः १ यथाकश्चमदावागवृद्धावधुमाह्निः १ संस्कारास्तुतदारयागावृद्धा नांकायडरुमः १ नासाः
 योऽनुजदावा सोवजा १ योऽनुयदाह्निः १ अक्षेगत्तुसंस्काराकायापियदाहवत् १ रुगमध्यगत १ सोसूर्यय १ वृत्ति
 संस्कारासूर्ययसमाख्यागानिर्मासकायडयतः १ वृद्धा नांवाधिसत्त्वा नांस्त्वदोर्ध्वनेजायतः १ यमनर्हेश्वरावा
 जायमयकाययागः १ तस्मिन्नरुद्धगानो निर्मासकायवृद्धक १ यरुणसंवाधिविरास्यं पिछीरुतमनाविलं
 संसावमार्गविच्छिन्नं यथापममं शिवं निर्द्वयं वमं भुङ्क्ते १ वज्रसत्त्ववृद्धक १ श्रीद्वक १ वृत्तिरयागं तत्तुसं
 यदावृद्धक १ सासदर्शनयाग्यपि १ सत्तुतत्तुयवस्ति १ नागाश्चैव विनागश्च सर्वयित्वायुसंस्काराः १ सर्वनादीसमा

15

10

0

15

10

योगदाकिनीजालसस्त्रवशा ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 नेलात्मयागिनीयुक्तमयुजवमाह ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा
 ॥ यद्यस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा

१५

७

निर्मानेकायश्चान्निर्मोहंस्त्ववयंयत्तश्चधर्मविरुद्धव्ययंयुधर्मवक्तुंइहवक्तुंसंभारानुद्धनंयाकंयत्तुं
 वेवसवपिशांसर्वधर्मेषुददत्तात्सर्वमस्मिन्व्ययंयत्तश्चधर्मविरुद्धव्ययंयुधर्मवक्तुंइहवक्तुंसंभारानुद्धनंयाकंयत्तुं
 वचनिस्यंदेविद्याकाधर्मवक्तुंभयव्ययकावयंयत्तश्चधर्मविरुद्धव्ययंयुधर्मवक्तुंइहवक्तुंसंभारानुद्धनंयाकंयत्तुं
 दिविरुद्धवक्तुंभयव्ययकावयंयत्तश्चधर्मविरुद्धव्ययंयुधर्मवक्तुंइहवक्तुंसंभारानुद्धनंयाकंयत्तुं
 स्मिन्वादाधर्मवक्तुंधर्मावाक्कमरुवधर्मविरुद्धव्ययंयुधर्मवक्तुंइहवक्तुंसंभारानुद्धनंयाकंयत्तुं
 मयुक्तस्मिन्मयुगीययुक्तवर्धंशा ० ॥ अथवज्जगत्तुमस्वामहावाधिसत्त्वा

योऽनुजाननीव च नाऽऽलिमरु कः। निःकायदंजगत्कृतं नक्त जायमरु कः। आऽजाका रिः कुर्वन्मकुं नग्नः। शिवकु
 थमृत्तिगः। आऽरिः। सामग्री रिः। सत्त्वाः। वृद्धयव नसंभयः। रुमयाद नमासाऽसत्त्वा दः। रुमीश्व बाऽया धिरु
 रगसूखाव र्णांशुक नाऽमाय वस्त्रिणाः। विना न नन सो र्वांस्यात्सूखं हि त्वात्वं न सः। साय म्मसमर्थत्वा दवगाः।
 यागः। नत्सूखं। नत्सा द्वा नत्तावः। स्याद ता व नूया न व सः। उजमूखा का व नूयी अ नूयी य व म सो र्वा नः। नत्सा
 द्वा नत्तावः। स्याद ता व नूया न व सः। उजमूखा का व नूयी अ नूयी य व म सो र्वा नः। नत्सात्स द्वां जगत्सर्वं सत्
 जं स्व नूय म्मय नः। स्व नूय म्मव निर्वी र्णं विभुऽया का व नः। नत्सा। दवगा व यः। जोगं तु जा न माऽय वस्त्रि नः। उः

१२

उमूखवर्तु संस्थ किः। युपा कृत वा स नाः। उः। यवकं धि नंद वि सर्व याग निवृत्तं। अथ सर्वद व द्या ने ना ल्यथा गिः।
 नीपमूखा रु यथाऽ। शोचना मा म का पा धु ल बा सि नी ना वा रु क्ठी वृत्ता यर्तु ग व बी अः। अमूखा भ म्मवी व न वं य
 रु क्य स भ व य व मा न व जः। स मा या गि न्यः। य व म वि स्म य मा य ना मूर्च्छि काः। संजुक्त अरु व नूया अथ का ल्य य मूखं
 सर्व न थ ग ना व व मा हः। उः। य प य उ रु ग वा नू सर्व या गि नी ग स नूया अथ रु ग वा नू सर्व स्त वि जं य व जं नाम स मा धि
 स मा य य या गि नी उः। य प य व मा हः। सत्त्वा व द्वा व किः। उः। आग लु क म ला द ताः। नत्सा य क र्प स द्वा न व कू ल पूज
 शः। य म्म उः। ग व ल द रु क्ताः। हि क्ता नि व य स ला अः। मा ह वि व किः। अ न म्म म लु न सू य वि उ दः। उः। अः। य ने व वि

15

10

७

15

परवरतुनप्रियनसर्वज्ञकवशनेवविषयत्वस्त्रिविधसंस्तुत्यदिषंयथावाकगृहीतस्यमाघरुक्षयदीयनवागन
 हन्यनवागविषयनीतिविकल्पनागुरुवमुक्षारुवनेवविकल्पयुतिविकल्पनसकल्युगायंयथाविष्टंयतिनायनाक
 यनगनआतावविकल्पादिआकावे४॥अध्वनखलुरयथापावकदग्धाश्चिश्चकवकिनायूनशनअनामप्रिनादग्ध
 ४स्त्रिश्चकवागवकिनायनयनदिवध्यकजकवाबोडकर्मसायायनकुननेवमूयकरुववन्दनान्नागधवध्यन १३
 लाकावागारोवविमूयनविषयनीतरावनाश्चयानहानावृद्धनीर्थिके४॥कन्दनयूरुवत्यथयश्चरुनखनयन४॥
 कनवमहानन्द४यश्चगांयतिरुदने४॥बोलककालयागधयोकाधिन्यवातनासकधिनस्यमाहधर्मत्वात्माहा

10

वेलावनामन४॥वाधिविलेडवंयस्माद्वमधातुकर्मनंअयामकायव्यत्वातुदवा३कायनायक४॥वयायर्षसं
 यागलजाजायनसदारवागमिनारुवज४स्याडागलकसिसम्बन्धककालकयश्चिरुंरुनस्समीवसव्यकं॥०॥
 योभाप्रसिद्धिस्थादमाधावायसंरुव४॥सुखवकंरुवश्चिरुंरुनंरुवकंरुवकिलकृष्टं॥आकाभंपिमुनवज४॥पिमुनः
 माकाभसकव४॥नकमवमदश्चिरुंयश्चव्यसलकिर्नंयश्चसकलपूत्यनासुजानकसदश्चम४॥नस्मादकस्वरा
 वासोमहासुखवममाश्चन४॥यंरुवांयतिरुदनेवागमिनियश्चयनसारदभगंभनदिवायुकाडल्यानककः
 लघुनथागनसंया४॥महत्सुकलघनककलानिगषुकलघनकमनानिचलककलानिमहाभिकाटिकलघ

5

0 cms.

5

10

15

20

25

15

10

5

कथं स्मृतं रू ऋतिमलापकं चैव यी ऋतिस्मभानकं तथा रू ऋतिमृत्तकं विदुः दी ऋतिथामिनी तथा रू ऋतिलामारु
 तासु ऋतिवृत्तिरीतथा रू ऋतिदाकिनी चैव रू ऋतिखलु बाहका रू ऋतिजं घायुगलं रू ऋत्यसिवादने रू ऋतिः
 स्वागतं क्रियायामनं च के का कव क्कमका शवी च रुगिन्यसुता रू या समयमूडा रू ना कवे शवजगर्त उवाच वाक्कमानं
 आनामिकथयस्व महासुखं रू गवानाह कथयामि समाभनन निगदि तं रू स रू पा कश्चि वादनं यमियति यो न हि
 यस्मिन् वादनं रू गमू रू गी रू कं रू वति रू लं व आगच्छ मिथ्यं विगवं दहि त्युक्तं रू वति रू वदकं गृहा रू मकं रू वति
 रू हृदयं विदमि त्युक्तं के व वं म व नं म रू क थि का य थि का अत्रिक व दामू य न रू व न हं क म मि त्युक्तं य व स रू क रू

१४

मय न रू मं थानममृत्तं रू यं न व रू समागम रू त भ ना निका ज कि शी रू या न व कं म लु लं म रू अमू कं स्मभानं चैव कारि
 ला द्वा व मय न रू स्वसन रू ऋतिवाक्क रू य विधि रू क्रिय रू त भ विवि ति वे थ रू स्यात्क व रू ऋतिमूड रू न रू अ न थि अ व
 गृहं वे अलिकं य रू क थ न रू रू गिनी दा की नी चैव मू द कं म द रू की रू त भ गृहा रू स मि क वि लु दा दं रू स्य भ मि जि क या
 वृत्ति रू मि रू क रू स्यात्क रू रू ग न्ध वा सि नी उ आ ग म न रू क रू रू ना रू कि व द रू य रू वि थो ग ल म्बा द वा द न रू स्य
 ता रू नि वा द्वा व रू वि ना रू या ना वि रू फि रू फि सं रू क रू धू स म या धू स थि या प र्व ना सानू स वि ना न य रू अ रू ल्पा व य व रू थ
 का व द ना मू रू व उ य न रू वा जि का जि क वि रू या ना अ द ना द न उ य न रू यं कि धं उ रू समा रू या ना रू दामा ला व रू थ न रू

0 cms.

5

10

15

20

25

15

वलावायुः यमुः ४ सिंहासमु वंसममयगः स्वासधुयथः ४ पाकाऊनंरुलगुसंस्तंमहाकुवासहायमुः ४ कृति
 द्युगवस्तं ४ नाः ०० किनवथेवाम ०० किदुषणमकः ४ मः ०० किमहिषः ४ पाकाः ०० किरुक्रुदंकेविनः ४ हाः ०० किपर्याय
 ४ स्यात् अथ काः ०० किवाजयः ४ साः ०० किलिः ४ पाकामुखस्यर्भनयुकमितिः ॥ हाः ०० किक्वित्यर्योयहफिसुदक
 स्यर्भनः ४ कीकावलकासमाः ४ र्याभेथनं ४ न्यस्यर्भनकूवधमिउवस्यर्भनवंकूवसांयनं ॥ वाकूश्चमास्तनं ४ समाकूव
 ललाटीचयाः ४ नाकथितादुयाः ४ वः ४ धवामाः ४ तादृदिः ४ पूरुलीघयश्चवामकः ४ आकृदिर्दकिः ४ राताः ४ गोवउर्दुनि
 थार्यः ४ कूवमध्यमास्तुनादृदिर्दोवनासाऊनः ४ वः ॥ तिर्यग्दृदिर्मावः ४ सपूयुः ४ वीर्दोनाभगुदः ४ याः ४ नावः ४ कनेः

10

वक्रकनवभीकवक्रयवकनयुः ४ आकृदिः ४ कूवनाभनिकनयुः ४ पाकनास्त्रिगधवक्रयवः ४ ययकीर्तिताः ॥
 आकृदिर्वजवक्रयकूवनासचलः ४ धवनासायासयाः ४ नसिध्वननाः ४ संभयः ४ आकिवक्रनकरुयाः ४ अचिन्त्या
 वक्रमध्यः ४ धयावाचार्ययाः ४ यः ४ मयः ४ मियः ४ मीथीवजसस्त्रयाः ४ नदकिः ४ यः ४ कृपाः ४ नयनाकाभगमनकावन
 याहिः ४ सिद्धिर्द्विः ४ वक्रिः ४ वामकूवपात्यवसेनयवाजयारुवक्रिः ४ मात्रववक्रः ४ नवक्रनेवयाः ४ नवामवक्रः ४ हस्वन्द
 नसंरुयाः ४ गोर्थादिवयरावनयाः ४ कूवनिथकिः ४ सिद्धिर्द्विः ४ वक्रिः ४ दकिनवक्रः ४ ह्यंदनसंरुयाः ४ वजसस्त्रादियः ४ ह्रस्वः
 यविनिथहिः ४ विमिः ४ वीनावाग्यवहावहालाकयसिद्धयवहावायिनसिद्धिः ४ भवंयागिलोकिः ४ कलाकारुवसंगी

७

15

तिसिद्धिः सा ध्यायितुं सिद्धिः अथि ॥ दृष्टिमुद्रा हानं ॥ श्री वज्रसूत्रं संयागय अथ नमो ह्यिमान् ॥ मानयु कया लक्ष्मिर्नर्घ
 पाचाय विधिवत् ॥ अथा कर्त्तव्यं लक्ष्मिमाहा ॥ १ ॥ भिवा सुकैरु लेख्य ॥ दिक्सीमा का मरुर्वन्ध ॥ सर्वत्र क्रानि वरुवा श्री वज्र
 सन्धसंयागे ॥ संपदो द्रुसंयुट ॥ वासगर्वाधवा श्रीमान् दक्षिणदिग्वाजि नये ॥ स्फुटं ॥ अर्धमधि दाययं ह्युर्व ॥ व ॥ स्व
 यं मूडयन् ॥ सर्ववृद्धमयं सिद्धिदमिति ॥ द्विज कया ल ॥ दं वायय अत्मानय मलक ॥ त ना ह्यमुनी नयं स का दीन ॥ १८
 का कालक गृह्यवटकादिना ना सिद्धि कर्त्तव्यं ॥ स न गुह्यया ॥ सा धन विधि ॥ १ ॥ द्युयाग उवाजि नयधवा रव नि ॥ १ ॥
 द्युयावलीवर्द्धमदिष्वयध्वनी रव नि ॥ १ ॥ द्युयास्त्रा न मा जी व ग गाल वयध्वनी रव नि ॥ १ ॥ द्युयास्त्रिष्वयध्वनी र

10

वनि ॥ भववकु र्वम ध्यगानि विरुन ले दी द्विर्नय ॥ १ ॥ कुरु ता कि जगद ॥ गार्ध्रया दा व भय नि ॥ क न रु ल मा तु
 लजा नि विरु क व वा कू र्क दा शु क म रु ला नि आ व भय नि ध्रुया न म सं स व वा च लं ला कं ॥ सि न रु व ग मा न मू लं व वि न
 दू स ल रु ॥ विधि क स्य रु लं विष भ ग या ग य नै व रि ॥ क व र ग ना भ र व नि ॥ दि न क व दू ग्धा स्य का स फ दि न वा न वी
 ग ॥ थे व र व टि कालि रि वि ना स्य र्भ द्वि ष द स्त्रा णां र व नि र्गा गी उ ॥ अ न था ॥ य स्या न य न मू य त र म ल य र व ना र ग स्व व
 भा र ग न्द म द न रु लं ग ग ल स य कं क य य नि वी षं ॥ वि वि रु नं इ ल ना य न स य ना अ ग द ॥ न द्वि व स जा न व ल्म क व वा रि स
 ग व ग र्म लं गु लि कां र क य य था का मं पि व द्वि षं व ज या धि वि व र क द्वि मू र्वा दि व भ न्ना थ ॥ अ पा क या द य रु ल थ

5

15

10

0

अरिर्विलिफयाशिराभोक्षिषं नाभयति ॥ रागघृणवदिकोवर्दिशुनजं हिमूखादिपिभिर्गंकां ले ४ यलिफ कववां पिउव
 नमपिनिर्विषंकांति ॥ नग्नदिविधिसमादिनवालकमूलस्य सफसकलानिकययनिरु नदिवसत्रादुर्थकंयाशिः
 वञ्चानिस्तुजगत् कवचजलाउज्ज्वलियुयकृणगसैयुर्क ॥ धूप ४ ययूकमाउधविश्वषकवलि लाकस्य ॥ अथवा
 धिक ४ दिवसली ४ ययूकयाहवस्याहनादि विवक्षयनिधूयानान्यथा ॥ उवगखवबंधुनिदिगंयादभिभायका
 ल्मादजिह्वायासहि नमूआटयति निखागरुवनदावविपुंसफाहा नरुलिनिबलाहवचंभावमूर्धजादिद्यैकंधः
 वास्योतिपिउवनमपियागववक्षंसफाहाल्लमूआटयति ॥ वकह यमावकसमरुज्ञातकजुल्लवकसेवशिः ४

१८

२३

उवगखवदिर्घकंधनादीनवृषंसर्मीजनदर्यहंसय ॥ अथवाहवानवखवाडुकवजे ४ यटाग्निनाद
 र्धेदेववभामिथिनरुषां वृषेयुर्ववत्य ॥ अंकाटकवीजनेलकीवे ४ सूत्ररिदृष्टिमरुनायययभनिदर्यहाः
 म ॥ अथवाशिरुवाकवयानिजुक्तिनयनामनूज ४ नगवरुल ॥ अंकाटकनेलकेकनययभनियेवृषंदियैयुक्
 तिसंनेलाहूनाहुजति ॥ भिजुलजलाकादईवनेलनयाटलामूले ४ चवरातलसंलयाजमगिनवानवा ४
 वसंयात ॥ अवनिकारुकवभजुलोकभचउससुवेर्युककवववरासंयलयात्क ॥ अकिदिमांभुभीतलंदहनं
 ॥ अक्रियवदनम ॥ अइदुरुवकंयविभजुलम ॥ अमिवरुवनम ॥ असंकिष्टदिह्याधीमानूर ॥ अनाक

0 cms. 5 10 15 20 25

15

10

5

वभंक्र (धन) यन्ना जेवी जूयन्ता च वदनी दखुत्त लनस हला विनय रूदु लन उगद रु ना दभ नय कि स्य र्भि
 सवा (का) ना भवनी लद म सा जूवन ना च कुरुं च दगु लनस हला विनय वन्दु ललना वभंक्र (धन) ॥ सिन दिने क
 वन वम लं मं जि द्वा रु वन च ट कं कृष्ट स्त्रा रुं कुरु व नि द (ग्ये) लि उवन म रि र्व भी के व र्ग ॥ नाम इ नी वू दनी की वा
 वि का ल म द न वि हा वि न नि स र्व दि न गु ठि क र्पे ना म्ब लन स ह स र्ग ना काल वा वभंक्र (धन) र व रु म दि ष स्य ना सा व ८१
 रु ४ क न क का रु न स द क वि णा मि रु स म ना रु ना व ल र्पे वि नि द र्ध नि र्वो चि र्ग क न क व स्य न च रू मा ल म द ह न
 स व य मि क न्या वभंक्र (धन) र सं स र्ग ना द्वा भ्रा ली क व द ह नं ॥ र व ग य मि च रुं स व य मि ण यं भि ला वा व ना ना

२५

लसंय र्गं गि ल कं ल ला ट व भी क वा मि क्र (धन) र सि न द र्वा ना इ र्वा स ह वा च न न गि ल कं म न उ रु व स कं वा मि स ह द र्ग
 र धन र ख ग य मि च रुं स व य मि ण यं जूवन न ग उ टि का वू द नी द ल र्ग न ना वि न व रू न व य मि ल ल ना वभंक्र (धन) र जू
 रि न व वि वा दि न म न व य र्पे वं ध का चि र्गं ह व सि व य र्पे म न व वा मा द र्धं गु ल्यं चि मि रु स्य ना ल म द भ दि ना दि न
 ना लि पृ ष्ठा ना इ न ग रु मि र वि रु का ना स व य मि ण यं ल रु स व द नि स ह न न्द की ट द गु ल ना वि न व रू व स कं वा मि
 क्र (धन) र उ ग्रा सि न श्चि न वू द वा व ल क ना र न्द य वे ४ गु ल्ये र्व भं य र्पे रि र्पे का म रु ल्या मि ल क क व र्ध न ॥ श्री स क ला व स व
 न्द न स भ ध वा र्पे ल्या जि र्ग मु ल्ये ४ म पि स रु र व ग व का के मि ल क न उ ग द भी कु व र्ग उ य नि र्वी ज सि न गि वि क

त्रिकावीजं सह वाचनयावनां च वनाद दत्त न विमये पृथगेति लकां ललाटवा ऊर्ध्वं यच्च न्नय नवा ॥ तिलकाद्यदयक
 वसस्तनं ॥ अथ वा गुलिं को कर्तुं काम ॥ कृष्ण मा जी लमल लावन कृष्ण की कृष्ण का कलावन कृष्ण वनाद वाम
 कर्तुं बुद्धि व धर्म दि नं सुग न धातु मयं यय व धिना गुठिका व विवन्द व क्रिमध्यगता ॥ यय धसा धिता स्व द व नाम कुज
 स्वासि धिनि मूग न विचल निमदि मां य क व काम न पि ॥ अथ वा कृष्ण यविका नयनं कृष्ण का का ल क च कृष्णी कृष्ण का का ८२
 कि नाक्रम वच ॥ सुग न धातु मयं यय ४ व जी की वया सं व द्धयि त्वा गु ठिकां व विवन्द व क्रिमध्यगता सख निदि न ना
 नूची य न ॥ अथ वा धातु मय गुठिका या म न न व दु ल्यं वामा दग्धं चि नि रत्न य विप क क थि व र्नु स र्ज व सा य य म्म य वि

मर्दिनासुगनधुमयंयस्ययशनेवयनिवह्नितात्रविचन्द्रवह्निमध्यगतागुदिकापृथ्वीसाधिनामुखगनोविह्वव
 निमदिमांयक्रवत्कामनूपीअथवाअन१गभांकदलुकामधूकयथमकूस्मसंयूकंनवरुलिनंकसलयगंगुहयनि
 गुदिकांछिलाहगरुंरुंअथवानीलाअकयसवाकूवंवामात्रकनसकलासकलाहयगर्गंगंउहयनिवकुस्त्रिगंउ
 गत्कृत्स्नंअथवागगस्थारुदमूलंदिग्वासनाहुनंभगियदथानवविचन्द्रवह्निमध्यगतागुदिकाअदधकत्रामुखानु
 रुगागावाचनदुवकनूकूस्मंवाकूदिकाक्रिवामानिद्विकउकानूयूकंगुदिकयंकलालनाखागअथवापिरनव
 मर्दिनमधुमत्कन्याप्रतामनसिलायूकंछिदुवनमयिनिगूहयनिलकद्विययाललाटनटयदलाअथवानीलाअः

15

10

कारुददिग्वायसत्री दां कृत्रेः कृतमिदं कथं रुयमिललाटनटमनूजं सचवावदस्य। पावावनस्य कृकोऽथ नाश्रुनः
 श्रिमिकावलनदं यत्कसिद्धाश्रुनं। निगूदयस्यमिदं विदालाश्रुनिर्वोयसं। अथवानवचनरुसकृथाश्रुनमः
 सावद्यानलांवितायथसिद्धस्यापिनिगूदयमिललाटनटनिलककव। एन। अथवागुदिकारुवर्गमिदालाव
 नास्यांसदिनेयवदइत्याद्यपुथाऊनगुदिकयं। यवसाधनं अत्रोन्नतानं॥ ॥ अथश्रुनंयुथागंवश्च॥ ॥ ८३
 लिजाश्रुवर्गलनसदितापिरुवनकथं गाहवावर्हिरुतदिवसत्राशायिरुवननवकनथायविसर्गेलयदीपयम
 दयंयुस्ययमइयविनामाकं कऊलंगुकीयातुततादिवसगीवृमिनादग्धवकवचननलावयित्वावहृगश्रुनस्य

८३

७

भवनिभायांमिलायदकपीथश्रुवृत्तुकावयन्। यागसीतकऊलनसदेकीकृत्यगृध्रपदवर्मस्यवधगृध्रपादस्त्रि
 नलिकांययुयोमानूषास्त्रिभलाकयातदंऊनं कथंसाधयदिद्यादरुगमस्यसाधयद्विधिनामकी। सिद्धाश्रुनयथागह
 ने॥ ॥ अथकर्मविधिंवक्ष्यथनसिध्दनिसाधकाभध्यानजायवतानिस्थंवसकर्मविध्वंस्मगाभविधिसंपूर्ण
 लावनदीनसत्त्वमसूखावहृगिदिसागवजावहृग। कृतासूनसूतकाग्रथिनपूमिलागतस्यसातिभयमर्दनात्
 निहितंस्त्रिगिदिकर्तुकाऊटिआखऊलासावनालसंयुतानिकाथंतामुलायुनियुक्तआसायलाहस्यवकूलवह
 तांस्त्र्यलकवायुनं। तावत्सर्दयन्। यावत्तवनीमंरुवहृ। तदनकवंवकीपयसाहाविकनसिंधर्ग। एनडवति॥

मुख्यतावशात् लोकसाक्षिं जन्ममूलायामावर्तयित्वा गन्धपाषाणमर्द्धमागुंदद्यात् ॥ कनकार्दिकाभवयदिगि ॥ २ ॥
 सस्यनं ॥ अथवसायनविधिं वक्तुं सर्वसाधुसमन्वये ॥ अथवन्धसमाधिरुयागमूडांतुसाधयत् ॥ चतुःसमं
 करुणीं वक्तुं च न कर्ष्यं न तथा ॥ मालिङ्गं मिश्रकाले वक्तुं काले नर्द्धिकां न तथा ॥ नमोऽपि ॥ ४ ॥
 षट्पुत्राविन्या ॥ वसुं कं ग्रीष्मकं चैव तथा पादुषमवत् ॥ भवतु कालं वदमनं हि मागमनं तथा ॥ वसुं विदिय
 वीक्षणीममध्वदिनवध ॥ पादुषतु जयवाक् कृपदाधसवत् ॥ अथमनं जर्द्ध वागवपुष्यवदिमागमनं ॥ ५ ॥
 कालनर्थां नो गच्छति न वक्तुं न न ॥ जर्द्ध वागं वपुष्यामं ह मनः मनुवादिन ॥ वसुं चतुःसमं चैव वपुर्वीक्षति

८४

द्विदन्तायावदुषतु जयवाक् कर्षुविकं च मनानवमं ॥ नलाञ्छं मध्वमदिवसगीष्मसर्वार्थसाधक ॥ सवदनलिनीस्त
 ह्युदाधसिद्धिकावक ॥ हिमागमः पुरुषकर्षुवश्च विमेषत ॥ ५ ॥ षयागवत् ॥ अथवा नित्यं समादिन ॥ ६ ॥
 नाम्ने विनिर्मुक्त ॥ सवत्नाय संभय ॥ सूतकागन्धकाश्चैव सप्तसमन्विता ॥ यत्नं संप्रवक्तुं लाया जयत्सर्वकर्म
 सूत्रं चतुर्दशमादाय नवध्वरुणरुत ॥ चतुर्दशविंशतिगणनकर्म कुर्यात् ॥ यत्स्थिर्गो ॥ सप्तसुतयसिद्धिनि ॥
 दन्तानखा ॥ कश्चा ॥ यत्नं कियुनवद्वनि ॥ सिद्धसक्तिकानि सवाभरुनकां च नमयान् ॥ अथ नैलवि
 धिं वक्तुं ॥ नलिनी जर्द्ध वलाञ्छं जौ नैव चैव चतुःसमं ॥ नमसमायुक्तं मसि नद्विडाकलं च वलाताय समन्वि

15

10

७

15

मंगुदनीसावमृदुलागकी वथसमकन ॥ अथविनागंकथयामि ॥ चतुर्द्विभिंमन्यलंगकनायंदिगुहंनथा ॥ ना
 वल्काथयथावदुनाववदुक्षय ॥ वलाययिप्रासाधयथथानुकमननेलावदुक्षयंकी वंगुइंवीनदवस्यव ॥
 नदक्षरुवल्कलंयुर्वीकेड्ये ॥ ससकी कृष्यपवत् ॥ मइनायदिअस्यंयंनदामधमंगुइवीवदिस्त्रिंतांमिवासा ॥
 खवंयाकंयाकजयपवंदिनक ॥ नस्यदियंयकंयलंया नननययंयाकं ॥ अथ ॥ अक्षरुवभनंनथा ॥ कृयी ॥
 शागीसुसमादिन ॥ ससुआदंरुवन्न ॥ अथययपक्षमनंनथा ॥ भनयंमिवासा ॥ अक्षंवाकंनभंसय ॥ दिव्यव
 यीरुवमिसुसवथुपिथारुवन्निरुं सर्वभानुविभावदक्षदीपदक्षामसायुतिक्षसर्वविघ्ननिकुनकक्षयउ ॥

८७

10

मंगुससुसुं कल्काकी वसलावयदस ॥ रागकषीगिना ॥ अमृदग्धमृदुलागंलंदिरुं नेलथद्विगुहकी वथसदे
 की कृष्यविधिवल्काथयथागी ॥ चरुंमरुलंनयथदीरु ॥ अथ ॥ नकुमवृद्यानिर्योसामना ॥ नकुम्यासिनवाक
 वीउत्यलसानी लाहपुवीषा ॥ गंधादिगुगुलसकु वसकर्पवंमृगजामद ॥ अरिर्दय ॥ यवलेलंदीपिआवागधव
 इनंमिवासा ॥ वलियलिनरुवं ॥ सर्ववागयनयनंरुवथवनसंभय ॥ ॥ अथ ॥ अक्षरुननेलविधिंव
 कनदवनेलंकि ॥ रुवकायसाकनका ॥ मावदुक्षय ॥ अक्षसिंदवा ॥ ससुयागु ॥ विधिनामकीयसाधय ॥ साय
 ॥ नदनुसासापियंकसवीवकूवविधाधविनागवकुमर्दनी निसावनिकनकसिखियववरु ॥ नानियव ॥ रुं ॥

७

0 cms.

5

10

15

20

25

१५
 १०
 ०
 ० cms. 5 10 15 20 25
 लामक क वा वमं रू वीरु मक वं व वा क व य नं दा व सर्व वी । म क्रिष्ण वा रा उ ना ग व ला । अ वा सर्व वा ग य न य न का वि ॥ व
 च न द न ग म दं क र्प वं ग व की न ख ध पा गु द स मा य क १ सर्व का म य सा ध क १ क धु ल त वि च र्चि भू रू डं वि षं सर्व ना
 भ य द वि अ र्द वा कं न सं भ य भ व ज नी रु व न जा मि सि न्द वा वं वि सा व द क व ध भ क न के य न नि र्पा सं क रू वी च उ १
 स म गं श व का लू ना स द ना भ य ति वि वि ध वा गं कृ ति क र्णं वि षा रू जा रु वं किं प न र्वा क वी स द ॥ उ द र्द न वि धि ॥ ८७
 ॥ अथ लि क षा यं व उ १ स म न स द व र्णु कृ त्वा भी त ल क लू र्पा स द पि व द र्प म कं व व नी । अ व म नू ग त वि वि
 ध आ म वा ग दी न्या त य नू प वि न क रु म क्री य लि ना दि ना भ य ति ना न्य था ॥ अथ वा च उ १ स मं ग क रू अ रू रू क

लारू रू ल या स द । य न म धू ना ला य क र्प म क रू रू क य नू । क ना दि य वृ पी रु व ति । पी ति भ क व र्णो षि जी व नि । अथ सा
 र्द रू व रू व किलु य न म धू व दि तं ॥ अथ रू क षा य सं ग क रू अ रू रू क व य नू । वि दा व य द मा उं व क म व द्या क रू
 यो म ध म न डू म भी त लं कृ त्वा पि व द्या नी आ ल म नू क य ल कि तं । वा ना म धं य लि ना य दं उ रू य लि त क वं त्या नू ॥ अथ वा रू
 रू ली स ग अ क्री वा द क न ख द य नू । शि वा न द व नू । रू ड स ना व क सा व या रू लु ल न स द पी ष य नू । व ट क अ वा व
 य नू । य न स य य म धू ना स द रू क य नू । क रू म नी य सर्व वा ग य दं य लि तं व वि । भ य त श ष था सा स्या स था । ग न या
 गी स रू वी रु व ति म धा वी न व म मा स्य दि य द १ अ ति ध व भ व र्णो ना ग व लं च व जी व ति व र्प म क रू यं ॥ अथ वा ना

15

10

5

गमल्यलाभं दुक्कल्लुकागगतामागवनदुदभमकंसमंतागंडवृत्तं गवांकी प्रसंलायवृत्तं कर्षकमिश्रि
 दिनदिनस्त्रिदंयागीरुक्कयद्विवक्रुदावर्षभानिथागीनां गन्धोलादिवासिनां नियमस्य विधीदं दुक्कधमि
 मूककं असाधधयुक्कस्य गन्धोलादिवासिनां अथान्यपयागस्य वृद्धसदसिनदु अमंगमनदुयागीनां सेवतिवि
 जनकंदलोलातां गस्य नदुकावयनं महुवंधं यानवलि यागित्वं वसमीदगं हन्यतमदिनाकां यिधयमगल
 छिकां दुधार्थी कथुनदुष्टं यविभुमं तपां नेवतल्लमा प्रयागं एवं हि विधित्वा वलिं नं मया यागी सुसमादिन
 ॥ अति सर्वज्ञानादयानामं अयुर्वदं ससमस्य पथमं यकवधं ॥ ० ॥ गगवन् अमुमिदुमिजय

८१

३१

सामादिकी दमं रभाकी पृष्टिवग्गशिवाववलियुजादिकं कथं गन्तवजयथ गत्वं सामकमीदिलकृदां ॥ आदोमकि
 ऊपन्नकं यथात्कर्म समावरुत ॥ अली दं वं वयसा ली दंसमपाद विभाखिनं एवं कृत्वा यनयागियथा द्विद्यां पुव
 गयनं वाक्कसी कृषिदीये ववेभासुडी गथेवच एवं विधिर्विधानं वेतना सामं समावरुत ॥ अतिकवर्तुलं कथुं
 हसुमाउं दुसुययनं अधसुदद्वनखनरुगलीं सिनचयननलययनरयार्थद्वयां कद्विहं मिवर्तुलां वदुवंगु
 लयालिं कुर्यात् ॥ ॥ योष्टिक कथुं विहसुयमानं विस्तीर्णं हसुमकं अर्धमर्त्युदुवसं अष्टादुलयालिकं
 रपीतपूष्यपकवं यीतगंधान् लयनं ॥ अरिवावकथुयसं विंगयं लुविहीर्तुं दमं लमरकाग र्द्वि

15

10

कृष्णानिवृत्ताः कवंचकाः ॥ १ ॥ नययश्च गन्धश्च नागश्च वधिर्युक्ताः ॥ २ ॥ नमधुसंयुक्ताश्च वज्रादकमिडीनाश्च
 थिमार्तिमूखाः कृत्वा वक्रवृषं समालरुक्ताः ॥ ३ ॥ यस्य नाम्नाः शृङ्गास्तान् सफादा दधमानयन् ॥ ४ ॥ बायू वृषं वापियाव क्रीवं नमं
 भयशा ॥ ५ ॥ मा वधं कर्तुं कामाथसमिधः ॥ ६ ॥ कुर्यादधोऽङ्गुलाः ॥ ७ ॥ कालवृक्षस्य कृष्णस्य कश्चकद्विकस्य च ॥ ८ ॥ कस्तुरित्
 माषवाडिकारुणाककलकाः ॥ ९ ॥ सनवास्त्रिवेनावनगर्दकलिलुकमकाश्चनिलधुनखकम्भः ॥ १० ॥ कीङ्कनेलासृग्मिर्ज
 सर्वदक्षिणार्तिमुखः ॥ ११ ॥ स्त्रियाः काधवयलुविनकः ॥ १२ ॥ विश्वाम्नेः शृङ्गादनामिदिनमक्षरुवसतं ॥ १३ ॥ यस्य नाम्नाः प्रिम
 श्वं वसियननाजसंभयः ॥ १४ ॥ नावदकान्कस्तिलानुकृत्वा कुरुं चिकानकं ॥ १५ ॥ तस्य पूर्वोक्तैर्दध्यश्च चंदावाग्नेः शृङ्गास्तान्

३३

७

ननेव यागयकनमकियमगहं स्फुटं ॥ १६ ॥ अथवाटयिषु कामासोसमिधः ॥ १७ ॥ कुर्याद्यथाविधिः ॥ १८ ॥ काश्चनस्य दुवृक्षस्य
 वायसवासयकस्य च ॥ १९ ॥ सर्वपममाषलुपथधूलिसुमिसितं ॥ २० ॥ वधिवर्गीङ्कनेलनालाशकाधचिरुकः ॥ २१ ॥ यस्य नाम्नाः
 शृङ्गास्तान् सफादा दधमानयन् ॥ २२ ॥ बायू वृषं वापियाव क्रीवं नमं भयशा ॥ २३ ॥ मा वधं कर्तुं कामाथसमिधः ॥ २४ ॥ कुर्यादधोऽङ्गुलाः ॥ २५ ॥ कालवृक्षस्य कृष्णस्य कश्चकद्विकस्य च ॥ २६ ॥ कस्तुरित्
 माषवाडिकारुणाककलकाः ॥ २७ ॥ सनवास्त्रिवेनावनगर्दकलिलुकमकाश्चनिलधुनखकम्भः ॥ २८ ॥ कीङ्कनेलासृग्मिर्ज
 सर्वदक्षिणार्तिमुखः ॥ २९ ॥ स्त्रियाः काधवयलुविनकः ॥ ३० ॥ विश्वाम्नेः शृङ्गादनामिदिनमक्षरुवसतं ॥ ३१ ॥ यस्य नाम्नाः प्रिम
 श्वं वसियननाजसंभयः ॥ ३२ ॥ नावदकान्कस्तिलानुकृत्वा कुरुं चिकानकं ॥ ३३ ॥ तस्य पूर्वोक्तैर्दध्यश्च चंदावाग्नेः शृङ्गास्तान्

यथा ॥ याममृदुका मा सोयका गिनिम्व का र्क के भस्वान कूर्क टमां सानि ड हलि अ न्या का त्वरु गिरु थार यद्रा म नाः
 मा इरुया इरि द्य न सो सं स य ४ म हा सम यं सू व या ला य म न म क्षरु वं चि स श्वं इरुया ग म म्मा सा न म धु ला धि पा न व नि
 १३ म्ब के ना ह ति स गं य नि दि नं इरुया ग मा स उ या इ र्दं दा वि डां ना भ य नि ॥ ग म्मां स व धि व धा ला य स र स उं इरुया ग
 या व डी वं व ॥ ग र व नि ॥ त द व मां स सू व या ला य वा म र स न इरुया ग व ड्वा व ॥ ग र व नि किं य न १ इरुया मा नू या ४ ना च २०
 नि र्ही व नं द न का र्कं दु ख द दा र्क नं न थार म य इ क मं हो न व स मा न य स गं यं ग र स क स मं उ का ही र्मु म न य क
 म सं य गं ॥ ग म्मां स द्वा हा म ना क र्क रं य वं म गं ॥ का र्क के का ४ क ट रं ल ना ला य वि ति व नि य ॥ य स्य ना म्मा इरुया र स्या

द्वा ट न मा व रं ॥ अ धि म र्कि कां कृ ष्णा उं मू र्क मा ष स द्वा द्वा दि वा डि कां ग र स मा ल य क्ते अ र्क त्वा म र वं व ध य स्य सो ॥ स्व मं
 सं व डा द क न य स्य ना म्मा च इरुया ग र सा व धं व ध मां या नि स फा हा म्मा सं ग य ४ वे वा व न ना म्मां स इरुया स फ वा स वं
 १६ व ना या ग वि र न न य नि वं म मा न य ॥ र स मां स गं क र स र्वा व स मा न य न य वं ॥ सू व या म स्य मां स न दा न यं अ
 र्क र वं स वं ॥ र्क र्क मा म वा दाय व ॥ ग र वं नि सा ध क ॥ क व वं का क मां स व य स्य ना म्मा इरुया स्य सो ॥ दि न क य व ड स स्या पि
 प ला य नि किं य न १ इरुया न का ४ का क स्य न मां स न ध र्क वा र्क इरुया स्य सो ॥ उ द्वा न य स्य व धं व ना मा द्वा व ध र्क वं ॥ मः
 स मां स प र्क मां स य स्य ना म्मा इरुया यं १ उ त्म हा र व न न न उ पा गि हा मा च स र्क न ४ न न १ पू व य व र्क व क र्क यानि

[illegible]

उपहृदयं कथयामि नमस्त्वयि नित्यं वज्रजालिनी संयुक्तं द्विगुणितं । उष्मा शंखं वरुणीयं गच्छ यद्दृश्यं द्वितीयं नासने ।
यश्च मस्त्वयि नित्यं । अनसुनां द्वितीयं तु यं वमनासने । रुणीयं तु रुणीयं मकाननं किं भुजं वमनासने । मस्त्वयि रुणीयं
यं वमस्य यथं रुणीयं स्वयं किं । अस्त्वयि द्वितीयं द्वादशनासने । द्वाविंशतिं गच्छ । गोविन्दस्य यथा किं । यश्च म
स्त्वयि रुणीयं गच्छ वरुणीयं वरुणीयं । अनसुनां रुणीयं गच्छ यस्मिन् वमनासने । रुणीयं यथं वीजं यं वमस्य वपय
मं । वीजं वमस्य किं । वज्रजालं शंखं जनी । सर्वनाकारं साधनी । मन्मथायनी प्राक्का वज्रसमयं वादनीत्यादयः । उव
जवे वाचनीयं साहा । द्वितीयं वरुणीयं वरुणीयं । अपहृदयं साहा । उष्मा शंखं यथं वरुणीयं वरुणीयं । द्विगु

यस्य यथमं सफमस्य द्वितीयो बोधीया जितं तथा । अष्टमस्य यथमं वजायवमाहितं । विंशत्युक्तं च यं वमनकुम्भाः
 सनं । गोत्री सारुतं मंगं । द्वितीयस्य यथमं सफ विंशतिमंगं च बोधी तस्येव कल्पयत् । द्वितीयचतुर्थं वज्र दक्षिणिः
 वासनं । द्वितीयस्य यथमं द्विगु शितं । द्वितीयस्य यथमं वज्र दक्षिणीया जितं । एकादशमं चतुर्थं च द्वितीयस्य वरुदितं
 यं वमस्य यथमं गोत्री तस्येव यथा जयत् । द्वितीयस्य चतुर्थं वजा द्दयं यं वं । दशमं चतुर्थं च तथा च द्विंशतिमं च
 द्विगु शितं । द्वितीयस्य चतुर्थं यं वमस्य वरुषितं । चतुर्थस्य यथमं गोत्री सारुतं यत् । यं वमस्य यथमं । गोविन
 स्येव यथा जयत् । वजा वज्रयथा । गणूनि संकर्मय साधनी । महावज्रयथा । नानां वलक बोधस्य गच्छात् । उक्ता लक्षणं रुद्र

८२

सास्त्रादा । द्वितीयस्य यथमं चतुर्थस्य यथमं बोधी सारुतं मंगं । सफमस्य यथमं चतुर्थं उय वि गोत्रीया जितं द्वितीयस्य यथमं
 यथमं एकादशमं मंगं च बोधी निवसि । अहितं । यं वमस्य यं वमं चतुर्थस्य यथमं चतुर्थस्य यथमं
 यथमं बोधी यवमाहितं । द्वितीया च यथमं चतुर्थं मादिश्वरी निवसि । अहितं । द्वितीया च यथमं एकादशमं चतुर्थं
 दसमायत् । धर्मपूष्टिवलं निरुं सदा का भवति तथा । कदापि जायमानं सदा च वजायथा । नैव वज्र धर्मो सादा
 । दशमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत्
 यं वमं । दशमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत् । यथमं चतुर्थं च तथा जयत्

वीजं नगागृहं वे वाचनस्वादा न शाजिगं। दावया लघुसर्वगं नयं सकचतुर्थवीजं व। भाषस्ववस्व। थेवच। वजानामादि
 मंदलास्वादा नं मनुमन्वा नयत्। पूषा धूया च गंधा यदीया दवीक। थेवच। वेभावे ववी धाचमूक। मुम्वडा तथा। एवं
 विधविधाने वे कल्यय न समुलं॥ १ ॥ अथ तात्रिकादयं वस्व। सर्वकर्मविकृतिं। चतुर्मेखं रवइत्यलं विदिशं
 यावस्तिगं। नंका वरुयलां चिगं। विधिना न दवट कं लिखत्संजीवर्हलाका वंसमनत १। तयथा। डंयस ननात्र जूमनम् २४
 रिजूमन वाचनसर्वीथसा धनिसर्वसत्त्व वगं कविभिं वायू वषं वा वा जानं वा वभी कू वं स्वादा॥ नस्य मस्वः
 वच्चकं जू वमन वा चिगं। तस्य वट कर्पचमस्य पथमं। जू च्चन्द्र विगं। नतामा वा का वं स व वृथदिनि।

स्वादानं पृथ्वी ४ का वं विदर्हिगं। मन्जीवकं दयन विधिवत्सफा हनन वचुं वगमानयत्॥ २ ॥ पुन वपि
 दभाक वचकं यमन रध दभाक वमनु विद ४। पृथ्वी साध्य विदर्हिगं। वेगमानय गिया वजी वं न संभय १। पृथ्वी
 चक्रमालिख्य दवैकं मनुं विदर्हिगं। मन्जीव ४ वगं कू वजी ४ स्वादा का वनुया ऊ यत्॥ गभा व नया वक क व क च
 ननस्व वक ४ स रू रू सं लिख्य गं मां धा वयत्। सदवा दी न्वगमानय गि किं पून ४ कू वमानू न॥ ३ ॥ वच
 समुल मालिख्य मन्जीव क वजं चतुर्मेखं रवट कसा धनाम विदर्हिगं। सवा वचय विधिवत्सं लिख्य खटि
 कारू मयदिनि॥ ४ ॥ अथ वं वचक यमा का वंसमनत १। नय स दक व विन्या संग ४ का व विदर्हिगं वि

15

10

5

धिनायप्रवचकग ४ कावाविरुधिर्गंम १५ ग ४ स्वासाग ४ साधविदर्हिर्गं कृत्वा दविडा वसनसिलापदक ०० दं
 लिखित्वा अ १ धमूरुययगुसुक्तिगारवतिनान्यथा ॥ ५ ॥ तदवचकं किनुहं २ रुकावविदर्हिर्गं विषयधिः
 वजाडिकासदकपाललिखात्मानुषास्तिनासमानसमावयदिनि ॥ ६ ॥ सजवकिनुडं कावविदर्हिर्गं कृत्वा कं
 कूमनरुर्जसिलिखायीतपूषाधर्षयन् ॥ अथवायं वायवा ४ सदसफासात्पुष्टिरुवति ॥ ७ ॥ तदवाकं स्वासा ॥ ८ ॥
 कावविदर्हिर्गं कृत्वा वकारवती ॥ ८ ॥ सजवदभकवमकुविद ४ कावविदर्हिर्गं कृत्वा सिगवचनननामा
 रिलिखात्वा वसितसगन्धयथे वरुच्यविरुवत ४ पूजां कृत्वा णिसंधं अष्टमं कृत्वा विधिनाय ४ सफासा

निरुवति ॥ ९ ॥ आ ४ अमकस्यलका कवंम १५ लिखित्वा तस्येव उच्चैयार्धया ४ अथसिहूं विदिमिवैवाक्कारु
 लखावृत्तं १ ॥ गवावनया उर्जसं लिखित्वा तसधम १५ रुययगुसफादनावधं वमानयदिनि ॥ १० ॥ चतुर्दल
 की ४ कावान्विर्गंम १५ की ४ दवदरु ४ वाक्कारुकावचतुष्टयं लिखित्वा वकवचननाशिलिखा अयकसवावकूयि
 तं समयन्ता उसंगय ॥ ११ ॥ कंकम १५ गवावनया अथवा वकवसनसिलिखित्वा रुर्जवकवकं धवयन् ॥ अ
 यवचकं रुमधम १५ पक्रिय ॥ ०० न्द १५ रुवतिपृथरुं ३ ॥ उं सर्वमादनिता वतुता वसर्वदूष्टानमाहय २ रु
 गवतिसर्वदूष्टानां व २ रुं ३ रु ३ स्वासा ॥ वस्तुनगुं थिं कृत्वा पथग ६ कि यो वेनेमूषा १ ॥ उत्पलं सफासि मकि

0 cms.

5

10

15

20

25

नंदुत्वायस्यदयानिसवल्भारुवमिउत्तलार्किनस्वकस्य॥ १२ ॥ अष्टदंलैरुवत्तुयमंजी४थीकावाचिगंयवंपूषव
 की१दवहैदेथी॥ गभावायनयाकुर्जिलिखधायनसोलागंरुवमिसंदा॥ १३ ॥ यममष्टदलंकृत्वामादकलम
 कुंसमृद्धवत्वायनाजिलखावतंयलिमलुलंजिभेकाष्टवजयविवाविनंननविधिनाकंकमनलिखत्वावादी
 वज्ञाधायनयनवक्रारुवमिसर्वदागस्य॥ १४ ॥ नदवचर्ककिनुवजवदितंकर्तुकार्यायद्याकृतावा॥ नयथा॥ ॐ
 हूं हूं वृक्ष२खाद२चक्षि२धन२मथ२बंध२अमृकं२अमृकनमदविद्वयहूं२रु२स्वाहा॥ विद्वयदादयगी
 वस्यायं॥ अग्निवावडयसंलिखमदिवाश्रवमधुनल्लक्ष्मिद्विद्वयति॥ हवस्यइर्गयासहकिंपून१इडमान

वा४॥ १५ ॥ अग्निमलुलद्वयमालिखअर्धार्धकाधेषूस्वविधिना॥ उंग४हूं हूं ग४हूं नदूर्ध्वहूं हूं रु२यनवयिभ्र
 क्षलागहूं ग४हूं हूं ग४हूं नदूर्ध्वहूं हूं रु२यनवयिभ्र
 दके४ममनकर्ण८उपदकर्ण८वासंलिखमहावलमकुंक्षवसंवक्षकलिनाग्न्यपलिस्वययित्वाविपूंस्फुरयति॥
 १५ ॥ उंकावमादुमलुलसुअष्टसुननिबंधनात्तमल्लपलुलसुयश्रकावाष्टकरुयितं॥ कर्तुकार्क४सुसाध
 रुकाववकुर्विवाकिं॥ सवावसंपूठलूंमृद्विवजाधवाकाकवादनापदमकुल्लज्ज्यारावितवदितधवजसू
 क्षसमनादननसुसुयनिसर्वीनवानूदवांलिकायजान्॥ १७ ॥ मादुमलुलंजिभेकाष्टवजाकिं॥ तस्यमधु

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

शवनयाकुर्जसंलिखाध्वयद्विधिनायागीवक्रावगतिर्वदातस्य॥ १० ॥ बहुविंमदलंपयंविश्वंरुसमनन॥
 उंकींकींभूतनकवलिलिखितविधिवल्यनक्रुंभदासवत्कथगिसंस्थंभन॥ १८ ॥ मूवजाकृतिरुवचुंवजय
 भनलोचिं॥ वासुकिंलखावृत्तंकायवजादिसमासग॥ विष्णुं सर्वभूतं कर्मवजयरावनात्॥ कथगिसर्वका
 योनिविधिदृष्टनमकुविन॥ तदिदंमकुमाह॥ उंरुंरुंनिसुंरुंरुं२रुं२॥ उंरुंरुं२रुं२॥ उंरुंरुं२रुं२॥ १००
 उंभनयहारगवन्विद्यावाजुं२रुं२॥ २२ ॥ यवर्माष्टमंवीरुंमज्जालिद्वीदभाहिलुथाभूकवानविनंकुत्वा
 षठ॥ अद्वकायग॥ षट्ठीवसमायागंवेकाकावसरुवं॥ यथमंरुदयंवेवदिनीयंनुशिब॥ १॥ रुगियंशिखा

यांदयाचुर्थकवचंरुवत्॥ यंयमंरुवत्तुंषष्टमंल्लुमयत्॥ वजवावाहिसमायंनंचरुवाहुविवाजिगं
 पीरुयहालंकुंदिद्यंयचोकेकमंरुं३॥ अस्मिंमालावल्लोचरुवद्वंगंरुसंस्थिं॥ अस्मानंदवृकंरुत्वाह
 वृकलंस्मवृत्त॥ सानसलंदिदिध्वालायाकावंदिसंन्यसत्॥ काधंकायकलंध्वाविक्कटात्कटुषहं॥ वि
 द्मगश्मनत्सार्यंसंकील्यनईयनीदिसांसर्वीदवासवमानूषान्॥ अवंसंनक्षत्रकवेअइत्ययस्मिदं॥ अत्रपि॥ न॥
 तामुलंसमालिखत्॥ चरुवसुंचरुद्वीवंगस्यमध्वयप्रतिष्ठापययुं॥ कंभवाचिगं॥ विक्कवद्विगुं॥ मंजीलि
 खद्वाकिनीयकं॥ कर्त्तुंकायांन्यसद्दीवंअपवदाकिनिकथा॥ विष्णुकवजाकिं॥ वावंपीनवर्त्तुसमनन॥ १॥ वज्रग

र्हेसहस्रपादात्रविधिक्रमेऽमरुतिपूजां कृत्वा सुरनरकुलं ध्यायेत्तु नी भूकालमृगशमुसंयादीनि वा वयं न द
 वीममवाक्यं न संभयः ॥ ३० ॥ अथ वा नाभ्युपयुज्य लिखतु मवमकुंसाध्य विदर्शितं कृत्वा द्वात्रिंशदं उदकं लोप्य
 त्रिकात्रं यजयदिति । न तः सर्वं भवतु उल्लसितांति । न तः अस्मिन् दद वि विताः सन्ति कृत्वा समादिनामनी ॥
 ३१ ॥ अथाप्यवमयकुं रवति यत्रुवमुं यत्रुर्द्धा वं वदी वजा किं न तथा । द्वात्रिंशदं मूकं वत्तं दधुपं संवत्तः १०१
 इति तथा । का । धासित का नाट का लाला कुं भं तथा । न तः अस्मिन् वत्तं मं द्विपं च द्वा द कं न्य सत् । अत्र वं विदुः स द व द कः
 ०० दं मव वं लिखतु ॥ न यथा ॥ उं य स न ता व भूम त मूखि भूम त ला व न सर्वा र्थ सा ध नि स्वा दा वा ॥ ०० दं मव

मालिखतु ॥ अथ सर्वं दृष्टं ति वा ॥ ०० मं सज मा ह ॥ उं सर्वं भाद नि ता व तु ता व सर्वं भाद नि मा ह य २ र ग व ति साः
 र्वं दृष्टं मां व न्ध २ हं २ रुट् स्वा दा ॥ न त्थ म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥
 न त्थ म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥
 दया नाम । अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥ अस्मिन् वत्तं च न्दु म ॥
 ति । सर्क वा क वा ट क म रि म न्यु उ र्ध्व म ध र्मा दि कृ वि दि कृ कि य र् । सर्व द वा स त्र य कृ वा क स ग न्ध र्व कि न व म हा व
 मा ॥ अथ व व द्वा र्वं ति । सर्व द कि नि या ग म य ह व ति । सर्व ना ग वि ष म य ह व ति । सर्क वा ट कं य वि ज य न दी षू य कि

पण्यनिकूलं वा दयति न ते व सर्वं शटक न डुर्मि संसृयति त्वं निवी क्रमा १४ सदसुं उय नु मदा वृष्टि नि वात्रय
नि यत्र से न्या शि मुख ४ सदसुं उय नु मदा वृष्टि नि वात्रय
वज्र मवी वं रु वति । अ न का शै र्य क वा ति । विल स त्से न वा ऊ न आ दि ता । ३२ ॥ ०० ति सर्व क र्म य स व य का
दया ना म स फ म स्य रु ति य व क व रं । ० ॥ द म य रु य ध न्या र्य य ति स्त्र ल क र्म रं । उ य ध्वा नं न जा ना मि दा १०२
म वि धिं त थै व च ॥ रु ग व न्व उ सा वा त्मा सर्व ध र्म क सं ग्र हं । क थ य स्व य भा द न म दा स व न डू ल रु ४ ॥ रु ग वा ना द
रु यू द वि य व का मि ध्वा न क र्म य ध वि धि ४ ध्वा न मा ज य थो ल न सर्व क र्म ति सा ध य न् । रु ग वा ना द मि सं र भा धा ।

नं कथयिषुमाह वज्रसूत्रात् तादाय शस्यर्वाद्यसंस्मृतं १४१ लाक्कविजयारूत्वासर्वविद्यानृद्धदयनयदय
संयथापाकंदवनीनामथवेचरामकर्मयथादिष्टं कुरु लक्ष्मणं वचमूढायागंतं कृत्वा यथात्मलुलेमालि
खत्वा कादविजयारूत्वाणिमूर्खं षडुजं तावयित्वा काधमयानि आर्यं नैव दमसूदिह सर्वतथागतास्य विवा
नायूष्मादिबध्निष्वनयदेष्टीवयिगयं आचार्यस्य गच्छि काधं वेका विधाय गच्छि दयित्वा तन्मूर्खं संहृत्या न
लीयस्व रुच्यं कुरु लक्ष्मणं कावचवटका कर्तुं कुरु गंतवज्रध्वजं च विद्यायागिनं रगावता सर्वतथागते क
लालीकुर्यात् कुरु बाधिवानपूवकं कमलावर्तं कुरु दक्षिणकवचं वज्रमूला लयद्यामनवज्रयश्च निनीदय

15
 10
 ४७
 लस्य वां च व दान ले च ल हं का व क वि न व ज सा र्द का व का ध हं क नि मान हं का वा वा व पूर्व क मे नि मान क द य नू स
 र्द इ द्वा य वा स व मु क कान् ॥ ७७ द व व नं य वा द वं का ध वि य द ता व ने ४ ॥ अ य स व लु रु यं ना य क वि द वा स व य क
 वा क स थ ग पि ॥ अ य स वा व रु न दा कि न्या ला व क म ह ल कान् व व यो व स द ग व उ किं प वू ष म लु सि द्वा ॥ अ य थि
 वी य द ॥ अ म का वा र्थ ॥ अ म क सि य स सं वा धि य वि पू व लार्थ ॥ सर्व स लान् न र व ह न ला रु द ना ॥ अ म क म लु ल वा १०३
 जान मा लि खि त य ७७ ति ॥ न द व व ज ध व भ्रा ह्मं ७७ ला गी य म वा य क म ग था ना य का म ति ॥ ग स्य व ज या नि ७७ क लि
 न हं का व क यि त व द न ४ ॥ अ दि फ य दि फ न म हा व रु ह न व ज स म्भु नां स त धा वि कि त्र य वि नि षि द्वा वि न म हा व

७
 ० cms. 5 10 15 20 25
 उ क व द वि न्या स न स्य व ज का ध वि ग हा नि अ र्थ स स लु य व रु य द स म ल रु म्भां स म क न ४ य वि क र्म स र्द इ द्वा नू क द
 य न ॥ ७७ वं रु मि य वि ग ह ४ स्या क् ॥ ग ग ४ य थि वी द व ना मा वा क म लु ७७ धि यो ना धि वा स ना दि कं क र्पा दि ति ॥ न म लु ला
 गु नू मि ति न क्ता पा र्थ व दि ला य थि वी द व नां क न क व र्थ क ल स ह स्या मा क थ व धा र स ग ध ग धा दि ति ४ य ७७ य स व ४
 संपू ष धि वा स्य स नि धा नं क र्पा ७७ ग दा वा ह न म लु मा ह ॥ ७७ उ क दि म हा द वि य थि वी ला क मा न व स र्द व ल स य र्थ दि
 या लं का व रु धि न हा व नू य व नि र्धा ष व ज स ल य य जि न ग दी ला ७७ दं म र्थ हा म क र्म स सा ध य नू ॥ दी दी दी दी हं ला
 हा ॥ अ न न म लु ७७ धि वा स ना दि कं क ला रु मि स न्मा र्ज नं क र्थ यं मि ति ॥ वि न्म रु था दि प्रा क य दि ति ॥ ल प य रु ना म

क्रि० कर्म कुर्याद् कुर्यात् कर्त्तव्यं मातृसहस्रं न जा० शुक्र क० व० यसाधक० व० उ० व० उ० सं० उ० अ० उ० उ० उ० का० उ० उ० उ० वि०
 क्रु० यु० लि० वे० का० ए० वा० उ० नि० म० उ० व० उ० उ० अ० उ० उ० व० उ० व० ल० प० म० नि० व० सि० गं० म० अ० क० र्त्त० व० क० ल० उ० स० स० म० क० र्त्त० वि०
 धा० वि० ग० स० धा० या० ग० मा० सी० नं० जा० ता० व० ल० न० व० द० ल० क० स० स० य० ग० प० वि० र्त्त० या० ति० य० क० र्त्त० म० थ० ह० ति० ४१ द० कि० ए० लि० ग० दा० मा० य०
 थि० कं० वा० म० न० स० लि० ल० हा० उ० नं० पू० व० ता० र्त्त० क० उ० नं० सार्व० क० र्त्त० क० उ० फ० ल० उ० पां० क० धा० व० म० नं० क० र्त्त० क० धा० व० क० र्त्त० क० ल० स० म०
 न० ग० ४२ वि० वा० वि० न० ४३ दी० फ० म० वि० वि० दि० त्वा० त्वा० वा० द० य० द० ग्नि० द० व० तां० म० क० र्त्त० न० न० वि० धि० व० त् द० कि० धा० क० र्त्त० क० र्त्त० य० वा० ल०
 ना० य० दि० म० द० र्त्त० त० द० व० र्त्त० वि० वि० ज० स० र्त्त० म० ग० ह० ल० क० र्त्त० म० द० स० म० न० नि० दि० ना० क० र्त्त० उ० अ० ग० य० दि० य० दी० या० वि० धि०

१०५

म० द० प्रि० य० द० य० क० य० वा० द० ना० य० स्वा० ला० पा० क० य० धा० म० व० उ० र० य० जा० य० र्त्त० य० स० व० न० ४४ आ० र्त्त० या० दि० मि० वा० या० तं० ल० म्वा० द० वं० दि० नः
 ग० उ० उ० म० र्त्त० वं० उ० र्त्त० कं० व० क० र्त्त० व० र्त्त० उ० दा० क० या० लि० नं० म० ग्नि० म० ल० स० लि० तं० क० र्त्त० व० लि० वि० र्त्त० धि० नं० य० थ० म० उ० क० र्त्त० व० व० दं० दि० नी० य०
 वा० क० मा० लि० का० वा० म० क० म० ल० यं० व० दि० नी० य० द० ल० उ० न० व० व० व० क० र्त्त० व० र्त्त० वि० र्त्त० धि० त० म० धि० रि० ४५ वि० वा० वि० न० ४६ व्ही० द० मं० व० यं० धा० त्वा०
 उ० क० र्त्त० म० अ० नि० व० म० य० त् द० या० वा० द० ग्नि० व० स० य० वे० दि० वा० वा० न्ना० र्त्त० धा० मि० का० ४७ ता० आ० व० म० नं० द० त्वा० दा० त्वा० का० व० धा० य० नि० धा० म० यः
 क० र्त्त० अ० न० न० क० म० या० र्त्त० न० द० व० क० क० र्त्त० य० य० द० ध० ४८ सं० क० र्त्त० य० क० मा० य० यि० त्वा० वि० हा० य० सि० धि० का० मि० कां० ४९ उ० धा० उ० व० उ० क० ल० स० य० म्नां० क०
 म० वि० ला० सि० न० ४९ क० मि० र्त्त० वि० मि० र्त्त० वि० मि० र्त्त० उ० र्त्त० मा० धा० म० म० धा० मा० ४९ द० कि० धा० व० र्त्त० व० वि० धा० य० त० ४९ का० लां० स० त० व० र्त्त० व० उ० म० कां०

१०६

40

विष्णुवयम् ॥ एवमगम ॥ अथ सूर्यसंज्ञकमलं ॥ नांकावसाननियन्तावादीमहर्षिका ॥ भृगाववससंज्ञकमलं ॥
 स्यावलि लायना ॥ षोडशज्जाहसितास्यमवकाशानवयोवनाविचित्रवस्तुसंवीनां सावनयवकश्चिकांस्त्रजकयवकं ॥
 लोकटिसूत्राणां नाहवदहृषिताडूयलमिदं सिरुषिताजवाकसमसंनिता ॥ पुण्यालीटस्य नह्निताहिदसपेगिसं
 ज्ञाकृताङ्गलियुगपयवकयुगसमलस्यवद्वीयासमाकृता सर्वसत्वजननीयीयां एवयाशागी ॥ लघुवृद्धत्वमात्र ॥ १०१
 यागस्यथमखर्गं द्वितीयउत्थलं रूनीयसत्रवृत्तं ॥ र्थवजं यंचमजं कसंघर्षदयुः ॥ सफभकर्हि अष्टम ॥ इयमडा ॥ वा
 मकपालं द्वितीयतर्जही रूनीयधनूश्च ॥ र्थवद्वीगः ॥ यंचमया मघर्षजिभूलंसफमवल अष्टमकलसं ॥ दक्षिणस्य

थमंती लं द्वितीयं पीनं समूहलं ॥ वा मयुथमंसितं द्वितीयं हविर्तं वेदर्यसन्निहं ॥ उच्चास्यं विकवादिनंधुमवर्धुमदायावं
 विकलकटलीषलं ॥ एवमगम ॥ अथ सूर्यसंज्ञकमलं ॥ नांकावसाननियन्तावादीमहर्षिका ॥ भृगाववससंज्ञकमलं ॥
 र्थवद्विर्तं न ॥ अहवकीनिनाम्नावेकवदमलमं ॥ ॥ एवमगम ॥ अथ सूर्यसंज्ञकमलं ॥ नांकावसाननियन्तावादीमहर्षिका ॥ भृगाववससंज्ञकमलं ॥
 पवीन्दम ॥ अथी ॥ कावयविद्यतमं ॥ इयमोत्थानं विचित्रं गच्छति ॥ आकावदसूर्यमलं ॥ अथी ॥ कावयविद्यतमं ॥ इयमोत्थानं विचित्रं गच्छति ॥
 स्मीचिनि ॥ अथी ॥ विचित्रं गच्छति ॥ अथी ॥ कावयविद्यतमं ॥ इयमोत्थानं विचित्रं गच्छति ॥ अथी ॥ कावयविद्यतमं ॥ इयमोत्थानं विचित्रं गच्छति ॥
 हिषवृयं ॥ षोडशज्जाहसितास्यमवकाशानवयोवनाविचित्रवस्तुसंवीनां सावनयवकश्चिकांस्त्रजकयवकं ॥ लोकटिसूत्राणां नाहवदहृषिताडूयलमिदं सिरुषिताजवाकसमसंनिता ॥ पुण्यालीटस्य नह्निताहिदसपेगिसं

धरुं वरुद वं मदा कायं उर्ध्वं क म द ल रु सु वा का वं क पा ल माला रु व ध रु धि तं म हा य ल या काल मि व ग र्हे नै न वृ धि
 व व भ स ग मां स म द म क्का रु क र्प न स व क्ष णा य नु द्वा दि वि ला क्ख द य नं वि वि न य न् अ द हा सं ल झ डि कं रु यः
 म्मा धि रु यं क वं प थ मं म हि र व म्खं द कि ध म् रु जी सि म्ख नि नी ल व क क पी ता नि । क्ख वि व ता स्य वा भ सि न धा
 म् रु क्ख नि व र न था मे र्ध स व र्क ग व ड् धि वा स्यं ग द य वि म रु व यं स पी त मि ष क्ख र्ध । वा ला रु व धं वी व अ व व क्
 मा वं रु य वं द टी क्ख स स मा दि ता म की रु व य न् न ता द कि ध य थ म रु क्क र्क का । धि ती य रि ति पा लं रु ती य
 म्मा लं व रु र्थ क्क वि का । यं व म क ध य ष क्क भ वं । स फ म क रु क्क न १ अ रु म स व १ न व भ अं क मां द न म ग ।

१०८

दा न का द न म र व ला ग्ग द हा व कं रु या द स व र्जं । व रु र्ध न म म रु क्क वं । य थ द हा र व र्जं । षा द । म द म वं । वा म पु थ म
 रु क्क क पा लं । धि ती य मि व १ रु ती य रु ल कं । व रु र्थ पा द १ यं व म या नं । ष ष ध न १ स फ म अ रु । अ रु म य थ १ न व
 म रु स द न म म म नं क र्प टं । न का द न म म ल रि न य व र्णं । दा द । म १ नि क्क रुं । यो द न म य व कं । व रु र्ध न म व र्जं ।
 नी । यं व द । म रि य टा का । षा द । म वा क क र्प नं । दा स्यां ग रु व र्म ध वं । द कि ध पा द न व १ म दि ष १ व ष रु १ र व न १
 । उ रु १ श्च न १ म य १ ग ग ल १ वा म पा द ग १ ध १ उ लू क १ का क १ सिं रु १ स ना । म की । म हा म क्क न १ सा व स १ ।
 न वं रु तं व रु र्थ व व म्मा नं लि खा य य दा । न म्मा ध १ म हा म म नं वा क स रु क्क पा व व ता दा नि र्गं । म्मा व रि न य व र्णं

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

दक्षमानपूषं कनकशिनेन वः जनकयक्षिन्ना नयनं राहा का वसना कूलं ॥ एवं विधं ता वयं शागी ॥ सर्वकुर्वं क
 म्युसिद्धि क वनाममहा रेवमिह्य ह गवान ॥ ॥ अथ मां का वनिच न्नां बी चीं ता स्त वयं रां ॥ व थ स्तं स
 फु वरा म क लां जि म्खां जि न जां वी पी ग व र्मु लां वे डु जां द क्रि श्म स्यं र व नी लं वा भ क न्द स नि रं ॥ जन क व सि
 प ला दि वा द भ दि गु व क्क श्म य ता ॥ वि ह स नि स र्व म्खे ॥ ॥ मि रे यो च ना ड ता ॥ ना ना व मु य बी नां गी स र्व लं का व ॥ १०८
 रु धि तां पं व व द्ध म क्क ठं डु टा प्थे वि वा डि ता ॥ द क्रि ॥ श डु क व व डं दि ती य म् ॥ वि स र्ग कं ॥ रु ती य स व व रि नं
 वा म न र्ज नी पा भं दि ती य ॥ अ क य न्त्र वं रु ती य य ध नू र्थ ॥ ॥ रू व द्ध स म्भ म्भ ये नी ना व सि स म क क ॥ जन न रा

यमाननवभंसन्ना ॥ यया नि वे ॥ ॥ रू ह्य द र ग वा न्त्र जी व ज स त्व रू थ ग क ॥ ॥ र व भ अ रु म भ ग रं वे वि न य सूर्य म
 शु लं यं का व य वि श नां द वी पी ग व र्मु म हा क लां जि म्खां जि न जां वे व स का ध सि ता न नां स र्व लं का व ॥ ॥ मा रा रु य डु र्ज
 न व यो व नां ॥ द क्रि ॥ श डु क व व डं दि ती य य व स म्भ व व रु ती य स र्व वि जा श्म वा भ न र्ज नी पा भ कं ॥ दि ती य य रु धि दि
 का रु ती य ध नू र्ध ना त था ॥ य यो र्ज टा म् व दि ता ॥ सि त य य स रू रु व क य ता लं क ना ॥ का ध क्क ला रू वा व हां का ध क्क ला रि
 ॥ सं लु तां ॥ द ग्ग य हां दिं स नि य गु दान् ॥ का ध क्क लि ना क्क पा ज्ज का र्णा व द्ध मि ना श य न ॥ ॥ ख नां य ॥ ॥ व र्मु व द्ध म्भ त य व
 र्थ कां ॥ य य रू र्थ न व म्खी ॥ ॥ एवं ता व य शा गी वे द गी मा या भ न य ॥ ॥ स र्व व जा य न य ना ना म य र्मु व वी र्णा द र ग वा

[illegible]

कृत्तमंयुक्तं वक्तुं चतुर्धुं जंका लामा ला कलं धा वं वक्तुं कुं ज न्य का स्यं वि वा जि गं हं का वयं व रथ ने व स क्ता व ऊ वि रा व
 ने १ ना सिका र ग ति नि ष्य न्न सा ध्य द हं तु पू व य न् १ अं ग स न्नि ष्व वि श्व व ऊ नि व न्न न १ गं न व ऊ य हा व र थ का ला आ नि ग वि
 गु ह १ ला व य द्ध ज दा कि न्य १ व य न् स मं ग १ उं व ऊ दा कि नी अ मू क स्य व क्ता क र्ष य हं रु द् ॥ अ न न क म थो र ग न व क्ता
 क र्ष स मू र्म मं १ वं का त्रि नं द वी श्रु थ गं ना उ सं भ य १ ॥ अ थ स क ल ग ल्प नि ष्य तं स हि ष जू यं र थान कं १ रु द्ध व
 र्धु म हा धा वं व कु र्व कु न्ता ये व च १ अ र्ध वा हं च तु श्र व र थ वि वा जि गं व ऊ मू य लं व र व द्ध व क्ता द म नू कं १ ग म र व द्धा क्ता
 पा लं ध नू १ पा न म व च १ रु द्ध व य द्ध ज का धा न् १ ना ना य द्ध व र थ व न् न १ सा ध्य स म न सा व क्तां अ रु द्ध वि धा न १ १

न ४ साध्वं विविक्तयत्नालो वेधुद क्रि सांदि सं । कटय न वज का धना मन वज न या न कान् । खरु न दा वय रु न वे ज
 कुत्रालि न वि द्र लान् । उं वज वा क्रु स रु क्रु य मं रु द्वा । अ न म र्वं न ४ कृ त्वा । वज वा क्रु स रु व ना । उं की ४ कृ ४ वि द्र ताः
 न न हं २ रु द् २ स्त्रा हा ग म हि षा न न य म वृ प स्या यं म नु ४ का क उ म् क गृ ष्टे सु य वि वा त्रि क स म न ४ । न वि ल य मा ने सुः
 ला व य न्ना म वा द ने ४ । वा य म नु ल म मा व रं व ज दं ष्टं वि वि क्त य म् । ग स्या य ष्ट स मा व रं सा ध्व स्या प त्रि क ल्य नं । व ज का ध
 न पी य नं नी य न द क्रि सांदि सं । वा न म नु लि प र्शु शि पा द पां नु श्र न स्य वे । न न्ना म ग द्वा न र म यं वे व ज म नु स्य व व
 श न ४ व वं ला व ना या न न क र्म क र्मा दि धा न न ४ । उ द्वा ट य ति य क्क क म पि किं य न र्त्तु वि ज न व ४ । वा म्म श म स त ना

१११

मा सि उ लू क प क्रि सा व श्चि ता ४ । न न्ना म म नुं वि द र्शे । लि ख ना रू नि बा ध क ४ । व ज का ध द य ने व या धा व नं वि वि क्त य म् ।
 उ वं वि क्त य शा न न वि द्र ष य ति य । ध स्या या । श्री का वा क्रु व सं य कं द या का व म र्वं कृ त्वा म या क र्ष द म र्म । ह वि न व र्त्तु
 व रु म र्वं च रु षा दं व रु वी हं द य गी वा म हा वा जा सि ध्व क प व म श्र वं ४ । य थ मं आ म मि ष ली नं जि न नं क कृ ति न द क्रि । द
 न वा न नं । उ र्ध्व म श्र म र्वं वि क वा लि नं ह वि गं न था । द क्रि । द क्रि य ता का कि श्र रि न यी । द्वि ती य वि श्र व ज । रु ती य र्वं
 । व रु र्थ वा रं । वा म वि श्र ष म् । द्वि ति य म कि ४ । रु ति य द र्शे सं । व रु र्थ ध न ४ । य स्या ली ट सूर्य रू । ता नु वा नि र्ग । ह नि ह
 वा दि य ति नं । रू र्वं ला व य दि धि ना म ली । सा ध्व स्या ना लो मं का वं ला व य न् । मं का व नि ष्य न न म हा धा वं ला व य न् । य आ द

15

10

७

॥ अथ कर्मसंख्यासर्गवद्ध कृत्यमयानुसर्वाकावविनाजिगं दक्रि ॥ अथ कृत्य दायिका ॥ अथिषकयदव ननगलिकागनाः
 गगनवजनिवावशं ॥ ॐ मदासुखवजनिज ॥ ॐ कृतसुखवद ॥ नवंगविनथागानुरुवयदविकाशी ॥ ॥ माव
 रशदमाद ॥ ॥ माकाव न्ययं कावस्य लायानिकाव दयस्य सयय आत्म ॥ अथ कावस्य सयावधुनथासुखं ॥ ॥ सुखं
 कथितं दविमर्वकर्मयसाधकं ॥ ॥ यमदावनी कर्तुका मनपू नवयि अष्टम्यां कूल ॥ लायागनरि ॥ लायनद्या नवि ॥ ११४
 दधीगं मदनरुलं रुक्रयि लाकाविकावसनगिलकं वं यमनी ऊधन ॥ ॐ अमकी मकी ॥ ४ वशी रुवधु ॥ सिद्ध अयुग
 नागच्छति ॥ ॥ अथ कालदक्षायनसुखदययममदलं चिकथन ॥ न इयविरुती यस्व वं पणशकमि

तवर्तुचिकथन ॥ आत्मानं व ॥ अथ नागचयं सितवर्तु ॥ कावामतयवर्तु चिकथन ॥ तस्य नागक्रिया मम तं निश्चि
 र्यं तस्मिन्माध्यमं नीव नियतं तं चिकथन ॥ अथ नयनयागनरु ॥ अथ कपलिपूरु ॥ विषं निर्विखं कथानि ॥
 अथ वन्दसूर्य विधुर्कामनगालिपिष्टकमयं वन्द्यकोरुलावकादक निधि ॥ यत् ॥ मकुंज यत् ॥ ॐ वन्द्यार्कमाव
 ल ॥ गिष्ट ॥ २ वजाय रुद्रस्वादा ॥ सफकाटिज यत् ॥ अदिदं कर्म समावर्तु ॥ गिष्टं वन्दसूर्यो वा छिंदिवा ॥ वि
 धारुवति ॥ ॥ यत्र सैन्यविनामनायखटिकां साधयत् ॥ खटिकां पिष्टाय अमनक ॥ अवच्छिन्नयासाई वटि
 कां कावयत् ॥ ॐ वज कर्तुविदवजायहं ॥ ३ रुद्रस्वादा ॥ सिद्धार्थकाटिज यत् ॥ तग ॥ सिद्धिनि ॥ कांसाधकमधुलूयी वा

वक्ष्यन्तु वक्ष्यन्तु जयन्तु सर्वमणवः ॥ निवृत्तिं नारुवन्ति ॥ ॥ दवान्स्व दयितुं कामनं निलकं साधयितुं यं
वज्रवंधवजीयसाधिनं कृष्णवृत्तिनयामिधिनं सूर्यग्रामं अक्रान्तिपीषयं नृपिष्ठापयन्तुं संस्कारं नृपेयादनाक
ममकुंजयन्तु ॥ उं वज्रकृष्णवस्त्रदय २ रुद्रस्वाहा ॥ सिद्धार्थकाटि रुपे नृपय अहिलकं वंदन्तु यं यथा मतिस्तु ॥ ८ निः
॥ अथ वर्षाय यथागं वक्ष्यन्तु ॥ उं आ ४ रुद्रका वं विधिवन्तु ॥ अनन्तयुक्तिं कृत्वा यथा मत्तनस्त्राय यन्तु कृष्णयथा
सार्वयन्तु ॥ नागदमनं कवसनलय यन्तु ॥ हलिमदनमिवायं गयन्तु ॥ मवावद्य यन्तु ॥ कृष्णाय कीवद्य यन्तु ॥ कृ
ष्णकृष्णविकर्त्तुं नृपय वक्ष्यन्तु ॥ वायथांदिमिपूष्विधिं कृत्वा तमनन्तं यन्तु ॥ नस्यान्तं मभुलं वरुयद्दीधिनाः

[illegible]

5

10

यस्मिन्निदिदितीयकं रतीयमक्रसुखं ववुर्थस्तानलकृष्टां गस्तु वज्रधना वाजा वज्रघ्नानां तु कृत्तैर्धं पहा वादिन तत्त्वं
 सर्वं च निदिदि वनाशानि गंगदसं स्पृष्टं भस्वलां लंकुं गुरुं उत्पलं कृमदं सोमं वलपत्रं वा वस्तिनं दिभं दिभमष्ट
 समं ध्ववृद्धन वमस्य तु न वदवा शं पस्वयन न वदवानधिष्ठय गुरुमक वास्यतिर्गं सुविबन्धिवन्धुय वस्तिनं न वस
 यति विष्णो नास्तान वरुण गुरु वा आकाशं ध्वयं क वा धिमलु वा वस्तिनं गमदिकं सर्वविस्मयन लाकध्वं अन्नन
 कं शदिगं हस्तं कुरु अष्टदयः प्रकीर्तिता शं अक्रा वा ह्वकं वीजं अष्टदिभं तु विन्यसन् पूर्वमात्रि सीद विपायु ला उत्त
 वरा वयश्चिभमामकी नाम दक्षिण वृद्ध लाचना सो वरुमध्व वा कानि वरुमा ला वरुर्थकं आकाशं मध्व वरुं तु

११७

७

संपूर्णकानि वक्तव्यान् यल कृष्टा संपूर्ण पातु लव कमला रुवा आ वृथ वदमं तु पाहामक कुरु वगुहानाम कस्तन
 तु नस्य मध्व तु मानसं पहाया वमिनादवी वयसो नागधुध वया उत्तं यम वजा धं यथा पूर्वं तु विनयगुहान क
 लुमी मध्वानां सर्वसं हा वस्तिनां वालय दलुदं गुरु आलिकालियथा जनं आलिकालियथा गन सर्वसं सा ल
 कृदका वज्रघ्न उपायं तु पायं मध्व भव वया लो दोष साधय लु क कमला वरुं अर्घं वक्षः सद्यदि वा कवं विन्यस
 तुं वा भगवत् वव उपायं तु दवा नां स्वद वगं विनयगुह उरु व वज्रसुत्ता लय आसमा लायं तु वृद्धिमान् कृत्वा व
 गीतिका कावं सव वृद्धां तु वं जयगुहा सा ह वरुम शव ना विभू स तु विमाह धर्म विमाह कुरु य व वज्र रु उरु

धनं शुभं हं उहा उय हा पाय न नि नो दय हा पाय क नाम यं गं उं व ऊ धर्म व सि न प व सि न संप व सि न सर्व व वृ कृ ण प वा वि
 न य हा पा व मि ना ना द स्व रा व व ऊ स त्व रु द य सं गा ष सि हं उ हा उ स्वा हा ॥ उं सर्व त था ग न सि द्वि व ऊ स म य नि ष न म ला
 धा व या मि हि हि हि हि हं उ रु ट्वा हा ॥ य हा मू या य ध र्म स प व धा ऊ दं गे हा न षं क म ग्ने स त्वां वूर्ज र्थ ना द य न व ऊ
 न त्व न गृ ङी या न य ध र्म स वा द य न य हा पा य वि धा न न स त्वा र्थ कू व या गि नां ॥ अ न त्व न या गि नां रु स य स व ध १११
 न ना दि रि षा या ग न त्वा नि ही न स्य सि द्विं दू वं व ल क थ नू ॥ ॥ ०० गि य रु त त्व अ न स म य थ मं य क व रं ॥ ० ॥
 गृ स व ऊ य धा स म्य क अ क स ग दि ल क रं ग य न स म्य वि धा न न सि द्वा न ना ग सं ग य श रु नि का मु कि मू किं रु सि नि धा त्व

दिमन्यका विमयमनिकर्माणि अक्रसूत्रस्य लक्षणं सोवर्तु वज्रदं वायिपत्रवीजं विमयनशोचि कभ्रसूत्रं
गशिगंडुविचक्रं ११ कंकुमादिगुणश्चनसर्वगश्च विमयनशोचि वंजितांगुठिकां कृत्वा वल्लभयुपविकीर्तितं वृडाः
कंकालवीजं च नवालिगंथे वचः अरिवाचं यथा ऊयदतां बोडकर्मसिद्धिं वचः ॥ नित्यं पूष्टि वग्धा रिवाचं यजंजं
व ११ सार्वकर्मिक ११ मनुसाधनयंत्रासद्वर्ग्य नदई भवचः ॥ नित्यं कर्म नभं कंडु अष्टाधिकं गुणोष्टि कनथा वष्टि स
रवा मरिवा लुगु बोडकर्मसिद्धिं वचः ॥ यथा कर्म विहागंडु अक्रसूत्रादिका वयन ॥ दिग्निदिग्निवाह मस्य मध्यवृद्ध
तव मस्य ११ नवदवादि सूत्रस्य नवदवमधिष्ठयन् ॥ अर्द्धना गुणिका ११ सर्वाष्टसूत्रे स्थायनिक लिगं ११ धर्मसाक्षीतिः ॥

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५

सूर्यानां धर्मधाम्ना उच्चमशकवतलसूर्यसंविन्वाद्यक्रवंशवयन॥ गकवमाध्वमृताक्रवंविन्वाः
 सिगवर्तुसत्रभिकं अंगुल्यां वज्रवर्तुयमध्ववर्तुवामनशापमेवजावतिर्नस्यसप्तसूर्यमध्वनशाः
 वयसर्वगत्वेन अक्रसूत्रमधिष्ठयपश्चात्तुसंगी अंगुल्यादिविभक्तशावजीशावर्तुवामानां वजावयनः ११८
 वक्रशाभिकिकाधविन्वासायोष्टिकमध्वगत्वेन अनामिकावध्वनिकं ययं कना शिवावर्तु अंगुक्षव
 जां कृमिदवनाकर्षणवतः समाहितजायतावनसिध्वननागभंगयः अंगुल्वननुयागीनां अंगुल्वमनुः

लावनो अंगुल्ववज्रयः अनां अंगुल्यादमूडागत्वेन श्यागिनां गत्वा मालेयगत्वेन सर्वाशिकावयनः अक्षवृका
 वज्रवृसादि अमक्तविसानूगलिश्रुतं सखकलिखसिद्ध उजायिलिसात्रा उपादशमहा हानसर्ववि
 द्महंरुवन् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 सिद्धकिगत्वे कर्माणि अपविष्टुं दुइवतः ॥ ४७ ॥ सम्यक् महाहानं हानगत्वे विभक्तः ॥ ४८ ॥ समा
 हितनदकमीकृत्समकालिरुदतः ॥ ४९ ॥ ॥ चतुस्रुलमध्वर्क ॥ हानवीजननिर्मिता ॥

रावथसिगवकुपयामनससंस्तिगं॥विउडंमत्वपर्यकंमवारुवहारुषितं॥महामडा
 दोरुलोडददिल्लनउपीठिगो॥सिगवकुसुमरेवेआयवेवावनपुन॥स्ववद्वसमेमये॥
 नानावभि समनन॥यगयकुमविधननमकुजापयकीलित॥ॐ॥वामदक्रिषयालिः
 र्णीमनकाकिनीनत्सखी॥ॐ॥आलिकालिवीजानीहंकावसुगुहृतिगं॥अस्यवीडंउहा
 वथआगीलपुवद्वत्वमाप्रयागु॥ॐ॥ॐतिमंउजापरावनाअस्यमस्यदिनीयप्रकवली॥२॥

११८

मृगवजपुंलंरांयथगतत्वमृकाकिपागलकुधंमार्गनउयागिनीगतिरामरंदर्मयामिगा॥अ
 उमिष्ठामिल्लनउनवदालीहिकीदृष्टी॥दालेरुदसंल्लानस्यगुलदायादिकीदृष्टी॥मृगसम्यक
 प्रयागवपायचिकालकंमार्गनसाहनंल्लनेमार्गवद्वद्व॥विद्वनादस्यउहनीवे
 कूर्नासादिकर्था॥यानोयानस्यदालेस्यलकुधंनारिकामिकं॥स्वर्गविद्वनीययदेहिन॥उ
 हंउहकल्लानस्यगत्यागति॥यकीएवगुवनासायाकल्लसीसिद्धदवगावरु
 लीवाजगंल्लाननत्रांनृपवर्लिकं॥एवदालस्यप्रतानीमृगतिर्यकुवदिनेयी॥अस्यनवक

रागनां उवं संजा किल क सं॥ यना दान विमयस्य संसा नरु दसी रुव ॥ न स्या दान विमयस्य यागी तु
 ससमाहित ॥ म ल्पकाल प्राप स्य म ल्प वि द्नी वल कथन ॥ न रु द यं कू ना दी नी उत्का क्रिया ग म रु म
 कृ म् क ४ य व मा न रु ४ स र्व दाना रि रु म् न र्प व स्तु ठि क रु पा ना दान व न्ध स्य रो व ना ॥ न स्य निः
 म स्य दान स्य वी ज स्य सि त म म्ब व न् ॥ या ना या न स्य म्ब यि ना त स्य वी र्जं तु क्क लि न व न् ॥ न स्य प र्व स्य
 अ म्ब स्य रा व य स्य स मा हि त ॥ वा य व र्क स्य द रु स्य वा य म उ ल व न् ॥ वा य वी ज स्य म ला नि वा य
 न स्य पु प्पु लि का न् ॥ वि द्ना द स य क न् म्ब क र्ष य व न् वी र्क ॥ व जी वी ज स्य दाना लं म्ब क्क मा दि र्कः

१२०

या ज य न् ॥ दाना क र्षि त द म हि ४ स्त ने अ रु वि षा ति स्त न न ॥ क ४ प द स्त न प द उ र्ध्व न व सी धि तु उ
 र्ध्व म ॥ उ र्ध्व य वि न वी ज न् ॥ म ध य द हा क र्ण ॥ दाना द न उ च्चा र्थ म्ब स्य न स्य तु वी ज न् ॥ दाना
 व र्म य वी दि प र्व स्य म्ब क र्ण या जि र्ण ॥ पु न्थ ना द ना द न् वा य वी ज नि म्ब न ॥ म्ब क वा ना नि वी
 ज स्य वा य म उ ल व न् ॥ व रु वि न ति हि ४ स्त ने उ र्ध्व म्ब प र्ण न ॥ प लि न न तु या गी नी उ र्ध्व
 म्ब लै तु रु क थ न् ॥ न व सी धि य र्ण उ र्ध्व स द्या क्का कि तु मा न स ॥ दि न दान स्य वि प्रा लं प र्ण न नः
 र्थ का वि लं ॥ वी र्क का म्ब प र्ण ग स्य म्ब मा र्ग ल स्य म्ब न तु पा य न लि क अ रु व दान प रु द न ॥
 य थ र्थ क स्य स न स्य प र्ण स्य का कि नि म्ब ना ॥ न थ र्थ का दि द दाना र्ण न का य ति स्त यि र्ण ॥ उ क्का

निकालसीपाकोअकालंदवद्याननं॥तस्माच्चिन्तानिदहानांथागमासहद्विमान॥ ॥८२॥वज्रय
 थगर्हयापसाध्वंविभाषत॥समताविरुहावनपूर्वलकृतसर्वत॥इदिमलेलमध्यर्हपेवव
 हस्यवीजक॥७॥नहृत्तालाकंनभीनीनूपानीलकचनस्यपूर्वाकिस्यभूयस्यपूर्वलकृतसंयुतं॥
 रुदयसर्वनूपासिद्धकावलिगवतसा॥वीजननूयनिष्ठाश्वचुमलुलमध्यत॥पद्मासीका
 नदाकिनीआत्मानंविचिन्तयत॥हिमूर्खंषड्भुजंवेवेतिभुजंकिरीटमलुलंरुसितकाधरंभवेस
 वीरुवसहृषिनीसितकृ७देवर्हलुसूक्ष्मरावकुहृषिनी॥रुननैवद्वमयेअसत्त्वपर्यका

१२१

वस्तिनं॥प्रथमंसंनविन्यासंदिनीयमंकुगंतथा॥एतीथवज्रसंयुक्तंवाभनजनीयाकं॥दिनी
 थकल्पलतावहतीथसंनार्हधन॥उर्ध्वकथावभिदातांरावयश्चसनिअली॥न्यसदक्रवविन्या
 समस्यवीजकृतत्यय॥आलिकालिपुयागलयथावाहस्यवीजवत॥सितवर्धनिसर्वपांआत्मासं
 युक्तवीजक॥कदलीपुष्पपद्मस्यइदिमृगुजस्कापनं॥तस्यमध्यर्हहानवेविहानसहितनकु॥
 रावयश्चवरावननिकर्मनिनूयदुर्गंतगावाकानिथोगस्यधवयद्विवरुस॥दिहृवनचिह्ना
 नांवायमलुलवतसा॥तस्यमध्यत्वमिमध्यर्हसूर्यर्हआलिकालियुक्तस्यवीजस्यतस्येववक्रमिति
 हाहाहायसजायनजयपुयागीविभाषत॥हानवीजस्यदालानीरुनमानकुमध्यत॥हायद

15

10

७

0 cms.

5

10

15

20

25

दयहानस्य हन्यमानं कृष्यवत् ॥ दोलादासन जायेन सा गदा वलयागिनां ॥ दोलादावस्य यागिनां
 म्नात्म वाक्कंठकावयत् ॥ दोलालकललकस्य सावलकसंलकयत् ॥ दोलाहालस्य यागस्य समता
 तत्वरावना ॥ समाहितलोवरावेन सिद्धता उर्ध्वमय ॥ तन्नावाक्कादिदहानी साधकस्य दुर्निर्मिता ॥
 यत्र विकान्धनस्य जाययच्च विचक्रस ॥ रावना जायविष्णुधरा समाहितनवतसा ॥ विनयसूमा १२२
 ग्नीसि सिद्धता उर्ध्वमय ॥ ॥ मूथहानवृष्यरूपयुदीपाकावविलुनकर्मक्यादिवक्रस
 अवकाहि तल्वहि कथितविसृणापिनी ॥ कृटिक विरुहिहि विनीकल्य युदीपाकाववगर्भसिर्वपुर्षव
 मालव्यपुर्षवानि ८ पुर्षविर्ग ॥ स्वरावयागमालव्य सर्वभित्तयविलुङ्ग ॥ हरगवन्कनहानविष्णुः

धितं॥ रुगवानाह॥ हानं प्र च विधं प्राकं सत्वरु द न नू प त ४॥ आदर्भ हानं च दवानां मू स गत्तां काटः
 हानकं दिना निष्ठु त हानस्य नावकानीरुय ऊं दकं॥ तिर्य्यर्क्ष मा ह हानं उ मू चि हं ह्य व वा दि क प्येव
 रुदन कथितं॥ हानं उ द पुष्प दि त मू क वाल हानं उ हानिनी॥ हानं तत्त्व वि लैष उ जाग भा मु वि लै
 ष त ४॥ उ त्म का टि स ह सु वे मया हान न वा दि ता अ द्वा मू त्या श्रय ल न या ग भा मु उ वि व रु त ४॥ वा
 क्र भा ह्या दि भ द्या नी नै त वी ग स भा य म उ कि मू कि य दं का र्म या ग भा मु नू सा न त ४॥ सा रा सा न त वी या
 गं क थि तै त व न न ॥ ० ॥ ॥ तिर्य्यार्क्ष मा ह हाना म न य नं ना म मू क म स्य रु ती र्य्ये पु क न र्त्तं॥ ५०॥
 म नू व उ पु रा ना जा म का तां उ मू ल रु र्त्तं॥ ॥ उं व जा म त म हा स ख हं ह्य हा ॥ ह द र्य्य ॥ उं आ ४ हं हं ह्य हा ॥

वज्रसत्त्वस्य ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ वज्रगेया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ वज्रविम्वया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥
 नागवजाया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ वज्रसोम्याया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ वज्रयकाया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥
 वज्रदाकिना ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ भद्रवजाया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ पृथ्वीवजाया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥
 वंभया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ वीक्षया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ मकुंभया ॥ उं आ १ मूं हूं स्वाहा ॥ मूत्रजाया ॥ १२३
 उं आ १ वज्रकुंभिका ॥ हूं स्वाहा ॥ वज्रकुंभया ॥ उं आ १ वज्रपाला ॥ हूं स्वाहा ॥ यास्या ॥ उं आ १ वज्रसूटव
 हूं स्वाहा ॥ वज्रश्लोया ॥ उं आ १ वज्रधरा ॥ हूं स्वाहा ॥ वज्रधुमया ॥ लाघनादिनी पूर्ववत्सुमीमर्त
 ऊर्ध्व ॥ उं हूं स्वाहा ॥ पूष्या ॥ उं हूं स्वाहा ॥ धूपा ॥ उं हूं स्वाहा ॥ गंधा ॥ उं हूं स्वाहा ॥ दीप्या ॥ ॐ तिवज्रसत्त्वस्य ॥

॥ उं जी १ स्वाहा ॥ हं कस्य ॥ उं वज्रगुच्छसिद्धपत्रमयारगस्त्रविकपालमालाध्वनिसिद्धिप्रियस्यसा
 नवासिनी हूं हूं स्वाहा ॥ रगेया ॥ उं वज्रवत्सविश्वदीपिमहावजीलिकपालमालामकुंभया
 कथसर्वदृष्टदेयमाकथय १ नृ १ स्वाहा ॥ वीर्या ॥ उं वज्रायनाजितपत्रमगुच्छकपालमा
 लाविरुषितसर्वदृष्टमाहनिप्रिय ५ क हिरुगवतिवज्रगुच्छविश्वविधिवगंधालिसिद्धि
 कविवातसिद्धं हूं ॥ पुमाहाया ॥ उं वज्रवतासिख २ स्वाहा ॥ १ सर्वदृष्टानविकृतवगंधाविसिविकृता
 लंकाविरुषितहन २ दह २ पत्र २ माविलीवसमयमनुस्मयपुत्रमयमउलमयउल्काययसर्वहूं २ हूं
 ॥ वतास्या ॥ उं ५ क हिरुगवतिवज्रगुच्छविश्वविश्वविधिवगंधालिसिद्धिप्रियसर्वतथागतदृष्टसमयः

हा॥ रवचर्या॥ ॐ नमो ब्रह्मास्य त्रिवायना ॥ ॥ ॐ वव पिचवज हं २ रुद्र स्वाहा ॥ ववजस्य उप ह दय
 ॥ ॐ उलाका कप हं २ रुद्र स्वाहा ॥ द्विरुजस्य ॥ ॐ कस २ र्था हं २ रुद्र स्वाहा ॥ चकु उर्जस्य ॥ ॐ किटि २ वज
 हं २ रुद्र स्वाहा षडुजस्य ॥ ॐ नमो रगव नवी ववी नव्य गाय हं २ रुद्र ॥ ॐ एा दि ॥ लकरुजस्य ॥ ॐ जीव
 ग हनू कवज दा किनी जा स र्वनी स्वाहा ॥ हं हं रुद्र ॥ ॐ न प्रियुजस्य ॥ ॐ गी रुद्र कवज सर्वद्रुस समय म्हा १२७
 परुजक हं रुद्र स्वाहा ॥ बोडासन हिरुजस्य ॥ ॐ जी ४ रुद्र हं हं रुद्र ॥ विद्या गजस्य मकु ॥ ॐ ति रुद्र का
 दयस्य मकु ॥ ॐ वज वे वाचनी य वृक्ष जा किनी य स्वाहा ॥ धादक्ष कल ॐ दं दा किनी मल मकु ॥ ॐ मा गी यो
 स्वाहा ॥ मात्रि वि ह दय ॥ ॐ मा गी यो वहा लि व ला सि व ला रु म् स्वि स्वाहा ॥ उप ह दय मकु ॥ ॐ प्रि सा विप

रु सव वि माय प्र स मनि हं महा द वि रुद्र ॥ परु सवनी ॥ ॐ वजां कक्ष कर्षय हं ॥ ॐ वज पा ग व ध हं ॥ ॐ
 वज कालिगर्जय हं ॥ ॐ वज म् स्त्रि ग हं २ ॥ ॐ वज की ल की लय हं ॥ ॐ वज म् रु ला का टय हं ॥ ॐ न
 म्हा १ रुद्रि द्वा ग्ग मा द्य ४ सि द्वि सा धन ॥ ॐ वज दा क ॐ मं व लिं ग क २ हं रुद्र ॥ ॐ ४ हं वी हा ४ समय रुद्र
 रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वी रुद्र ४ पंच वा नान् बा य वि लि द या न ॥ वज दा किनी व लि मकु ४ ॥ ॐ ख २ र्वा हि २ सव
 य रुद्रा क स ॐ एा दि व लि मकु ॥ ॐ किटि २ वज हं ॥ अ धि ष्ठा न मकु ॥ ॐ आ ४ हं २ ग्ग ध य २ व रु २ हं २
 रुद्र ॥ रुद्रा धन मकु ॥ ॐ वज जा किनी हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ धा लि हं स्वाहा ॥ ॐ व अ लि हं स्वाहा ॥ ॐ व ग लि हं
 स्वाहा ॥ धा गय मा य म्मा क र्ष य वि वि ना मे कु ॥ ॐ वज सि हि नि आ स्वाहा ॥ ॐ वज यो धि नि ॐ स्वाहा ॥

॥ खेचं या ॥ ॐ तिने वा त्या संप्रति वा या ॥

महदय॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

लिवाकाऽपयन्तं धर्मधातुत्वात् वृत्तः॥ सकलात्पत्रदहानां सचराचरगुणधृक्॥ त्विधायनधाराणां

निलानलरूपार्थं वजीवीजनया जयन् विन्दुना दसमाकारं ध्यात्वा वर्षे विंशतिस्मरन् ॥ सत्रयन् विद्विषी

अथ तस्य मध्यं कथयन् ॥ कालिपृथ्वीकलाह्वयः पृथ्वीविगुहवजिनः स सा शास्त्रादि सर्वेषां मातृ

॥ ॐ द व वि च वं जं हूं ३ रु दूं स्वा हा ॥ हु वं जं स्वा *

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यत्किंचित्प्रववज्जनादनन्त्येनथागदव्यतशास्त्र
माकार्कध्यावर्षवैतिस्यत्तं॥सुत्रयवदित्री

अविग्रहवजिनः संसाधत्यरुसर्वषां साह

का सर्वरुमिनः॥ हानां वसुधा सो प्रह्लादकनखमीनके॥ अद्य यं कमलग्रष्टया यमं कनखलु॥ विक

एव वृक्षकात् सप्तमं मृतमात्मनः ॥ काश्चिन्मृतस्यैव विवर्णयिष्ये मन्त्रं ॥ उद्यानस्थानदहस्यम्
नाम्न विधिबलमष्टम् ॥ पूर्वम् मृताद्यप्यश्लक्ष्मी उच्यते ॥ अग्निः उद्भूयतस्त्यक्तं वा यधुमस्य दधुमः

नक्रयं नड ४ नरथेवच ॥ नथ वायु अनिलानां प्रथिवी सा क्रि न पिती ॥ ईका न गी न का का न १ प न सा सि न

काष्ठयन्त्रिस्त॥ ॥ वक्रुद्रवृक्षसमथलाग्रदंष्ट्रान् ॥ मृच्छूरावृक्षस्य विनामलम् ॥ रावा
णवविमलिश्वमकुर्वितानि ॥ तैरुविभक्तप्रपथस्य शेषे विविक्तेषु ॥ इति श्रीमत्तत्त्वार्थसंग्रहः

... ॥ यत्र च दालि गल प्रजा वृक्षाल

लाकडि यत्तु धर्मश्रद्धयस्य विष्णुभादव विना विष्णु ॥ सूर्यसाव विभादिश्रमाश्रु विर्विजिगृ ॥ सर्व
 सुखसुखावशां ॥ लिमन विष्णु ॥ पंचविजां ॥ लिबुद्धगुदल विष्णु ॥ सर्वमायवदु विरु
 थसु विष्णु ॥ वज्रसुसा विष्णुकुधर्म विभादिश्रु नमरुसुसावधर्मजां ॥ लिमविष्णु ॥
 ॥ ॥ अननगीयमानन कलपुण सर्वजिनात्मर्तुवत् ॥ ॥ तिआहृगवान् सर्वतथागत ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ति सर्वतथागतात्य लिनमिनवमस्य पुथर्मपुकेवत् ॥ ॥ ॥ वज्रपुशा गाडा वलिकर्म
 वर्याविधि ॥ नकगन्धनमलुलकं हसुमापुपमालग ॥ सिर्वाकृजिका लं वकावयत्तु मूर्धपुजादि
 सत्कात्रेर्मस्य मासादिखाद्ये मदनच मदनसुर्क ॥ वामे सुधाप कवत्त निद कि लोस लिम हांजन

पत्राश्रयं हांजनं समयपुत्र विं सर्वपं वा मृगन साधवज सत्त्वसमाधिना ॥ अथ हृन्काद्यक आवा
 हयत्तुर्वेदवता ॥ मडामकुपुया रगल विधि हृन्कर्मत्ता ॥ नकपुष्पधूपादिगीध आधि निवदयत्ता ॥
 कायादिपद्मरागुस्य हं जिक्ता तत्त्व विष्णुषण ॥ आरुष्य मनसा सर्वज्ञानीक ॥ पुरुदत ॥ हृगवेनक
 तज्ञानीक ॥ पुरुदा ॥ हृगवानाह ॥ पुथम ॥ पुजापति ॥ स्या ॥ द्वितीय तागतयेवत् ॥ हृगीय ॥ पुवव ॥ ह्योत
 वरुर्थव हृवा मरु ॥ पंचभावावार्क मकुमु ॥ न पंचकुला ॥ कि लिता ॥ पंचज्ञान पुश दन महा ज्ञानीक
 धिर्गीतव ॥ हृनीक ॥ पुथा गंव ॥ योजयत्तु सर्वकर्मसु ॥ यदिकं तग ॥ अर्कर्म सर्वथागिनी पीलयत् ॥ न
 उकामन त्यावेव नउरा रग निथाजयत् ॥ सत्त्वार्थ हृनु नाथागि ॥ सर्वपुजापकल्ययत् ॥ पुथादमेव

रुतं गच्छन्तं कीर्तितां तस्य मन्त्रादी जन्मस्य मन्त्रादिकालिप्रथागत ४१ तत्तथा गयका मन्त्री सर्वदवां पीलय
त ॥ उधार्य कासनं चैव तापनं च विरमयत ॥ निष्पादनं कृत्वा कनूयस्य तस्योत्सवपु कल्पयत ॥ तस्मात्सर्वम्
गैरुत्तमं गत्वा दयलुत ॥ २० ॥ अथादि सर्ववस्तु निर्वर्त्तनं मन्त्रादी पीलयत ॥ वा मन्त्रादि विराम्युत्सवे दकिरस्य का
दर्थ्य ॥ अत्राका कपादाद्यदृष्टि मन्त्रादी कावर्त्तनं व ॥ कृष्णपत्रं च पुदम्भी मन्त्रादी विरमयत ॥ २१ ॥ कृष्णपत्रं
दगम्य च पूज्य पूजा त्यक्तं रवन् ॥ ॥ २२ ॥ अथादि ॥ मन्त्रादी नमालं क्य मन्त्रादी स्वमाप्नुयात् ॥
कर्म मन्त्रादिविनिर्गता वयं तथा गयानि न्या सर्वकर्म सिद्धति ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥
४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥ रुका वा रुक्म व ॥ ४१ ॥

वल्हेका किमान् ॥ वेवाचनागन्धस्वरावसंस्क्रितः ॥ आस्वादवज्रम्वयसूक्ष्मरिचूषी ॥ उथाउदवाहिजि सिद्धि
दायकाः ॥ ॥ यच्छिन्नं हसाहितवमूलं हिमं रावन्मूलं ॥ उच्छुद्धं कृत्वा अलं ॥ उच्छुद्धं सहावरं
थ ॥ ॥ अनया गन्धया दायकं मलावर्णं पूर्वकं ॥ वासदक्षिण पातिर्यासेलीलाग्रं तव हिमेश ॥
स्वाधिदवतया रगन्यथा वंमपुवर्णं नेऽस्वागदधम् ॥ अथवा अमलायतयं ॥ गहागरु विवर्जितं पल
वरुत किञ्च ॥ अनया गन्धया गन्धक्रीयात् ॥ समयावाचमिदं तत्त्वं ॥ शुचिं सर्वं उथा गिनः ॥ रगपित्तव्यं
रुथानां नान्यथा सुखदायकं ॥ पलं वरुता व विमृतिम् ॥ नाहिम् ॥ अस्मत् ॥ ईदं दालिङ्गलकाय ॥ अवि
शुचिम् ॥ ॥ ३ वज्रयश्च हिनादनस्वच्छं मंगवगीतिका ॥ वज्रीं जलिवच्छुद्धं दयधायकं ॥

दृक्पागमवाथारुवदवंसुर्वालंकावरुचिग॥ प्रह्लावात्समादिहारुत्वा श्रीसंपूठथागसंयुक्त॥ मंजुनि
 नैमुकंभूत्वा नग्रीरुयतथापुन॥ उक्तिश्च इयविशुक्तुकावथदद्यादिकं वृद्ध॥ हरगवनयदिसिद्धा
 दिरावितास्तुदास्यविजाकथं॥ रगवानाह॥ इति कापुथसंभोचंदिनीयंमाममीषात उक्तंयवृशाज
 नंरुनीयंभोचमयतं॥ वास्तथागतनांतु वृमंभोचंमामवरुत॥ मसिनीकतविरुत्तस्यस्वननकिंपुया १३१
 जनं॥ वेधमर्त्तस्त्रितायव सर्वकामार्थमीहृत्॥ अनथा निसर्गत्वावउल्लस्ररिजायतं॥ यथादिकश्चि
 त्यनार्थी जलंमथानिअद्वया॥ नक्तुपापयतसंयि८कायकृ८॥ मुक्तवर्त्यमम्यवावृत्तारुद्धधनसंपूज
 नंतथा॥ जीवनापायहृत्तुत्वाग्यागमन्यरुथोयिता॥ मंखउकि कमुकानी जयानी संरवायत॥ धर्मः

कायमवीत्रीसांकपालंकनद्वयतं॥ यद्वापवीतंतत्सत्यं धर्मनयहृत्कलितं॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नन पूज
 यत्समूह४साधक॥ निजमूडांस्तुप्यवाभनचावृक्तां कयावनी॥ नूपयोवनभोराग्यां विनीती साधकप्रि
 यी॥ कंया मधिष्ठयागन विजकनदत्तालेखयत॥ पटंथावमहागुर्क सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ साधकवि
 रुकवास्यांनान्यस्यदर्भयहृत्॥ ॥ मृत्पदविमेहारागपुस्तकैकथयामितं॥ तादियुत्तवाराह्यसि
 खत्समशीलेखक॥ द्वादभांगुत्तपुमासांकनपुस्तकसंवितां॥ महामधूमसिंरुत्तालेखन्यामान्वालि
 रि॥ तत्पटंपुस्तकंवेवदृष्टायदियम्यति॥ वृहजन्मनिनसिद्धिस्तान्नवापलेलाकगवव॥ समय
 ससंवेवदेकदाविजुत्ताधर्भयत्॥ गमयितव्यं कवेककं पुस्तकमध्यगमवले॥ दापयत्त्वसमयस्य

15
 10
 0

शारंगगणेशमंत्रकं यजुः किं वं सिद्धि सर्वकामार्थसाधकी ॥ भगवान्निबिडं जघ्म महादधिगठमवाः
 अथवा विजन प्राक्तं ॐ दशाजनमालरुगं ॥ रुक्मिणीं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ सुगविनासिनी
 प्रोक्तामदिनापमदामना ॥ सिद्धिं मदनप्राक्तां कनकवनासवश ॥ अस्मांगमार्गमनसर्ववृद्धम
 लक्या ॥ उक्तीनामधुजाका सुकिं अखलकामक ॥ कीजिकमुविदुप्राक्ता वही प्राक्ता कुकीजिका ॥ १३
 उर्वविशिष्टाजनमयमीससमचिन्त ॥ प्रियापरागसुरग ॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ सिद्धिगति ॥ प्रकाशं प्रनसं डा
 कानाजीकन ॥ अन्कादय ॥ नानारुलविविचिजालि ॥ दाययनममलुल ॥ अननमडागीनननल्ये
 विविभयग ॥ ॥ क ४ हि ४ ही ४ हं २ हं ३ हा ४ ॐ हा हा २ हा ३ जां ४ अ ३ ॐ जीजा ॥

ॐ जा २ ॐ कं कं कं ॐ कं अ ३ ॐ हि ३ ही ४ हि ३ ही ३ ही ही ३ कं हि ही एव अ व धू नं व सुकाया ॥ नल्यं ह न क
 थागन मडयाव विभयग ॥ यका म विरुगा ह हि ४ कार्याव जपदस्तु अ विरुं सर्ववृद्धा नीय अ नू कम
 यागन ॥ मागनं प्रियुजीलागनयीवस्व ॥ पूजयात्र रुचिं कना सिद्धयगममलुल ॥ उक्खलं मरा
 नवकं दिव्यमदननय विनी ॥ वंदित्वावगुवा ॥ पादोदया पाउं पद्ममडया ॥ गृहीया रुन हस्तन वंदित्वा उर
 यं यिव ॥ गजस्य ॥ साधका ॥ सर्वप्रसासक्तिर्गमरुर्मरु ॥ ॥ ॐ निशी संप्रदा रुचव उ ४ क्रियात्त्व
 वाजानवम ॥ समाफ ॥ ॥ ॐ वज्रया ॥ वजावायस्य सिद्धि समर्थ ॥ कल्पयित्वा महावर्जं आर्षं ह
 दयमलुल ॥ गजपु विष्णु धोथा ॥ कला हिंसा दिवि रुने ॥ वजावायलं गला दसि छा गना ॥ सूर्य ॥

यस्मात्संश्रुतं न स्यात्तत्त्वज्ञानं स वनात् ॥ वज्रसत्त्वदयानां लकजायात्पु सिद्धति ॥ अष्टसिद्धिमाहावाः
 र्यः १४ सर्वकल्याण्यु १४ सिद्धति ॥ अनेन विधिना श्रुत्वा डि नारुव न्यस्य १४ यः ॥ निद्वन्वावदसं नारा १४ हात्मा हात्मा
 वहायदगका १॥ सर्वरु १४ पु काया मूडा १४ कलरुदं मु थोवना ॥ तां गृह विधान न साधय धागमरु मे १॥ मा
 होत्मा रवत्संगृह मातवदवती द्विजी ॥ मोरु विमु द्या ताध्या यात्मा का धे वावनी रुवग ॥ उरु म विद्यामा १२४
 ताहि प्राकु कापि जापि जापियदि १४ तथ पि तथे वर गवती ति ह्या दित्वा रुम हा म्ख १४ पूर्व धे वात्स का रु
 ला गृह व सु लि प्ति का ॥ अथ वा य क क न्या रु ला व य ध य मु द्वि न १॥ सा का द का र्थ ती या ति द र वि ला
 न सं ग य १॥ ना ग सा या कून र दा र्ग रु गि नी वा गु क नी गि नी म् सु नी वा वि रु थ न् या ति ना ग मु द्या

मिता रु १४ ह्या रु ॥ ॐ ध्यात्मा गित्य जां ग मां संगृह क वा रा गिन यिकां ॥ ॐ ध्या विमु द्या ध्या यी न् अ मा यः
 सिद्धि रु व द सो ॥ मानात्मा न य क न्यां वा थ विद्या ध व दा यिकां ॥ मान मु द्या व ध्वा दि ध्या य त्म सि क्त
 र्ग रु व १॥ लावन या स रु व द्वा मा म का वे व सि द्ध र्ग का र्थ १॥ या उ व या स रु य प्री ता वा स हि न सि द्ध र्मा
 ध सि धि १॥ वल या स रु व स्त्री सि द्ध ति वि रु य कि व् क र्थ ॥ सि द्ध ता य न या का ध द वा थ डि न य १॥
 का ध १४ पु व न्द वि धि ना धा कि सि ध्वा कि धा कि वि धि ने व ॥ व का वा र्ग दा वे १४ सि ध्वा र्ग मा न न य १॥
 व म क क्ष या य स व डे र्ग र्गि र्ग स का र्थ सि क् १॥ स रु व सा ध न म ल्प र्ग द्ध व च र्थ या उ त व हि र्ग ॥ प्रा य

वंत्वं न तव संकुहा विना सायनायमानायस्य ॥ सकथं दृक्च न नियमे ४ कर्तुं म क्रातिवृद्धत्वं ॥ यानक
 योति आत्मा र्थं मूक्षात्मा सत्त्वसुखसाधनं प्राप्यायत्नतः ॥ कर्गर्गं ०० तियून ४ ०० तिन ह्यायति तस्य ॥ ००
 र्कं वृद्धा १ सर्वदा सकृन्नेन दृष्ट्वा स्व प्रमाया यमं सर्वं ॥ तत्कर्तुं वीर्यवृद्धधर्मस्य मूक्षानसं सा नार्हवद्योर्व
 यावन्नेयामि ॥ ॥ ०० त्या वा र्थं मूडा धिक्क नंद ॥ मस्य पुथमं प्रकवर्त्त ॥ ० ॥ थयस्मिन्विद्याप १३९
 वृषस्य तस्मिन्नी दृष्टिगता रवति ॥ वलितवधद्विकारं रूपां आसा ना ना पृथिवी व ॥ किंयि म व दृष्टमला
 लावा १ र्कसि का स दृग्नि त त न्युक्ता याता कल्यानलस चिराद मस्य दिक् ॥ कालिना महा दधिग द्या ४
 सर्वजयत कि नि र्धाता ४ र्कं वरुं वै क्रि न्पा ह्ना ना सा को कलंति त एव ॥ मूडा ग रा स व सिक ल उ ॥ ध उ का

लाका १ ॥ प्रका वि कुर्वन् १ ॥ म क्रात् १ ॥ प्रि नु सि नो रान् १ ॥ व डो य का १ सि द्वा र्गं ध र्वा १ कि न व म हा व ग
 १ वि शा ध र्वा मूक्ष ग या मू न्य उ उ य ति म वा नो द वा १ त ज ग ल्य पु क र्वा कि व कि क र्म म न र्त्त द द्या १ वी १
 व ल्म मू क १ ॥ ४ म ध्व र्वा र्वा का रु ल म क्ते १ न न्दि य ट द म द र्गे र्ग ग न ल्म १ प ज य कि ती गान् ल्य न्य प
 र क न्या वि शा ध र्वा ज्वा वालि को १ र्वा १ ॥ क र्वा न्य न क वा र्थं ग य न वि धि य १ कि न वा य का १ ज य ज य
 म द्या द्या म की ज क र्वा कि त ग स मा र्द १ ॥ पु य क कि सा ध्वा र्वा सि द्वा य न र १ ल्कि ना द वा १ ॥ य उ पि ग ल्म
 द वा १ पु व वा य स र्वा १ वि शा ध र्वा ग ल्य पु ल म ल्य क नि ष्ट य र्का १ ना ना य य पु क र्वा ना ना ग ल्म न ग न्ध व र्वा
 व र्ना ना धू प वि र्म र्वा क र्वा र्वा कि न य ल कि न व क थि ती मू न्ना पि हि वि ल्म व र्वा र्वा सा ध्वा र्वा न १

धाउष्याऽपुजास्तुहिऽसंपर्यंकः॥ ॥ इति महासूत्रविधिऽपुजास्तुकाशानामदशमस्यद्वितीतीतीयं
 कवर्त्तः॥ ० ॥ सिद्धाविश्यापुत्रुषऽकगतकतिष्ठतिः। मृगसंशयामनाथकथयस्वमहासूत्रा॥ रुगवाना
 ह॥ सिद्धाविश्यापुत्रुषऽकविदपिनगतऽकविल्लिगानेव। आशकमध्यवहिनानिर्दन्दकिरुवनाला
 कः॥ सर्वगतऽसर्वरुऽसर्वऽसर्वार्थऽसर्वविरुहः॥ सर्वापायविमूकऽसर्वगुणार्थकऽसर्वयशसा
 वमसमानिष्ठादिगानाथशुभाविधूतसंकल्पऽसंस्तानवर्त्तवहिनानिर्दन्दकिरुवनाला। वज्रदंष्ट्र
 दत्तात्रेयः॥ इत्युक्तं पतापसूक्तानिर्दन्दकिरुवनाला। इत्युक्तं सिद्धवर्गदत्तात्रेयः॥ ७७ मयमानविद्विषया
 गिरिऽपुत्रुषमीयतः॥ ७७ सुपुत्रुषऽकवर्त्तऽसर्वविकल्पऽहोपिजोतिर्दशयतिप्रमासतिनिज

मलस्रवाललीलां वस्त्रयमवहिरुत्तावं वजासनरुमिसंक्रमलं। मावर्धंसनसमं बद्धत्वं धर्मसकनिर्दमं॥
 दवावतावीर्यमतिविशिष्टं प्राप्तिरुत्तर्यवधनपालरुक्लि विनयीरुक्लजनस्यावतावुष्टं। यववादी निग्रह
 लीनिववशपिउप्राउवउलोक्कवज्रदमनयववाजीवेव। वाधिसूत्रस्यपविनिर्वातमहाकंठेधामधर्मना
 रुक्ल॥ ७७ वंरुक्लपुजाउवमनकविऽमषस्वप्राखीवृद्धनाटकदिव्यदर्शनयतिथऽरुसिद्धामायापुत्रुषऽकग
 दर्थः॥ ॥ इति वृद्धमायाविकृतिनामदशमस्यद्वितीतीयं कवर्त्तः॥ ० ॥ कथिर्दवत्तयायुर्वविष्म
 उवधिवमस्तुलिमहासांसस्यहामनं॥ कथंवेहानसूत्रपुत्रुषऽविमूखयुवर्त्तः॥ कथंनजायगपायीयदि
 पापैरुलंकथं॥ रुगवानाह॥ मरुहानमूरायसत्वाहोनादयविवर्जिताऽवाक्कवस्तुहिनिविष्ठाविकल्प

रूतयविग्रहाः समयाः सखाः भाविताः ॥ निष्पन्नमतिरावनरुक्नीयानिसर्वदा ॥ यथांमत्तवालक
 थानूमादिर्न सैलायसैपर्ककथाश्च रखापिर्न ॥ मा र्गपिस्वर्गिनचवन्धनश्च तमर्वविधंथा निक्कमार्गद
 मितं ॥ अथसर्वपविषत्थागीथानीदाकदाकिनी अमीतेकाटिवाधिसुत्वाकथगता अनकगः पुतिः
 पुद्गादविरुक्तु सर्वत अगनहानलाहीउसर्वत ॥ वडगर्पुसुखामहावास्तवाः सर्वविदवाना गाय
 कागंधर्वाः सावसर्ववनीपविषरुगवता रूधिनमखनदन्निति ॥ ० ॥ ०० तिथीसैपयारुवसर्वतकु
 निदानमहाकल्पयाडदगमः समाफः ॥ ००० ॥ सैतः ० मार्गनिलुडुपुः सैपर्कः ॥ यत्ताकनलसत्तः

इवमहनाः





15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

